Videha 375

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓗𑓕 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓕)
𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓕 (𑓗𑓕 *𑓕)-𑓐𑓑 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓

विदेह ३७५ म अंक ०१ अगस्त २०२३ (वर्ष १६ मास १८८ अंक ३७५)
विदेह अंक ३७५ (७५ *५)-०१ अगस्त २०२३

WWW.VIDEHA.CO.IN

VIDEHA 375

VIDEHA 375



VIDEHA 375

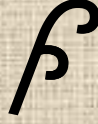


VIDEHA 375

WWW.VIDEHA.CO.IN

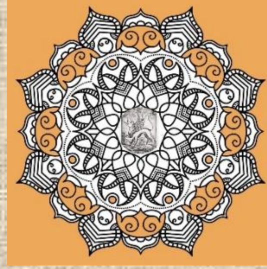
WWW.VIDEHA.CO.IN

ISSN 2229-547X VIDEHA



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓗𑓕 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓕)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑓁 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒆-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑓁 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

Videha e-Learning

Gajendra Thakur

Videha·eJournal·(link·www.videha.co.in)·is·a·multidisciplinary·online·journal·dedicated·to·the·promotion·and·preservation·of·the·Maithili·language,·literature·and·culture.·It·is·a·platform·for·scholars,·researchers,·writers·and·poets·to·publish·their·works·and·share·their·knowledge·about·Maithili·language,·literature,·and·culture.·The·journal·is·published·online·to·promote·and·preserve·Maithili·language·and·culture.·The·journal·publishes·articles,·research·papers,·book·reviews,·and·poetry·in·Maithili·and·English·languages.·It·also·features·translations·of·literary·works·from·other·languages·into·Maithili.·It·is·a·peer-reviewed·journal,·which·means·that·articles·and·papers·are·reviewed·by·experts·in·the·field·before·they·are·accepted·for·publication.

Font/·Keyboard·Source:·https://fonts.google.com/·,·https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts·,·https://keyman.com/·

These·are·print-on-demand·books,·send·your·queries·to·editorial.staff.videha@gmail.com.·The·eBooks·of·some·of·these·are·available·for·sale·on·Google·Play·[(c)·Preeti·Thakur,·sales.videha@gmail.com],·send·your·queries·to·sales.videha@gmail.com.·The·contents·and·documents·e-published·by·Videha·(since·2000)·ISSN·2229-547X·VIDEHA·(since·2004)·are·periodically·being·checked·for·accessibility·issues.·People·with·disabilities·should·not·have·difficulty·accessing·these·contents/·documents.

Videha e-Journal: Issue No. 375 at www.videha.co.in

परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा)***

मानव आखर रूपी खाम्ह निर्माण कए आरम्भ (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)- यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय चाहम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनावी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (मानव सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन��/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करैत छल, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ

·દ્યૌ:·શાન્તિ1ન્તિ1િક્ષ·ગ્વંગ·શાન્તિ:

·:···:

શ્રનુક્રમ

ઐ·શ્રંકમે·શ્રછિ:-

૨.૫.કુમા૧·મનોળ·કશ્ય઼પ-શ્રપૂર્વ઼·સ્વ઼ાદ

૨.૬.શ્રાયાર્ય઼·૧ામાનન્દ·મા‡ડઠ-
વાઠ્મીકિ·૧ામાય઼ણ·શ્રા·૧ામયપિતમાનસ·કે·તુઠનાત્મક·શ્રધ્ય઼ય઼ન

૨.૭.ઠાઠદેવ઼·કામત-ઠાઠદેવ઼·કામત-
·શ્રાંયઠિક·૩પન્ય઼ાસ·"મોટ"·માદે/·સર્વ઼શ્રી·૧ાળકિશો૧·મિશ્ર૧·ળીકે·-
·ટેમી/·એક·શ્રધ્ય઼ાત્મ·પથકે·પથિક·-
·સ્વ઼તંત્રતા·સેનાની/·ળઠ·શ્રછિ·ળા'·યપિ,·ળિનગી·તા'·યપિ!·/·પ્રક્રિય઼ાધીન
·સામાળિક·પપિવ઼ર્તન'ક·સ્વ઼૧

૨.૮.ઠાઠદેવ઼·કામત-
·નોતક·વિહ્રો!·(વીહનિ·કથા)/·ળેહન·ગોપવ,·તેહને·કાટવ!·(ઠઘુકથા)

૨.૯.ડા·કૈઠાશ·કુમા૧·મિશ્ર૧-·સવ઼ાક·કુસુમ·કામિની/·કક૧ા·કે·દૂસત

૨.૧૦.નિર્મઠા·કર્ણ-·શ્રગ્નિ·શિપ્પા·(ખેપ-૨૪)

૨.૧૧.નન્દ·વિ઼ઠાસ·૧ાય઼-ળાવી

૨.૧૨.ળગદીશ·પ્રસાદ·મા‡ડઠ-·સુચિતા·(યા૧ાવ઼ાહિક·૩પન્ય઼ાસ)

૨.૧૩.ળગદીશ·પ્રસાદ·મા‡ડઠ-યુ૧શ્ન્ના·ઠોક(ઠઘુકથા)

૨.૧૪.1વીન્દ્1·ના1ાયઞ઼·મિશ્1-વદઠિ·1૯ઠ·શ્રછિ·સમકિછુ·(ઉપન્યાસ)-·ધા1ાવાહિક

૨.૧૫.ડા·કિશન·કા1ીગ1-·મૈથિઠી·ઠેખનક·શૂન્ય઼·વળ઼ા1·સ્થિતિ?·વ઼ેવસતા·કા1ઞ઼·શ્રા·સમાધાન

૩.પદ્ય઼·ખ઼ઙ

૩.૧.કઠ્પના·દ્દા-·સાઉન·માસ

૩.૨.પ્રમોદ·દ્દા·'ગોકુઠ'-·ગામક·વાત

૩.૩.1ાળ·કિશો1·મિશ્1-પ1ાગ

૩.૪.શ્રાયાર્ય઼·1ામાનંદ·મંડઠ-·યી1૯1ાઞ઼/·સાવ઼ન·મે·નાની



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 𑓅 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒿𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

ওঁ, সা↓হস্রা↑শীর্ষা↓ পুরু↑ষঃ। সা↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ সা↓হস্রা↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ রি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্যা↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

𑓅 (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



𑓑.𑓑.𑒑𑒖𑒺𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

मैथिलीक पहिल पद्य उपन्यास- बगवान

रामेश्वर प्रसाद मण्डल लऽ कऽ आयल छथि मैथिलीक पहिल पद्य उपन्यास 'बगवान'। ओना तँ खण्डकाव्य आदिमे सेहो औपन्यासिकता रहै छै, मुदा से अखन धरि मैथिलीमे ऐतिहासिक वा महाकाव्य आधारित मात्र रहल अछि।

रंगपुरक जगू आ रोशनी केर खिस्सा अछि ई पद्य-उपन्यास। दुनू परानी रहै छल, माय-बाबूक सेवा करै छल। माटिक भीत, माटिक खाम्ह, माटियेक दुआर। बाँसक छड़ , बाँसक खिड़की , तहि काठक आ बाँसक ठाठ। सुन्नर घर।

आ माता-पिताक मृत्यु, मुदा सम्हारल जगू। खेती तर-तरकारीक, माछक वेपार।

पहिल बच्चा बौआ 'वेद प्रकाश'। दोसर बच्चा भेल लड़की 'चन्दा', स्त्रीगामक मुँ बिधुआ गेल मुदा जगू कहलनि- बेटाकेँ स्कूल भेजै छी आ बेटीसँ बकड़ी चरबै छी, से नीक नहि। आ ओकर छठियारीपर जगू बासमती चाउर गमगमा देलन्हि।

फेर माछक चोरि भेलन्हि, पंच सभ चोरसँ मीलि गेल। जगू बेमार भेल, गरीबीसँ डेराए गेल। बाहर निकलल, किस्मत अजमेलक। गुजरात गेल, चूड़ी फैक्ट्रीमे नोकरी भेट गेलनि, मुदा पासक माँग छल ओतऽ, से नीक नम्बरमे पास छलाहे।

फेर रोशनीक जौआँ बच्चा 'देव' आ 'नविश'।

रंगपुर गामक खुसनी मड़र जगूकेँ जमीन बढ़बैल कहलखिन्ह, पढ़ाइमे अनेर पाइ दूनी नै करबाक सलाह देलखिन्ह। मुदा गाँधी बाबाक कहल करता जगू। अक्षर बेटीक गहना थिक। चन्दा आ वेद स्नातक केलकन्हि। चन्दाक बियाह भेल। रुसल जमायकेँ साइकिल देलन्हि, टूटा घर आ शौचालयो बनवा देलन्हि।

वेद प्रकाश सुजुकी कम्पनी आ देव कुमार टाटा कम्पनीमे नोकरी पकड़लकन्हि। दुनूक एक्के मड़वापर वियाह सम्पन्न भेल।

फेर नरेश कुमार बी.डी.ओ. बनि गेल।।

आ ओम्हर फुसनी मड़रक बेटा नशेबाज बनि गेल, दरिद्री पड़ा गेल आ वेश्यासँ वियाह कऽ लेलक। फुसनी जगू लग कनैत एल।।

रोशनीक मोन खराप भऽ गेल। मुदा बेटा-पुतोहु सभ पाँचे लाखक मदति केलन्हि। पाँच लाखक कर्जा चढ़ि गेलन्हि, घर बन्हकीपर राखऽ पड़लन्हि। आ फेर नोकरीसँ जगूक अवकाश भऽ गेलन्हि। ने नोकरी, आ ने घर। से बेटा पुतोहु कथीले रहतन्हि।

मुदा फेरसँ दुनू परानी अपन काज आगाँ बढ़ेलन्हि। जगू खेती सुरू केलन्हि, आ रोशनी काडक जत्ना चललन्हि। वेदक पत्नी वीणा कुमारी मुदा शीलवती-गुणवती। एम्हर जगूक फेर विधाता वाम भेलन्हि, लोटन अपन मालकि जगूकेँ खून देलन्हि, लोटन कहलक जे हुनके सभक कृपासँ ओ शिक्षाक महत्व बुझलक आ दरोगा परीक्षा पास केलक। एम्हर देवक कम्पनी छुटि गेलै, घूस लैत नरेश सस्पेण्ड भऽ गेल। सभ वेदक अंगना घुसि गेल। जगू फेर बेमार भऽ गेल।

एम्हर पेंशनक चिट्ठी एलै, जगूकेँ सोलह लाख टाका भेटलै। फेर सभ बच्चा लेल जगू पैरवी केलक, टाका देलक, नरेश फेर बी.डी.ओ. बनि गेल, देवकेँ फेर नोकरी लागि गेल।

जगूकेँ संगी रघु मास्टर मोन पड़लन्हि, मुदा रघुक बेटा कहलथिन्ह जे ओ हुनका वृद्धाश्रम पठा देलन्हि। जगू रघुके वृद्धाश्रमसँ घुरा कऽ लऽ अनलन्हि।

आ फेर रघु बनेलन्हि रोशनी सदाव्रत अस्पताल, रंगपुर। गरीब-लाचारक

મુશ્કિલ રહલ।

ંગાઊાઊ મડ઼ાક અન્પ઼ાયાાક ખાિપ પંચૈતી। શ્ચો વેશ્માણી। મુદા ળગૂ એક ઊખ્ય ગુપૈપ઼્યા દs યૂાન ંગાઊાઊસઁ સાનાકેં વચેઊન્હિ।

શ્ચો ળગૂ મડિઊિ સ્કૂઊ વનેવેઊન્હિ 'ળગૂ ળનાા મડિઊિ સ્કૂઊ, ંગાપુા'। શ્ચા શ્ચોશ્મે છઊ મણોાંળન વ઼િભાગ। શ્ચા ળેના વ઼્યાસળી ઊખ્યક ાહિતિ શ્ચપન ાયના મહાભાાાતમે પ્ાવેશ કાૈ છથિ તહિમિ। ાામેશ્વ઼ાા પ્ાસાદ માયૃ઼ઊ એ પદ્ય-ઉપન્પ઼ાસમે શ્ચવે છથિ, શ્ચો છથિ ડાયોક્ટાા એ મણોાંળન વ઼િભાગક। શ્ચો સદાવ઼્ાાન શ્ચાશ્ાામ ખુળઊ।

શ્ચાવ ળગૂક ચપિાન વેટી ચન્દાપાા ળાશ્ છન્હિ। વેટી ળમાય઼ નઃિસન્તાન ાહનિ, દુનૂકેં વળેઊન્હિ। શ્ચપને શ્ચસ્પતાઊમે ભાાતી ભેઊ ચન્દા, માસક વાદે પાામિાામ। શ્ચો ગ્ાભાવ઼તી ભાs ગેઊ। શ્ચો વીચમે છથિ પાવનિકિ ચાૃચા, મચુવની પેંટગિક શ્નાહિાસ।

શ્ચા છઠિપિ઼ ઘાટપાા એકટા છૌડ઼ીકેં દાઁતી ઊગાઊ। ાોશની શ્ચસ્પતાઊ, ંગાપુામે શ્ચો ભાતી ભેઊ, એનીમપિ઼ા છઊ। નઊિશક વ઼્ઊડા઼્ાુપ મઊિઊ। શ્ચા કહઊનિ ળગૂ- નઊિશ વૌશ્ચ શ્ચાગાઁક ચ્ાામ વનાવહ। શ્ચા નઊિશ વ઼ીડ઼ીશ્ચો ક ાોશ્ચાવ વસિાિ ખૂન દેઊક, ળાન વચેઊક।

ઈ ઉપન્પ઼ાસ પદ્યમે શ્ચછિ તેં ઈ શ્ચછિ પદ્ય ઉપન્પ઼ાસ। ઈ ઉપન્પ઼ાસ વ઼્યાસ સન શ્ચપને મહાભાાાતમે કવ઼િકિ પ્ાવેશ કાવૈત શ્ચછિ શ્ચા સંદેશ દૈત શ્ચછિ ળે શ્ચપન ખાિ્સાસઁ પૃથક ભાs ઊખ્યક ાહપિ઼ે નૈ સકૈત શ્ચછિ।

-ઘાળેનદાા થહાકુા, દિતીા, વ઼દિહ (વ઼ે પાાત ાેઙ વ઼દિહ ગૌવ઼દિહ઼ાયોિ -સેનદ યુંાા શ્ચૌહાતસશ્ચપપ નો તો +૯૧૯૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ સો તહાત િત યાન વ઼ે ાદેદ તો તહે વ઼દિહ શ્ચૌહાતસશ્ચપપ ભાાોદયાસત ડ઼સિત)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

१२.𑒁𑓀𑒏 ३७४ 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰, 𑒣𑒙𑒢𑒰

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒢𑒫𑒏𑒰 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿।

"𑒩𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒧 𑒪𑒱𑒑 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰" 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑒏 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒖𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰

𑒫𑒰𑒪𑓂𑒧𑒲𑒏𑒱 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒫 𑒪𑒱𑒑 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒂 𑒩𑒰𑒧𑒔𑒩𑒱𑒞𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒑 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒧𑒹 𑒧𑒞𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒛ॉ 𑒠𑒲𑒣𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 "𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏 𑒫𑒻𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒋𑒫𑓀 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒪𑒹𑒭𑒝" 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒮𑒿 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒫𑒩𑓂𑒡𑒏 𑒬𑒼𑒡𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒪,𑒢𑒱𑒮𑓂𑒮𑓀𑒠𑒹𑒯। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒱,𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒂𑒮 𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒥 𑒬𑒳𑒩𑒳 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒣𑓂𑒫𑒰𑒃𑓀𑒙 𑒫𑒰𑒃𑒖 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹, 𑒧𑒳𑒑𑒪 𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒂 𑒧𑒯𑒹𑒬 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩,𑒛ॉ 𑒑𑓂𑒩𑒱𑒨𑒩𑓂𑒮𑒢 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰,𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡𑒱𑒏 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢,𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢,𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰,𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒫𑓂𑒨𑓀𑒖𑒢 𑒧𑒰𑒕,𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒮𑒢 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒫 𑒖𑒢𑒞𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒍𑒢 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒣𑒠𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒣𑓀𑒔𑒰𑓀𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱,𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒁𑒢𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿,𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋,"𑒦𑒰𑒩𑒞𑒧𑒹 𑒬𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒞𑓂,𑒫𑒱𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒮𑓀𑒫𑒞𑓂 𑒂 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒮𑒢𑒏 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢-𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓀𑒔𑒰𑓀𑒑𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒠𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒰𑒍𑒢 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒣𑒠𑒰। 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒑𑒪 𑒮𑒪𑓂𑒞𑒢𑒞 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒬𑒰𑒯 𑒁𑒏𑒥𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒧𑒯𑒹𑒬 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒏𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒩-𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒩 𑒮𑒰𑒍𑒢 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒋𑒏𑒩 𑒌𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒦𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒢𑒖𑒰𑒢𑒯𑒱𑓀, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒣𑓀𑒔𑒰𑓀𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒣𑒻𑒑𑓀𑒥𑒩 𑒧𑒼𑒯𑒧𑓂𑒧𑒠𑒏 𑒧𑒏𑓂𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒖𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒂 𑒁𑒏𑒥𑒩 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒰𑒩𑒼𑒯𑒝𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒳𑒯,𑒣𑒻𑒒 𑒥𑒰𑒞 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲,𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒥 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒹! 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒕𑒴𑒙𑒪 𑒮𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒧𑒩𑒰। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒧𑒹,𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒪𑒰,𑒪𑒼𑒏𑒑𑒲𑒞, 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨,𑒣𑒰𑒫𑒢𑒱-𑒞𑒱𑒯𑒰𑒩,𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒕𑒪।

कतहु कतहु विषय सँ भटकाव सेहो देखाएल जेना- दहेज प्रथा वा प्रदर्शन मे सत्यनारायण भगवानक पूजा आ छठि पूजाक चर्चा। दहेज प्रथाक प्रचलन कोना आ कहिया शुरू भेल,एकर दुष्प्रभाव समाज पर,तकर सभक चर्चे नहि।

विवाह संबंधी आनो समस्या,जेना बाल विवाह, बहु विवाह,बिकौआ विवाह किवा मुगल काल मे बालिकास्त्रीक असुरक्षा वा स्थिति जे छलै, तकर सभक चर्चा छूटल छनि।

नाति नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर) ओना त' बाढ़ि स्पेशलिस्ट पोथी पर आधारित अछि,तथापि रोचक सेहो अछि। ज्ञानवर्धक त' सहजहि।

"कृषि एहन क्षेत्र अछि जतय रोजगारक अधिकतम संभावना अछि तेँ जँ कोनो तरहेँ खेती-बाड़ी ठीक भऽ जाय त' कतेको लोक जमीनसँ जुड़ि जायत आ ट्रेनक छतपर भीड़ कनेक कम भऽ जायत।" पढ़ि भावुक भ' गेलहुँ। भगवान करथि,एहन दिन आबए।

नाति नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)पढ़ब शुरू केलहुँ, त' खाएब पीअब छोड़ि पूरा पढ़िए क' उठलहुँ।

आगामी अंकक प्रतीक्षा रहत।

चोर पंकज झा पराशर के स्टेप बय स्टेप देखार करब सेहो रोचक

सहस्रबाढ़नि फिनिश केलहुँ दू दिन पहिनहि।

नीक लागल।

लक्ष्मण झा 'सागर'

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑓓𑓗𑓕 𑒁𑓀𑒏। 𑒢 𑒦𑒴𑒞𑒼 𑒢𑒰 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒞𑒱! 𑒧𑒰𑒨𑒫 𑒏𑒞 𑒞𑒼𑒩 𑒏𑒩𑒥 𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃?

𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰

𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒫𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒖𑒲,𑒮𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒢𑒧𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩। 𑒯𑒧 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟, 𑒠𑒛𑓃𑒱𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰𑒮𑒿।𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰,𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒍 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒑𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮,𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒩𑒴𑒣𑒹𑒝 𑒦𑒰𑒭𑒰-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒠𑒞𑓂𑒞𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒫𑒱𑒑𑒞 𑒏𑒞𑒼𑒏 𑒠𑒬𑒰𑒥𑓂𑒠 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒝-𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱,𑒄 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒋𑒿 𑒬𑓂𑒪𑒰𑒒𑒢𑒲𑒨 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋, 𑒨𑒞𑒱𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒲𑒨𑒹 𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱,𑒁𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒁𑒕𑒱।𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒰𑒢𑓂𑒢𑒱𑒡𑓂𑒨𑒏 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒮𑓂𑒞𑒩𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒝 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒁𑒦𑒱𑒦𑒴𑒞 𑒕𑒲,𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒞𑓂𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒯𑒲𑒢 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।𑒧𑒰𑒿 𑒬𑒰𑒩𑒠𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒌𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒂𑒩 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒑𑒞𑓂𑒫𑒩𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩-𑒖𑒑𑒞𑒏 '𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 '𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱।𑒁𑒮𑒲𑒧 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒍 𑒁𑒬𑒹𑒭 𑒬𑒳𑒦𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒓𑓂𑒑,𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟, 𑒠𑒛𑓃𑒱𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑒹 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒰𑒱𑒪𑓃𑒮𑒞𑒰𑒤𑓃𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑓀𑒑𑒧𑒰𑒱𑒪𑓃𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२.गद्य खण्ड

२.१साक्षात्कार: योगानन्द हीरा सँ उमेश मण्डल द्वारा
२.२साक्षात्कार: कमला चौधरी सँ उमेश मण्डल द्वारा
२.३परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)
२.४संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास)- (चौदहम खेप)
२.५कुमार मनोज कश्यप-अपूर्व स्वाद
२.६आचार्य रामानन्द मण्डल-वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस के तुलनात्मक अध्ययन
२.७लालदेव कामत-लालदेव कामत- आंचलिक उपन्यास "जोट" माटि सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीके - टेमी एक अध्यात्म पथके पथिक - स्वतंत्रता सेनानी जल अछि जा' धरि, जिनगी ता' धरि!_ प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर
२.८लालदेव कामत- नोतक बहिनो! (बीहनि कथा) जेहन रोपब, तेहने काटब! (लघुकथा)
२.९डॉ कैलाश कुमार मिश्र- सबाक कुसुम कामिनी ककरा के दूसत

૨.૧૦.નિમિષ કુમાર- અગ્નિશિખા (પ્રેમ-૨૪)
૨.૧૧.નન્દ વિલાસ રાય-ડાયરી
૨.૧૨.જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ- સુરતિ (ધારાવાહિક ઉપન્યાસ)
૨.૧૩.જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ-પુરસ્કૃત લોક(લઘુકથા)
૨.૧૪.રવીન્દ્ર નારાયણ મિશ્ર-વદલિ રહલ અછિ સમાકછિ (ઉપન્યાસ)-ધારાવાહિક
૨.૧૫.ડૉ. કૈલાશ કુમાર- મૈથિલી લોકનાટક શૂન્ય વળાર સ્થિતિ? વ્યવસ્થા કારણ આ સમાધાન
૨.સાક્ષાત્કાર: યોગાનન્દ ઝા સઁ ઉમેશ મણ્ડલ દ્વારા

સાક્ષાત્કાર: યોગાનન્દ ઝા સઁ ઉમેશ મણ્ડલ દ્વારા



યોગાનન્દ ઝા

વિદેહ: પ્રથમ મૈથિલી પાક્ષિક ઇ-પત્રિકા (સન્ ૨૦૦૦) ISSN ૨૨૨૯-૫૪૭X વિદેહ (સન્ ૨૦૦૪) હેતુ વિદેહ સાઁ ઉમેશ મણ્ડલ શ્રી યોગાનન્દ ઝાસઁ ઉમેશ મણ્ડલ જીક સાક્ષાત્કાર।

(૧) વર્તમાન મૈથિલી સાહિત્ય કોન દિશામે અછિ?
યોગાનન્દ ઝા : વર્તમાન મૈથિલી સાહિત્ય નિરન્તર પ્રગતિ પથપર અછિ।
(૨) અહાઁ પુરસ્કાર નેં પ્રોત્સાહન ભેટ હોઇત છૈ મુદા મૈથિલીમે પુરસ્કાર

𑒥𑒹𑒙𑒞𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒩𑒳𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒟𑒰 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒣𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒰𑒩𑒝𑒰। 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒰 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒗𑒰 '𑒮𑒳𑒧𑒢', 𑒣𑓀 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒁𑒧𑒩', 𑒫𑒨𑒮𑒏 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒟 𑒣𑓂𑒩𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒥𑓂𑒡𑒏𑒲𑒨 𑒂𑒦𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒲𑒣𑓂𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒂 𑒢𑒹𑒢𑒣𑒢𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒦𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒨𑒳𑒑𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒫𑒱𑒦𑒴𑒞𑒱 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱।
(𑓓) 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒚𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱, 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑒹𑒏𑒪।
(𑓔) 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒋𑒫𑒧𑓂 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒢𑒑𑒝𑓂𑒨 𑒕𑒻। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒱𑒌?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒹? 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒲𑒨 𑒖𑒢𑒑𑒝𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒟𑒰𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒠𑒪𑒱𑒞? 𑒖𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪, 𑒞𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢-𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒳𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒦𑒰-𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒫𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯। 𑒖𑒿 𑒁𑒣𑒢, 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒫𑒯𑒳𑒡𑒰 𑒫𑒰𑒯𑒳𑒫𑒪𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒔𑒮𑓂𑒫𑒏 𑒮𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒖𑒞𑓄 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒯𑒱। 𑒄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒍𑒏 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨।
(𑓕) 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒣𑒲𑒚 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒫 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒣𑒲𑒚 𑒫𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒲 𑒐𑒩𑒰𑒣?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒚𑒲𑒏, 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒖𑒰𑒑𑓂𑒩𑒞 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒣𑒲𑒚 𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒥𑓂𑒡 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪, 𑒂𑒫 𑒧𑒳𑒐𑒩𑒞𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।
(𑓖) 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒏 𑒂 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒫𑒰𑒡𑒏 𑒩𑒯𑒪?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒖𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒢 𑒍 𑒢𑒱𑒩𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒢 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒢𑓂𑒡𑒧𑒨 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝।
(𑓗) 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒰𑓀𑒏𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒫?
𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 : 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒩𑒮𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒞𑒰, 𑒫𑒻𑒔𑒰𑒩𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒍 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒲𑒧𑒰𑓀𑒮𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒩𑓂𑒟𑓂𑒨𑒮𑒿।

(૮) અહાઁક પ્રિય સાહિત્યકારકેઁ છથિ?
યોગાનન્દ ઝા : એકાનેક, કતેક ગનાબી?
(૯) સાહિત્યકારક લેખકીય વિચાર આ વાસ્તવિક જીવનક વિચાર એક હેવાક ચાહી આકિ અલગ-અલગ? જઁ એક હેવાક ચાહી તઁ 'વૈદ્યનાથ મિશ્ર યાત્રી'જીક વૈચારિક વિચલનકેઁ અહાઁ કોન રૂપમે દેખૈ છિઐક। આ જઁ અલગ-અલગ હેવાક ચાહી તઁ ઓહન સાહિત્ય આ સાહિત્યકારક મૂલ્ય કી?
યોગાનન્દ ઝા : સર્વથા એક। યશસે અર્થકૃતેપરાક સારસ્વત સાધના। પરોપદેશે પાણ્ડિત્યં।
(૧૦) મૈથિલી સાહિત્યકાર બહુ વિચારવાદી હોઇત છથિ। મુદા જઁ અહાઁ એક્કે વિચારમે રહિતૌ તઁ ઓ કોન વિચાર હોઇત?
યોગાનન્દ ઝા : કવિતા।
(૧૧) યુવાસઁ કી આશા। ઓઇમે સઁ કે આગૂ જા સકૈ છથિ।
: અનન્ત વિકાસક। સે સમય નિર્ધારિત કરત।
(૧૨) અહાઁ અપન સાહિત્યક યાત્રાક પડાવ કતઽ આ કોન રૂપેં દેખૈ છિઐ?
યોગાનન્દ ઝા : શાસ્ત્રીય કાવ્યધારી કૃતિક નિર્માતિમિ, ચોલા બદલવાસઁ પૂર્વ।
(૧૩) પારિવારિક પરિચય જનવાક ઇચ્છા અછિ।
યોગાનન્દ ઝા : સામાન્ય નિમ્ન મધ્યવર્ગીય કૃષિ આધારિત પરિવારમે જન્મ ભેલ આ ઓહિ વર્ગીય વૃત્તિકેં નિમાહવાક હેતુ બાધ્ય રહલહુઁ।
(૧૪) કોન-કોન પત્રિકાક અપને સમ્પાદક મણ્ડલમે છલૌ ઓઇમે કે સભ યોગદાન દેને છલ? ઓઇ પત્રિકા સભક વિષયમે જનવાક ઇચ્છા અછિ।
યોગાનન્દ ઝા : 'સંકલ્પ' વાર્ષિક પત્રિકા। આબ હમરા લગ એક્કેટા અંક ઉપલબ્ધ અછિ જકર છાયા-પ્રતિ અપન સામર્થ્યસઁ અગાવત કરા દેત।
(૧૫) અપન રચના કર્મક સમ્બન્ધમે વિસ્તારસઁ બતાબી। કોન કોન રચના અહાઁક નજરિમે અહાઁક પ્રિય રચના અછિ, તેકરા સેહો વિસ્તારસઁ બતાબી।
યોગાનન્દ ઝા : સ્મૃતિશેષ ડૉ રામદેવ ઝાજીક પ્રોત્સાહન પાબિ મૈથિલીમે સ્નાતકોત્તર, પીએચ.ડી સ્તરધરી શિક્ષા ગ્રહણ કયલ। તાહિસઁ પૂર્વ

उच्चतर माध्यमिक कक्षा धरि आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे मैथिली पढ़ने छलहुँ आ तहि क्रममे अनुकरणात्मक रचना दिसि प्रवृत्त भेल छलहुँ। परवर्ती कालमे क्षेत्रीय शोधकार्य कएल, डिग्रीक हेतु, मुदा से अतिरिक्त उत्पादक रूपमे साहित्यसँ परिचियो करौलक आ प्रवृत्तो। अनुवाद पुरस्कार भेटलाक बाद अनुवाद दिसि प्रवृत्त भेलहुँ। ततःपर सम्पादक लेखनकि आग्रहपर सामग्री जुटबैत रहलहुँ आ लेखकगण हमरो साहित्यकारक परिचितिकेँ स्थापित करैत चल गेल। 'नहि कवित्त केहि लेल न नीका'क आधार पर समटा रचना विशेष प्रिय। ताहूमे समसँ उत्तम रचना अछि 'कछिु नूतन करी हम।'
शोध-प्रबन्धक प्राक्कथनक हमर सूत्रधार छथि स्मृतिशेष बुच्चन राउतजी जे नागदेवताक भक्त (भगत) छलाह। ओ विभिन्न गाममे विभिन्न जातिक लोकक ओहिठाम लऽ जाथि आ हम अन्तर्वार्ता माध्यमे शब्द-संचयन कएल करी।
(१६) डॉ कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८; डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००८ आ डॉ ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११ मैथिलीक समानान्तर धाराक नजरिमे मैथिलीक सुच्चा शब्दकोष अछि जे पाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखिवामे सहायक अछि। एहि तीनमे एक अहूँ छी। मात्र चएह पोथी मैथिलीक समानान्तर धारामे अहाँक नाओ अमर करवा लेल पर्याप्त अछि। अहि पोथीक क्रममे कोन गामक कोन लोक समाक योगदान छन्हि, एकर रचना विधानक सम्पूर्ण इतिहास विस्तृत रूपमे वताबी।
: शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक स्वीकार्यता कतेक जायज कतेक नाजायज?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒𑓒𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑓁 𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒮𑒿 𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰

𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑓁 𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒮𑒿 𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰



𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 (𑒮𑒱𑒢𑓂𑒔𑒹 𑓒𑓐𑓐𑓐) 𑒃𑒮𑒮𑒢 𑓒𑓒𑓒𑓙-𑓕𑓔𑓗𑒏𑓂𑒮 𑒫𑒃𑒡𑒋𑒯𑒁 (𑒮𑒱𑒢𑓂𑒔𑒹 𑓒𑓐𑓐𑓔) 𑒯𑒰𑒞𑒞𑒣𑓂𑒲𑒲𑒫𑒱𑒠𑒱𑒯𑒰𑒨𑒼𑒢𑒱𑓂 𑒪𑒹𑒪 𑒛ॉ 𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩।

(𑓑) 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒢 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱?

𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒥𑒰𑒡 𑒑𑒞𑒱𑒋𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒙𑒣𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

(𑓒) 𑒍𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒞𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒩𑒳𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏?

𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱। 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒰𑒩𑓂𑒠𑓂𑒡𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒦𑒝𑓂𑒛𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒨𑒢𑒹

𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰, 𑒣𑓀 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒁𑒧𑒩, 𑒛ॉ 𑒦𑒲𑒧𑒢𑒰𑒟 𑒗𑒰, 𑒫𑒱𑒦𑒴𑒞𑒱 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠, 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲, 𑒣𑓀 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰, 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱।

(३) 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭𑒖𑒢𑒏 𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒫-𑒢𑒫 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒟𑒱𑒏। 𑒢𑒱𑒨𑒞-𑒁𑒢𑒱𑒨𑒞𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒞𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒹𑒮 𑒯𑒧𑒩𑒑𑒩 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

(४) 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒋𑒫𑒧𑓂 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒢𑒑𑒝𑓂𑒨 𑒕𑒻। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒱𑒌?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒫𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒠𑒪𑒱𑒞𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱, 𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒐𑒢𑒳𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒍 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩-𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒍 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒩𑒏𑓂𑒭𑒝𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒞𑒨 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒥𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲 𑒮𑒠ृ𑒬 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒞𑓁 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏। 𑒮𑒧𑒩𑒟 𑒏𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒼𑒭 𑒑𑒼𑒮𑒰𑒄𑓀। 𑒄 𑒩𑒼𑒑 𑒂𑒢𑒼 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒍 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒋𑒱𑒏 𑒥𑓀𑒔𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒲𑒯!

(५) 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒼 𑒣𑒲𑒚 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒥 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒣𑒲𑒚 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒲 𑒐𑒩𑒰𑒣?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏 𑒣𑒲𑒚 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒂𑒨𑒞।

(६) 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒏 𑒂 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒩𑒯𑒪?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒖𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒢 𑒂 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒢𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒨𑒰 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒱𑒞 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒁𑒧𑒩 𑒍

विश्वविद्यालयमे शिक्षात्मक समय ७० केर शैलेन्द्र मोहन झाजीसँ बेसी प्रभावित भेल रही। आगाँ चलि साहित्यिक गुटबाजी आ तिकड़मसँ बहुत निराश भेलहुँ।

(७) वर्तमान साहित्यकारक मूल्यांकन अहाँ केना करए चाहब?
कमला चौधरी : वस्तुतः रचनाक मूल्यांकन ओहिमे निहित वैचारिकता, संवेदनशीलता, उपयोगिता आ रस-माधुर्यसँ होयबाक चाही।

(८) अहाँक प्रिय साहित्यकारकेँ छैथ?
कमला चौधरी : बहुत गोटा। कतेकक नाम कहू?

(९) साहित्यकारक लेखकीय विचार आ वास्तविक जीवनक विचार एक हेबाक चाही आकि अलग-अलग? जँ एक हेबाक चाही तँ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जीक वैचारिक विचलनकेँ अहाँ कोन रूपमे देखै छिऐन। आ जँ अलग-अलग हेबाक चाही तँ ओहन साहित्य आ साहित्यकारक मूल्य की?
कमला चौधरी : निश्चयेत रूपसँ एक होयबाक चाही मुदा से विरल होइत अछि। हम जखन महाविद्यालय सेवासँ जुड़लहुँ तँ ओतय दू सहकर्मी साहित्यकारसँ परिचित भेलहुँ। एकटा रहथि जनवादी कवयित्री। भूख आ रोटी हुनक कविताक मुख्य विषय रहैत छल मुदा एकदिन हुनका आठ आना लेल चक-हक करैत, रिक्शावलाक देहपर पाइ फेकैत देखने रहियैन तँ बहुत विचलित भऽ गेल रही। तहिना दोसर सहकर्मी जे स्त्रीक मान-सम्मानक समर्थनमे खूब कलम चलबैत रहथि, मुदा एकटा सेविकाक संग हुनक कटुवार्तालाप सुनि स्तब्ध भऽ गेल रही। कथनी आ करनीक विभेदकेँ प्रत्यक्ष दर्शन ओतहि भेल रहय, आगाँ कहिओ आओर अनुभव भेटैत गेल। तखन बुझलहुँ जे उपदेश दोसरा लेल होइत अछि मुदा से उचित नहि थिक।

(१०) मैथिलि साहित्यकार बहु विधावादी होइत छैथ। मुदा जँ अहाँ एक्के विधामे

𑒩𑒯𑒱𑒞𑒾 𑒞𑒿 𑒍 𑒏𑒼𑒢 𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒏𑒟𑒰 𑒍 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰।

(𑓑𑓑) 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒲 𑒂𑒬𑒰। 𑒍𑒃𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒹 𑒂𑒑𑒴 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒻𑒟।
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒂𑒬𑒰𑒫𑒰𑒢 𑒕𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒩𑒞।

(𑓑𑓒) 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒣𑒛𑓃𑒰𑒫 𑒏𑒞𑓄 𑒂 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒱𑒌?
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒁𑒫𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒯𑒥 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱।

(𑓑𑓓) 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒖𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒁𑒕𑒱।
𑒏𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 : 𑒁𑒫𑒱𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 (𑒮𑓂𑒫. 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰, 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧- 𑒫𑒱𑒢𑒱𑒮𑒰𑒨𑒩, 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒾𑒪) 𑒖𑓂𑒨𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒟𑒱, 𑒞𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒢𑓂𑒢𑒱𑒡𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒩𑓂𑒣𑒴𑒩𑒲 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒩𑒰𑒧𑒧𑒢𑒼𑒯𑒩 𑒪𑒼𑒯𑒱𑒨𑒰, 𑒮𑒴𑒩𑒖 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒖𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒂𑒠𑒱 𑒢𑒰𑒧𑒔𑒲𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒮𑒦𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒏 𑒮𑒳𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪।
𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰 (𑒮𑓂𑒫. 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒪𑒰 𑒗𑒰) 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒂 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒋𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒬𑒱𑒧𑒪𑒰 𑒬𑒯𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒼𑒢𑓂𑒫𑒹𑓀𑒙 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒞𑒫𑒲𑓀 𑒏𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒞𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒫. 𑒁𑒔𑓂𑒨𑒳𑒞𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 (𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧- 𑒦𑒫𑒰𑒢𑒲𑒣𑒳𑒩, 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒾𑒪) 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒬𑒱𑒧𑒪𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒰𑒩𑒼𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒻𑒢𑒹𑒖𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒞𑒹𑒿 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒣𑒻𑒒 𑒧𑒰𑒧𑒰 (𑒮𑓂𑒫. 𑒩𑒰𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒗𑒰) 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒬𑒱𑒧𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒩𑓂𑒏𑒧𑒹 𑒁𑒋𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒩𑒯𑒢-𑒮𑒯𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒔𑒪𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒰𑒢𑒹𑒏 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪।

𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒩𑒰𑒑𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒋𑒏 𑒥𑒰𑒏𑒮 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒩𑒴𑒔𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒕। 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂 𑒬𑒩𑒠𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒲 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫𑒞𑓁 𑒍𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒴𑒔𑒱𑒧𑒹 𑒩𑒮𑒱-𑒥𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒢𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒼𑒤𑒼𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪। 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒙𑓂𑒩𑒰𑓀𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒔𑒪𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒯𑒧 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒦𑒰𑒃-𑒥𑒯𑒱𑒢 𑒩𑒹𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝-𑒪𑒲𑒪𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒲 𑒂 𑒢𑒴𑒩𑒖𑒯𑒰𑒿, 𑒮𑒯𑒑𑒪𑒏 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧𑒲 𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼।

𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒢𑒰𑒢𑒰-𑒢𑒰𑒢𑒲 (𑒮𑓂𑒫 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒠𑒰)𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒚𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒍 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒯𑒱 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒠𑒹𑒪 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒯𑒮𑒲, 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒚 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒫𑒪𑒧𑓂𑒥𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑𑒫𑒬 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩𑒼𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒫𑒏𑒰𑒪𑒞 𑒣𑒹𑒬𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒮𑒳𑒩 𑒮𑓂𑒫 𑒮𑒼𑒢𑒹𑒪𑒰𑒪 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 (𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧- 𑒥𑒮𑒯𑒰, 𑒧𑒰𑒐𑒢𑒣𑒳𑒩) 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒳𑒋𑒙 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒂 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒏𑓄 𑒮𑓂𑒫 𑒑𑒱𑒩𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒫𑒏𑒰𑒪𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒄 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒰 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒹𑒮-𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒖𑒹 𑓑𑓙𑓓𑓔 𑒄.𑒏 𑒦𑒴𑒏𑒧𑓂𑒣𑒏 𑒫𑒱𑒦𑒲𑒭𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒯𑒞 𑒦𑓄 𑒁𑒪𑓂𑒣𑒹 𑒫𑒨𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒱𑒫𑓀𑒑𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏𑒩 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒮𑓂𑒫 𑒑𑒱𑒩𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒣𑒼𑒟𑒲 '𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒳𑒢𑒪' 𑒧𑒹 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱।

𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒫𑒬 𑒫𑒻𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒪𑓂𑒣 𑒩𑒯𑒪। 𑒣𑒞𑒱 𑒮𑓂𑒫 𑒏𑒢𑓂𑒯𑒻𑒨𑒰 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒩𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒰𑒑 𑒏𑒧𑒪 (𑒧𑒳𑒏𑒳𑒪 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲) 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑒏𑒰𑒪𑒞 𑒣𑒹𑒬𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒁𑒧𑒹𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒟𑒱𑒏𑒰𑒯। 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒫𑒡𑒴 𑒧𑒲𑒢𑒴 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲 +𑓒 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒾𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒳𑒧𑒳𑒐 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩𑒲𑓀𑒑𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।



પાછાઁમે (વામસઁ દહિન)- ઈ દુર્ગાનન્દ ઝા (જમાય), અનુરાગ કમલ (પુત્ર)

આગાઁમે (વામસઁ દહિન)- મીનૂ કુમારી (પુતોહુ), અભિલાષા કમલ (પુત્રી), કમલા ચૌધરી (સ્વયં)

(૧૪) કોન-કોન પત્રિકાક અપને સમ્પાદક માણ્ડલમે છેલૌં આર કે સભ યોગદાન દેને છલૌ? ઓહિ પત્રિકા સભક વિષયમે જનવાક ઇચ્છા અછિ।
કમલા ચૌધરી : ૧૯૮૪ ઈમે 'સ્વાતી' નામક ત્રૈમાસિક સાહિત્યિક પત્રિકાક સમ્પાદન આ પ્રકાશન મુજફ્ફરપુરસઁ આરમ્ભ કૈને રહી, જે માત્ર ચારિ અંક પ્રકાશિત ભઽ સકલ। ઓ પત્રિકા અપના સમયક મહત્વપૂર્ણ આ ઉત્કૃષ્ટ પત્રિકા છલ, જકર બન્દ ભઽ જયબાક ક્ષોભ એખનહુઁ તક અછિ। ઓકર બાદ

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ मैथिली विभागसँ २०१२ मे पहिल शोध पत्रिका 'तिरहुत'क प्रकाशन ओ सम्पादन कयने रही, जे कतेको दृष्टिएँ महत्वपूर्ण सिद्ध भेल।

(१५) अपन रचना कर्मक सम्बन्धमे विस्तारसँ बताबी। कोन कोन रचना अहाँक नजरिमे अहाँक प्रिय रचना अछि, तकरा सेहो विस्तारसँ बताबी।
कमला चौधरी : डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाजीक प्रोत्साहन पाबि मैथिलीमे स्नातकोत्तरक पश्चात् डॉ. रामदेव झाजीक निर्देशनमे पी.एच-डी. हेतु पंजीकृत भेलहुँ। विषय छल 'मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली'। वस्तुतः शोध-कार्य हेतु विषयक चयन उत्कृष्ट छल, मुदा कठिन सेहो। एहि लेल गहन अध्ययन आ लोक सम्पर्कक आवश्यकता छल। एहि सभ प्रक्रियाकेँ पूर्ण करैत बहुत समय लागि गेल आ अन्ततः २००८ ई.मे ई पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ सकल, जे मैथिलीक एकटा मानक ग्रन्थक रूपमे जानल जाइछ।
ओना, हृदयसँ हम कथाकार छी। अपन आगू-पाछू घटैत घटना बेसी प्रभावित करैत अछि। 'समय संकेत' नामक मात्र एकटा कथा संग्रह प्रकाशित अछि, जाहिमे काल-चक्र, गुलाब काकी, आकांक्षा, अपराजिता, चूरी हमर प्रिय कथा अछि। एहि कथा सभक नायिका जीवनक विविध झंझावातकेँ झेलैत अपन जीवनकेँ सार्थक स्वरूप देबामे सफल भेल छथि।
'मोनक पीर' सद्यः प्रकाशित बंगला उपन्यासक अनुवाद थिक। एहि उपन्यासक नायिकाक चरित्रसँ बहुत बेसी प्रभावित भेलहुँ। बंगला उपन्यास होइतहुँ मैथिलीक सांस्कृतिक परिवेशक अविकल चित्रण बुझना जाइत अछि। सेहो हमर प्रिय रचना थिक।

(१६) डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८; डॉ. योगानन्द झा- मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९ आ डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली

२०११ मैथिलीक समानान्तर धाराक नजैरमे मैथिलीक सुच्चा शब्दकोष अछि जे पाँति प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक अछि। एहि तीनमे एक अहूँ छी। मात्र यएह पोथी मैथिलीक समानान्तर धारामे अहाँक नाओ अमर करबा लेल पर्याप्त अछि। अहि पोथीक क्रममे कोन गामक कोन लोक सभाक योगदान छन्हि, एकर रचना विधानक सम्पूर्ण इतिहास विस्तृत रूपमे बताबी।

कमल चौधरी : वेश-भूषा-प्रसाधनक उपादान, पद्धति आ परम्परा कोनो समाजक सभ्यता आ संस्कृति परिचायक मानल जाइत अछि। अतः विषय बहुत उत्तम छल। शोध-कार्यक क्रममे कतेको गाम-घरक भ्रमण कयलहुँ आ विभिन्न वर्ग आ जातिक लोक सभासँ सम्पर्क स्थापित कऽ शब्द-सम्पदाक संचय कयल आ विभिन्न क्षेत्रमे ओहि शब्दक पर्याय एवं उच्चारणक वैशिष्ट्यकें परखबाक अवसर भेटल। रचना विधानक मूलमे विभिन्न प्रकृति लोक सभासँ परिधान आ आभूषणक नामावलीक वैशिष्ट्यक समन्वयमे अन्तरंग वार्ता स्थापित कयलहुँ।

परिधान आ आभूषणक संज्ञान आ चरित्रावली हेतु कतेको बूढ़-पुरान पण्डित परिवारसँ लऽ निकृष्ट कृषि एवं अन्य कर्मसँ जुड़ल लोक सभासँ सम्पर्क साचि विशेष जानकारी लेबाक प्रयासमे लागल रहैत रही। एहि समन्वयमे जितवारपुर निवासी सच्चनजीक सहयोगकें नहि बिसरि सकैत छी। एहि सभ क्रिया-कलापक संग्रह अनेक शास्त्रीय ग्रन्थावलीक अध्ययन द्वारा अनेक शब्दक प्राचीन आ अर्वाचीन एवं वैकल्पिक स्वरूपक परिचय प्राप्त कयलहुँ। जाहि प्रमुख ग्रन्थक अध्ययन कयल ओहिमे सँ किछु नाओ स्मरणीय अछि, जेना- गृहस्थ रत्नाकर- चण्डेश्वर ठाकुर, अमरकोष- स पं चन्द्रधारी सिंह, स्टोकलेर मैजिक एण्ड लिजेण्ड ऑफ मथिला- माखन झा। बिहार पीजेन्ट लाइफ- ग्रियर्सन, कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली- हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद। पतंजलि कालीन भारत- डॉ प्रभुदयाल अग्निहोत्री, वैदिक साहित्य और धर्म- आचार्य बलदेव उपाध्याय, मैथिली संस्कृति आ सभ्यता- डॉ उमेश मिश्र, मैथिली व्याकरण मीमांसा- डॉ सुभद्र झा, वृहत मैथिली शब्दकोष- डॉ

𑒖𑒨𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒼𑒡 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒍 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨-𑒣𑒰𑒞 𑒂 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒰𑒪𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒠 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒧𑒰𑒢𑒮-𑒣𑒙𑒪𑒣𑒩 𑒁𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.co.in **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓓.𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)

গীতা মাহাত্ম্য - অ. ৮

Wednesday, 7 June 2023 6:38 AM

ॐ



(নাম- পরমানন্দ লাল কর্ণ (১৯৩০) পিতা- স্ব০ পরশুরাম লাল কর্ণ গাঁব- ঘোঘসর, পো- বিরৌল, দরভংগা, শিক্ষা- স্নাতকোত্তর CAIIB সেবানিবৃত্ত প্রবন্ধক সেন্ট্রল বৈংক অফ ইংডিয়া)

গীতা মাহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ উত্তর খণ্ড)

অষ্টম অধ্যায়

ভগবান শিব কহলনথিন - হে দেবী, আব অষ্টম অধ্যায়ক মাহাত্ম্য সুনূ। জকরা সুনলা সঁ অহাঁ কেঁ বড় প্রসন্নতা হোয়ত। দক্ষিণ দিশা আমর্দকপুর নাম সঁ একটা প্রসিদ্ধ নগর অছি ওহি ঠাম ভাবশর্মা নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ রহৈত ছলাহ। জে বেশ্যা কেঁ পত্নী বনাকএ রখনে ছলথি। ও মাংস খাইত, মদিরা পীবৈত, সাধু লোকনিকক ধন চোরাবৈত, দোসর স্ত্রী সঁ ব্যভিচার করৈত আ শিকার খেলএ মে দিলচস্পী রাখৈত ছলাহ। ও বড় ভয়ানক স্বভাব কেঁ ছলথি আ মন মে পৈঘ-পৈঘ হৌসলা রাখৈত ছলথি। এক দিন মদিরা পার্টী জুটল ছল জাহি মে ভাবশর্মা ভরি পেট মদিরাপান কেলথি আ অজীর্ণ সঁ পীড়িত ভএ ও পাপাত্মা কালবশ মরি গেলাহ আ পৈঘ তাড়ক গাছ ভেলথি। ওহি গাছক ঘোন আ শীতল ছায়াক আশ্রয় লএ কে ব্রহ্মরাক্ষস ভাব কেঁ প্রাপ্ত ভেল কোনো পতি-পত্নী ওহি ঠাম রহৈত ছলথি।

হুনকর পূর্ব জন্মক ঘটনা এহি প্রকার অছি। কুশীবল নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ ছলাহ জে বেদ-বেদাংগক তত্ত্বক জ্ঞাতা, সব শাস্ত্রক অর্থক বিশেষজ্ঞ আ সদাচারী ছলথি। হুনকর স্ত্রীক নাম কুমতি ছল। ও বড় খরাব বিচার কে ছলীহ

𑒍 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒫𑒖𑒴𑒠 𑒪𑒼𑒦𑒫𑒬 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒻𑓀𑒮, 𑒏𑒰𑒪𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒂 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒬𑒹𑒭 𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒹𑓀 𑒠𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒪𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒍 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒪𑒫𑒬 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒦𑓄 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒦𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒍 𑒦𑒴𑒐 𑒂 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩 𑒒𑒳𑒧𑒻𑒞 𑒞𑒰𑒛𑓃𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - '𑒯𑒹 𑒢𑒰𑒟 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒹𑓀 𑒃 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒠𑒳𑓁𑒐 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒠𑒴𑒩 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒂 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒨𑒼𑒢𑒲 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒏𑒹𑓀 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒪𑒞? 𑒞𑒥 𑒍 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬, 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒫𑒱𑒡𑒱𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒮𑒿 𑒕𑒳𑒙𑒏𑒰𑒩𑒰 𑒧𑒱𑒪 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱?

𑒃 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - '𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒼𑒞𑓂𑒞𑒧! 𑒍 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱? 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒼𑒢 𑒁𑒕𑒱।' 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒒𑒙𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒅𑒏𑓂𑒞 𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒂𑒡𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒪। 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒍 𑒑𑒰𑒕 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒰𑒛𑓃𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒦𑒰𑒩𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡𑒔𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒍 𑒣𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒂𑒡𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒍 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒠𑒻𑒫𑒫𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒂𑒡𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪। 𑒞𑒠𑒢𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒂𑒏𑒰𑒬 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒪 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒮𑒫𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒥 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒖𑒢𑒏 𑒕𑒪।

𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒦𑒰𑒩𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒂𑒠𑒩𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒂𑒡𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒠𑒹𑒫 𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒠𑒢𑒏 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱𑒠𑒰𑒨𑒱𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒍 𑒅𑒠𑒰𑒩 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑒻𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒲𑒩𑒮𑒰𑒑𑒩𑒏 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒏𑒩 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒖𑒑𑒞𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒠𑒢 𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒯𑒹 𑒢𑒰𑒟 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒢𑒲𑓀𑒠 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒏𑒱𑒋 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿?

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒯𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒲, 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒑𑒲𑒩𑒟𑒲𑒏 𑒞𑒙 𑒣𑒩 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒦𑒰𑒩𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱𑒩𑒮 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑓄 𑒏𑒚𑒼𑒩 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।

𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑓄 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒚𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒂𑒡𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧 𑒅𑒢𑒏𑒩 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒲। 𑒅𑒢𑒏 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒴𑒣 𑒤𑒪 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒹𑒮𑒱 𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒿 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒯𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒍 𑒤𑒪 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒧 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒝𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒕𑒲।

𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒖𑒲 𑒣𑒴𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒯𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒢, 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒯𑒩𑒱 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒍 𑒦𑒑𑒫𑒠𑓂𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒰𑒫𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒤𑒪 𑒧𑒱𑒪𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 - 𑒯𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒲, 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒖𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒦𑒰𑒫𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒮𑒿 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒅𑒢𑒏 𑒫𑓀𑒬𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒹 𑒢𑒩𑒏 𑒨𑒰𑒞𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒟𑒱 𑒅𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒿 𑒦𑒑𑒫𑒠𑓂𑒡𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒄 𑒂𑒚𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒧𑒹 𑒥𑒞𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

═══ ○ ═══

𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝



𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨
(𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)
𑒢𑒫𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲, 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒂𑒠𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒢𑒫𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒦𑓄 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒢𑒩𑓂𑒧𑒠𑒰 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒞𑒙 𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒯𑒱𑒭𑓂𑒧𑒞𑒲 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒧𑒰𑒡𑒫 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒫𑒹𑒠 𑒫𑒹𑒠𑒰𑓀𑒑𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒫𑒖𑓂𑒘 𑒂 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑓄 𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒡𑒢 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒂𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒧𑒹 𑒥𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒏𑒩𑒰 𑒧𑓀𑒑𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒯𑒢 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒛𑒰𑒪𑒻𑒞

𑒍 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒿𑒮𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒔 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒏- 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒮𑒿 𑒏𑒲 𑒪𑒰𑒦 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒋𑒏𑒩 𑒤𑒪 𑒞𑓄 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒂 𑒍 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒖𑒩𑒰 𑒂 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒟𑒲𑒏। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒖𑒹 𑒠𑒬𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒠𑒹𑒐 𑒪𑒱𑒁। 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰𑒏 𑒍 𑒏𑒾𑒞𑒴𑒯𑒪𑒖𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣 𑒧𑒹 𑒥𑒅𑒮𑒪 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒨𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒩 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒁𑒣𑒪𑒏 𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰 𑒂 𑒂𑒠𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒕𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒟𑒱𑒢।

𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿? 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒔𑒩𑒝 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒕𑒪। 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰𑒏 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒍 𑒮𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒞𑒰𑒅।

𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒏- 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒯𑒧 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒧𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪 𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒏𑒩𑓄 𑒧𑒹 𑒂 𑒫𑒹𑒠 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒲𑒝 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱𑒂 𑒫𑒱𑒢𑒧𑓂𑒩 𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒼𑒑𑒏 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒪𑒟𑒱। 𑒞𑒞𑓂𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑓂 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒝𑓂𑒛𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒍 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒡𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒪𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒬𑒰𑒣 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢- '𑒨𑒾 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒢𑒲𑒔, 𑒣𑒰𑒣𑒲! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒡 𑒏𑒩𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒥। 𑒯𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒖 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚! 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒰𑒪𑒫𑒬 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒧 𑒥𑒿𑒏𑒩𑒰 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒣𑒱 𑒯𑒧 𑒣𑒬𑒳 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒕𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒖𑒾𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒝𑓂𑒚𑒰 𑒯𑒼𑒨 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒍𑒩 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒞𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒏𑒳𑒩𑒳𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒬𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒫𑓀𑒬𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒪𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒫𑒹𑒠-𑒫𑒹𑒠𑒰𑓀𑒑 𑒣𑒰𑒩𑒑𑒰𑒧𑒲 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏𑒹 𑒛𑓃𑒳𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒳𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒮𑓀𑒑 𑒍 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒣𑒰𑒫𑒢 𑒖𑒪 𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒪𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒂

[illegible]
প্ৰেৰিত কেঁ হাথ পকড়ি তৎকালোচিত লোকনি সে ঘিৰল অপনা স্থান পৰ চলি এলাহ। ওহি ঠাম এলা পৰ ৰাজা যথোচিত বিধি সঁ ভক্তিপূৰ্বক ব্ৰাহ্মণ কেঁ কালপুৰুষক দান কেলনি।

তদুন কালপুৰুষক হৃদয় যাহিড়ি কে একটা পাপাত্মা চাণ্ডাল প্ৰকট ভেল। ফেৰ থোড়ে দেৰক বাদ নিন্দা সেহো চাণ্ডালক ৰূপ ধাৰণ কৈ কালপুৰুষক শৰীৰ সঁ নিকলল আ ব্ৰাহ্মণ লগ আবি গেলীহ। এহি প্ৰকাৰ চাণ্ডালক ও জোড়ি আঁখি লাল কেনে নিকলি ব্ৰাহ্মণক শৰীৰ মে জবৰদস্তী প্ৰবেশ কৰৈ লগলীহ। ব্ৰাহ্মণ মনে মন গীতাক নৱম অধ্যায়ক জপ কৰৈত ছলাহ আ ৰাজা চুপচাপ ঈ সব কৌতুক সঁ দেখৈ লগলথিন। ব্ৰাহ্মণক অন্তঃকৰণ মে ভগৱান গোবিন্দ শয়ন কৰৈত ছলাহ। ও হুনকে ধ্যান কৰৈ লগলাহ। ব্ৰাহ্মণ অপন আশ্ৰয়ভূত ভগৱানক জখন ধ্যান কেলথিন তহুন গীতাক অক্ষৰ সঁ প্ৰকট ভেল বিষ্ণুদূত সঁ পীড়িত ভেল ও দুনু চাণ্ডাল ভাগি গেল। হুনকৰ উদ্দেশ্য অসফল ভৈ গেল। এহি প্ৰকাৰক ঘটনা কে প্ৰত্যক্ষ দেখি ৰাজা আশ্চৰ্যচকিত ভৈ গেলাহ। ও ব্ৰাহ্মণ সঁ পুছলথিন- হে বিপ্ৰবৰ ঈ মহাভয়ংকৰ আপত্তি কেঁ অহাঁ কোনা কটলহুঁ? অহাঁ কোন মন্ত্ৰক জপ আ কোন দেৱতাক স্মৰণ কৰৈত ছলহুঁ? ও পুৰুষ আ স্ত্ৰী কে ছলথি? ও দুনু কোনা উপস্থিত ভেলাহ? ফেৰ ও কোনা শান্ত ভৈ গেলাহ? ঈ সব হমৰা বতাউ।

ব্ৰাহ্মণ কহলনি- ৰাজন, চাণ্ডালক ৰূপ ধাৰণ কৈ ভয়ংকৰ পাপ প্ৰকট ভেল ছল আ ও স্ত্ৰী নিন্দাক সাক্ষাৎ-মূৰ্তি ছলীহ। হম দুনু কে এহে সমঝৈত ছী। তখন হম গীতাক নৱম অধ্যায়ক মন্ত্ৰক মালাক জাপ কৰৈত ছলহুঁ। তেকৰে মাহাত্ম্য সঁ ঈ সব সংকট দূৰ ভৈ গেল। হে মহিপতে! হম সব দিন গীতাক নৱম অধ্যায়ক জাপ কৰৈত ছী তেকৰে প্ৰভাৱ সঁ প্ৰতিগ্ৰহ জনিত আপত্তী কেঁ পাৰ কৈ সকলহুঁ অছি।

ঈ সুনি ৰাজা ওহি ব্ৰাহ্মণ সঁ গীতাক নৱম অধ্যায়ক অভ্যাস কেলনি আ দুনু কেঁ মোক্ষক প্ৰাপ্তি ভৈ গেলনি।

ঈ কথা সুনি ব্ৰাহ্মণ ৰকৰা কেঁ বন্ধন সঁ মুক্ত কৈ দেলথিন আ গীতাক অভ্যাস সঁ পৰম গতি কেঁ প্ৰাপ্ত কেলনি।

—— o ——

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२४संतोष कुमार राय 'बटोही'-मंगनीना (धारावाहिक उपन्यास)- (चौदहम

𑒐𑒹𑒣)



𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲'

𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰 (𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- (𑒐𑒹𑒣 𑓑𑓔)

𑒧𑒼𑒢 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒕𑒪 𑒂𑒃। 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒲 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱? 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒩𑒒𑒳𑒩𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒒𑒳𑒩𑒒𑒳𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒥𑒩𑒏𑒰 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒁𑒃 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒧𑒹 𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒕𑒻। 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒂𑒍𑒩 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒣𑒩 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒡𑒰𑒢 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒃 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒕𑒪 𑒍𑒃 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒧𑒹। 𑒁𑒃 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒦𑒻𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒩𑒐𑓂𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒻। 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒃 𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥-𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒂𑒍𑒩 𑒖𑒹𑒚 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒟𑒱 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝। 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒩𑒱𑒨𑒰𑒛𑒣𑒢𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒧𑒹 𑒅𑒧𑒩𑒱 𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒐𑒹𑒞-𑒣𑒟𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒼𑒃𑒢 𑒏𑓄𑒏𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒩𑒝-𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒏𑒩𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒙𑒰𑒙𑒰𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒏𑒲𑒨 𑒙𑒪 𑒕𑒻𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒁𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒏𑒹𑒩 𑒬𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒧𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒬𑒱𑒫𑒰 𑒣𑒕𑒥𑒻 𑒙𑒼𑒪 𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒖𑒲𑒏 𑒏𑓄 𑒥𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒢𑒰𑒞𑒱𑒢 𑒧𑓀𑒖𑒴 𑒖𑒹 𑒐𑓂𑒫𑒰𑒮𑒙𑒼𑒪𑒲, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑒪𑒪-𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒰𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। '𑒥𑒨𑒰𑒮𑒖𑒲' 𑒒𑒙𑒏𑒻𑒞𑒲 𑒏𑒩𑒫𑒰 𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒧𑓀𑒖𑒴 𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒹 𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒍𑒞𑓄 𑒮𑒿 𑒠𑒱𑒢 𑒚𑒹𑒏𑒢𑒹𑒯 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒟𑒱।

𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻 𑒍𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑓑𑓙𑓖𑓑 𑒦𑒹𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒒𑒩 𑒧𑒹। 𑒏𑒳𑒏𑓂𑒏𑒳𑒩-𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒒𑒩 𑒥𑒱𑒐𑒻𑒩 𑒑𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮𑒖𑒲𑒏।

𑒩𑒰𑒧𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒍𑒩 𑒮𑒰𑒞𑒼 𑒦𑒰𑒃- 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒖𑒢𑒧 𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒫𑓀𑒬𑒰𑒫𑒪𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒩𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒒𑒩 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒨𑒰𑒠 𑒕𑒪 𑒂𑒍𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒂𑒍𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒦𑒻𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒦𑒻𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯। 𑒯𑒧 𑒦𑒱𑒏𑓂𑒭𑒳𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑓀𑒬𑒖 𑒕𑒲। 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒦𑒩𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒦𑒻𑒨𑓂𑒨𑒰𑒩𑒲 𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒲𑒥 𑒩𑒐𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒍 𑒞𑓄 𑒮𑒰𑒞 𑒦𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰𑒯, 𑒣𑒩𑒘𑓂𑒔 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒦𑒰𑒃 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒢𑒱𑒑𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒂𑒯𑒳𑒞𑒱 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒟𑒱। 𑒁𑒃 𑒣𑒩 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑓄𑒏𑓄 𑒄 𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒩𑒏𑒥𑒰 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒼 𑒦𑒰𑒃 𑒏𑒻𑒿 𑒠𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧 '𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰' 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪।

𑒦𑒱𑒏𑓂𑒭𑒳𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒋𑒏𑒹𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒍𑒏𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒥𑒳𑒜𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒹 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒳𑒡𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒚𑒑 𑒤𑒳𑒮𑒪𑒰 𑒏𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒲 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒟𑒱।

𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯, " 𑒥𑒰𑒥𑒰, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒻𑒿 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪𑒻। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒪𑒱𑒨𑒾𑒢𑓂𑒯। 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒠𑓄 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒍 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱 , " 𑒢𑒻 𑒁𑒯𑒰𑒿 , 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒖𑒑𑒯 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒖𑒼𑒞𑒱 𑒪। 𑒁𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒝 𑒦𑒱𑒏𑓂𑒭𑒳𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒪𑒳𑒙𑒾𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒞𑒏𑒩𑒹 𑒦𑒳𑒑𑒞𑒰𑒢 𑒯𑒧 𑒦𑒼𑒑𑒲 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒛𑓃𑒏 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒫𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒩𑒰𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

આર વઢ઼િયા દાદી નહિ રહલન્હિ તઁ જઈ ઘરારી પર અપ્પન ઘર છી ઓહો કનિકો ભિક્ષુક પ્રવાસ દાન કઽ દૈલન્હિ। અપને તઁ ઓ ભિક્ષુક બની ગેલાહ સંગેહ અપન આવૈ વાલા જેનરેશન કેઁ ભિક્ષુક વા ભિકારી વના ગેલાહ અછિ। અપ્પન હમ સભ હક્કન કાનિ રહલ છી। અપન પૂર્વજ કેઁ કરની કતેક પીઢ઼ી ધરિ નિવાહ કરૈત છૈ સે ઓ કી નહિ બુઝૈત હેતન્હિ। વરજન રાખત અર કરની કેઁ રોકિ સકૈત છલાહ, પરન્ચ હુનકા કે મતિ મારિ દેને રહૈન્હ સે કી જાનિ। ઓ કનિકો પ્રયાસ નહિ કેલથિન્હ। અથાહ જમીન નહિ રહૈન્હ જે દાન દેલ જાઇ। ઈ ઓ નીક કાજ નહિ કેલાહ। અવૈ વાલા પીઢી કેઁ ઉન્નતિ કેર રસ્તા વન્દ કેલૈથ।

વાવા નાગેશ્વર રાય કેર વાહર નહિ કમેલૈક કારણે ઉન્નતિ નહિ ભેલૈ। સંગ મે વાવૂજી સેહો નિકમ્મે નિકલલાહ। જૈપ્યારી સભહક મતિ સેહો મારલ ગેલૈન્હ। આર ધનિજીવ રાય 'વ્યાસજીક' નામ મટિ ગેલૈ।

સંતોષ કુમાર રાય 'વટોહી'

-સંતોષ કુમાર રાય 'વટોહી', ગ્રામ - મંગરૌના

અપન મંતવ્ય દિતોરાલિસતાઙ઼વ઼દિહા઼ગામાલિયોમ **પર પઠાઉ।**

૨.૫.કુમાર મનોજ કશ્યપ-અપૂર્વ સ્વાદ



𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣

𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰

𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠

𑒧𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒻 𑒧𑒹 𑒋𑒐𑒢 𑒋𑒏 𑒯𑒤𑓂𑒞𑒰 𑒂𑒩 𑒕𑒻। 𑒮𑒥 𑒐𑒳𑒠𑒩𑒰-𑒐𑒳𑒠𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒢𑒱𑒪𑒏𑓂; 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒨 𑒢𑒥𑓂𑒥𑒹 𑒩𑒳𑒣𑒨𑒰! 𑒔𑒰𑒅𑒩, 𑒠𑒰𑒪𑒱, 𑒂𑒿𑒙𑒰, 𑒞𑒹𑒪 𑒞𑓄 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒯𑒹। 𑒥𑒮 𑒒𑒙𑒪-𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒂 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒠𑒴𑒡 - 𑒣𑒻𑒯 𑒮𑒥 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒹 𑒣𑒰𑒃 𑒔𑒰𑒯𑒱! 𑒍 𑒁𑓀𑒠𑒰𑒖 𑒪𑒑𑒹𑒪𑒏𑓂; 𑒋𑒞𑒥𑒰 𑒣𑒰𑒃 𑒮𑓄 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒐𑒣𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒹𑒞𑒻। 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒐𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻। 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪 𑒪𑓄 𑒍 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒰𑒥𑒨 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒏ॉ𑒪𑒼𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒑𑒹𑒙 𑒣𑒩 𑒩𑒟𑒲𑒏 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻 - '𑒏𑒲 𑒯𑒾 𑒩𑒟𑒲𑒏 𑒦𑒰𑒃! 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒮' 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒯? 𑒄 𑒦𑒩𑒪 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒏𑓄 𑒒𑒼𑒒𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒨𑒹 𑒪𑒙𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒯?'

- '𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒰𑒃! 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱। 𑒮𑒥 𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻।' 𑒩𑒟𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒏।

- '𑒞𑒼 𑒏𑒯𑒥𑓄 𑒞𑓄 𑒯𑒧 𑒣𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒥𑓄? 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑓄 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒁𑒮𑒯𑒖 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒯। 𑒯𑒾 𑒯𑒧𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒩𑒱𑒨𑒹 𑒕𑒱𑒨𑒯। 𑒤𑒩𑒱𑒕𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒯𑓄 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻 𑒞𑓄।' 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪 𑒮𑓄 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒩𑒟𑒲𑒏 𑒏𑒹 𑒂𑒩 𑒪𑓄𑒑𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒍।

- કી કહયિસ જાઈ વાત કોનો ને શ્રા શ્રપ્પન વડ઼ી ટા! શ્રઈ મહિના મે નશ્રિતેદાની મે કૈક ટા નકિાહ સજા નહૈ તાહિ મે હાથ પ્પાઉ જાસ ગેઉ। શ્રા તહિ પન કોરઢ મે નોયની ળકાઁ વડ઼કા છૌડ઼ા કે વ઼ળીશ્વા કે પનીક્ષા કે શ્વૉન્મ જાપે કે કાઉહિયિ઼ ઉાસ્ટ ડેટ છૈ। છૌડ઼ા યન્સગાન છૈ; શ્વૉન્મ નહિયો જાનેવઈ તસ શ્રોહો નીક નહિ।'

- 'કતે પાઈ ઉગાતૈ?'

- 'સાઢ઼ે પાઁચ સય - સાઢ઼ે યાનિ સય કે ડ્નાશ્ટ શ્રા સય નુપયા કે પ્નૉસ્પેક્ટસ।'

- 'હમના ઉસગ મે એતવે વાઁયઉ છહ - ઈ નાપ્પિ ઉેહ્ શ્રાનો કોનો ળોગાડ઼ કસ કસ કાળ યઉાવહ।'

- 'શ્રા તો?!'

- 'યુન્ન મન્દે! તો હમન યતિ ળુનિ કનહ। એકે હ્ફ્તા નહૈઉ઼ે શ્રાવ! સજાક ળોગાડ઼ જગવ઼ાન ઉગ છનિ એપ્પન તો ળાહ ળઉ્દી વાકી કે ળોગાડ઼ કસ કસ શ્રોકન શ્વૉન્મ જનાવહ।'

દુહૂ કે ઠોન પન મુસ્કાન છઉ। દુહૂ શ્રપન ઘન કે નસ્તા યેઉક। ળઉ્દી ઘન ળા કસ વતવે કે છૈ નહિ તિસ કનયિાઁ તનકાની ઉે વેસઉ નહૌ।

શ્રાઈ શ્રોકના નૂન-તેઉ સંગ નોટી પ્પેવા મે શ્રપૂન્વ સ્વ઼ાદ વુહ્વા નહઉ છઉ।

-કુમાન મનોળ કશ્યપ, સમ્પ્નતિ: જાતન સનકાન કે ઉપ-સયવિ઼, **સંપન્ક:** સી-૧૧, ટાવ઼ન-૪, ટાઇપ-પ, કિદિવ઼ઈ નગન પૂન્વ઼ (દિઉ્ઉી હાટ કે સામને), નઈ દિઉ્ઉી-૧૧૦૦૨૩ મો ૯૯૧૦૯૧૧૯પ૦્ ૯૧૭૯૨૧૬૨૩૯ ઈ-મેઉ : નેનિતોકમાનોળ્ગમાઉ઼િયોમ

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.आचार्य रामानन्द मण्डल-वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस के तुलनात्मक अध्ययन



आचार्य रामानंद मंडल

वाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस के तुलनात्मक अध्ययन

श्री राम कथा के तीनटा प्रमुख घटना १ रानी सभ मे पुत्र प्राप्त हेतु खीर वितरण २ सीता स्वयंवर वा धनुष यज्ञ आ ३ रावण वध के भेद के तुलनात्मक अध्ययन कैल पर मतभिन्नता पायल जाइ छय।

राजा दशरथ के रानी सभ के गर्भ धारण के हेतु खीर वितरण के संबंध मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता हैय।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार।

कौशल्यायै नरपतिःपायसार्धं ददौ तदा।

अर्धादर्धं ददौ चापि सुमित्रायै नराधिपः॥२७॥

कैकेय्यै चावशिष्टार्धं ददौ पुत्रार्थकारणात्।

प्रददौ चावशिष्टार्धं पायसस्यामृतोपमम्॥२८॥

अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव महामतिः।

एवं तासां ददौ राजा भार्याणां पायसं पृथक्॥२९॥

समहे के लल

पीन=१६आना(१रु)

कौशल्या- ८ आना

सुमित्रा -४ आना+२ आना=६आना

कैकेई-२ आना

कुल-१६आना

तवहि राजा प्रथि रानी बोलाइ। कौशल्यादि तहीं चलि आइ।

अर्द्ध भाग कौशल्यहि दीह। उभय भाग आधे कन कीह।

કૈકેઈ કહં ૧ૃપ સો દયઊા૧હ્યો સો ઉજાય જાગા પુણ જાયઊ

કૌશ૯્યા કૈકેઈ હાથ ય૧ાિદૈહ સુમિત્૧ાહિ મિણ પ્૧સણ્ણ ક૧ા઼િ

સમહ્ે કે ૭૭

પ્પી૧ -૧૬શ્રાણા(૧ુ)

કૌશ૯્યા -૮શ્રાણા

કૈકેઈ -૪શ્રાણા

સુમિત્૧ા -૨ શ્રાણા+૨શ્રાણા=૪ શ્રાણા઼

કુ૯-૧૬શ્રાણા઼

સજ ૧ાણી શ્રપણ શ્રપણ પ્પી૧ કે પ્પૈ૯ણ શ્રા ગ૧્જયા૧ામ કૈ૯ણાવાદ મે કૌશ૯્યા ૧ામ કે, કૈકેઈ જ૧ત કે શ્રા સુમિત્૧ા ૯ક્ષ્મણ શ્રા શત્૧ુયણ કે ળણમ દે૯ક઼

શ્રર પ્૧કા૧ પ્પી૧ વાંટે કે પ્૧ક્૧િયા મે ૧ામાયણ શ્રા ૧ામચ૧િત માણસ મે મતજાિણ્ણતા હૈય઼

સ્વયંવ૧ વા યણુષ્ય યળ્ગ કે વૃત્તાંત મે મહ૧્ષિ વા૯્મીકિ શ્રા સંત તુ૯સીદાસ મે મત જાિણ્ણતા હ્ય઼!

મહ૧્ષિ વા૯્મીકિ કે શ્રનુસા૧ -

𑒫𑒲𑒩𑓂𑒨𑒬𑒳𑒪𑓂𑒏𑒹𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞𑒹𑒨𑒧𑒨𑒼𑒢𑒱𑒖𑒰॥

𑒦𑒴𑒞𑒪𑒰𑒠𑒳𑒞𑓂𑒟𑒱𑒞𑒰𑓀 𑒞𑒰𑓀 𑒫𑒩𑓂𑒡𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀 𑒧𑒧𑒰𑒞𑓂𑒧𑒖𑒰𑒧𑓂॥𑓑𑓕॥

𑒫𑒩𑒨𑒰𑒧𑒰𑒮𑒳𑒩𑒰𑒑𑒞𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒢𑒼 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒣𑒳𑒓𑓂𑒑𑒫।

𑒞𑒹𑒭𑒰𑓀 𑒫𑒩𑒨𑒞𑒰𑓀 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒹𑒭𑒰𑓀 𑒣𑒵𑒟𑒱𑒫𑒲𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞𑒰𑒧𑓂॥𑓑𑓖।

𑒫𑒲𑒩𑓂𑒨𑒬𑒳𑒪𑓂𑒏𑒹𑒞𑒱 𑒦𑒑𑒫𑒢𑓂 𑒢 𑒠𑒠𑒰𑒧𑒱 𑒮𑒳𑒞𑒰𑒧𑒯𑒧𑓂।

𑒞𑒹𑒭𑒰𑓀 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑒰𑓀 𑒬𑒻𑒫𑓀 𑒡𑒢𑒳𑒩𑒳𑒣𑒰𑒯𑒵𑒞𑒧𑓂॥𑓑𑓘॥

𑒢 𑒬𑒹𑒏𑒳𑒩𑓂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝𑒹 𑒞𑒮𑓂𑒨 𑒡𑒢𑒳𑒭𑒮𑓂𑒞𑒼𑒪𑒢𑒹𑓄𑒣𑒱 𑒫𑒰॥

𑒨𑒠𑓂𑒨𑒮𑓂𑒨 𑒡𑒢𑒳𑒭𑒼 𑒩𑒰𑒧𑓁𑒏𑒳𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰𑒩𑒼𑒣𑒝𑓀 𑒧𑒳𑒢𑒹।

𑒮𑒳𑒞𑒰𑒧𑒨𑒼𑒢𑒱𑒖𑒰𑓀 𑒮𑒲𑒞𑒰𑓀 𑒠𑒠𑓂𑒨𑒰𑓀 𑒠𑒬𑒩𑒟𑒹𑒩𑒯𑒧𑓂॥𑓒𑓖॥

𑒞𑒰𑒧𑒰𑒠𑒰𑒨 𑒮𑒧𑓀𑒖𑒳𑒭𑒰𑒧𑒰𑒨𑒮𑒲 𑒨𑒞𑓂𑒩,𑒞𑒠𑓂𑒡𑒢𑒳𑓁।

𑒮𑒳𑒩𑒼𑒣𑓀 𑒞𑒹 𑒖𑒢𑒏𑒧𑒴𑒩𑓂𑒡𑓂𑒢𑒵𑒣𑒞𑒱𑒧𑒱𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒰𑒦𑒱𑓁॥𑓕॥

𑒃𑒠𑓀 𑒡𑒢𑒳𑒩𑓂𑒫𑒩𑓀 𑒩𑒰𑒖𑒢𑓂 𑒣𑒴𑒖𑒱𑒞𑓀 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒩𑒰𑒖𑒦𑒱𑓁

𑒧𑒟𑒱𑒪𑒰𑒡𑒱𑒣𑒣𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒲𑒨𑓀 𑒨𑒠𑒲𑒔𑓂𑒕𑒮𑒱॥𑓖।

𑒃𑒠𑓀 𑒡𑒢𑒳𑒩𑓂𑒫𑒩𑓀 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒖𑓂𑒖𑒢𑒏𑒻𑒩𑒦𑒱𑒣𑒴𑒖𑒱𑒞𑒧𑓂।

𑒩𑒰𑒖𑒦𑒱𑒬𑓂𑒔 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩𑓂𑒨𑒻𑒩𑒬𑒏𑓂𑒞𑒹 𑒣𑒴𑒩𑒱𑒞𑒳 𑒞𑒠𑒰॥𑓘॥

𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒹𑒩𑓂𑒫𑒔𑒢𑒰𑒠𑓂 𑒩𑒰𑒧𑒼 𑒨𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒞𑒱 𑒞𑒠𑓂𑒡𑒢𑒳𑓁।

𑒧𑓀𑒖𑒳𑒭𑒰𑓀 𑒞𑒰𑒧𑒣𑒰𑒫𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑓂𑒫𑒰 𑒡𑒢𑒳𑒩𑒟𑒰𑒥𑓂𑒩𑒫𑒲𑒞𑓂॥𑓑𑓓॥

𑒃𑒠𑓀 𑒡𑒢𑒳𑒩𑓂𑒫𑒩𑓀 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨𑓀 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒣𑒵𑒬𑒰𑒧𑒲𑒯 𑒣𑒰𑒝𑒱𑒢𑒰॥

𑒨𑒞𑓂𑒢𑒫𑒰𑓀𑒬𑓂𑒔 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒰𑒧𑒱 𑒞𑒼𑒪𑒢𑒹 𑒣𑒴𑒩𑒝𑒹𑓄𑒣𑒱 𑒫𑒰॥𑓑𑓔॥

𑒥𑒰𑒜𑒧𑒱𑒞𑓂𑒨𑒥𑓂𑒩𑒫𑒲𑒠𑓂 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔 𑒮𑒧𑒦𑒰𑒭𑒞।

𑒪𑒲𑒪𑒨𑒰 𑒮 𑒡𑒢𑒳𑒩𑓂𑒧𑒡𑓂𑒨𑒹 𑒖𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯 𑒫𑒔𑒢𑒰𑒢𑓂𑒧𑒳𑒢𑒹𑓁॥𑓑𑓕॥

𑒣𑒬𑓂𑒨𑒞𑒰𑓀 𑒢𑒵𑒮𑒯𑒮𑓂𑒩𑒰𑒝𑒰𑓀 𑒥𑒯𑒴𑒢𑒰𑓀 𑒩𑒒𑒳𑒢𑓀𑒠𑒢𑓁।

𑒂𑒩𑒼𑒣𑒨𑒞𑓂 𑒮 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒮𑒪𑒲𑒪𑒧𑒱𑒫 𑒞𑒠𑓂𑒡𑒢𑒳𑓁॥𑓑𑓖॥

𑒂𑒩𑒼𑒣𑒨𑒱𑒞𑓂𑒫𑒰 𑒧𑒾𑒩𑓂𑒫𑒲𑓀 𑒔 𑒣𑒴𑒩𑒨𑒰𑒧𑒰𑒮 𑒞𑒠𑓂𑒡𑒢𑒳𑓁।

𑒞𑒠𑓂 𑒥𑒦𑒘𑓂𑒖 𑒡𑒢𑒳𑒩𑓂𑒧𑒡𑓂𑒨𑒹 𑒢𑒩𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚𑒼 𑒧𑒯𑒰𑒨𑒬𑒰𑓁॥𑓑𑓗॥

𑒖𑒢𑒏𑒰𑒢𑒰𑓀 𑒏𑒳𑒪𑒹 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱𑒧𑒰𑒯𑒩𑒱𑒭𑓂𑒨𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒰॥

𑒮𑒲𑒞𑒰 𑒦𑒩𑓂𑒞𑒰𑒩𑒧𑒰𑒮𑒰𑒠𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑓀 𑒠𑒬𑒩𑒟𑒰𑒞𑓂𑒧𑒖𑒧𑓂 ॥𑓒𑓒॥

𑒧𑒧 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒮𑒰 𑒫𑒲𑒩𑓂𑒨𑒬𑒳𑒪𑓂𑒏𑒹𑒞𑒱 𑒏𑒾𑒬𑒱𑒏।

𑒮𑒲𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒻𑒩𑓂𑒥𑒯𑒳𑒧𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒰॥𑓒𑓓॥

𑒩𑒰𑒧𑒔𑒩𑒱𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒏𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 -

સીય઼ સ્વ઼યંવ઼નુ દેપ્પિશ્રિ ળાશાશ્સુ કાહિ યૌંસ દેશ વઙ઼ાઈ઼

ઊપ્પન કહા ળસ મ્રાળનુ સોઈ઼નાથ કૃપા ળવ઼ ળાપન હોઈ઼॥૧॥

ંગાવૂમ઼િ શ્રાએ દોઉ મ્રાઈ઼શ્રસ઼િ સુર્વ઼િ સિવ પુનવાસનિ્હ પાઈ઼॥

યઊ સકઊ ગૃહકિાળ વસ઼િાની॥વાઊ ળુવાન ળનડ નન નાની॥

ઊળ યઢાવ઼ળ પૈયળ ગાઢ॥કહિ ન ઊપ્પા દેપ્પ સવુ ડાઢ઼ૈ॥

ળેહિ છિન નામ મયુય઼ યનુ ળોના,મ્રને મુવ઼ન યુનિ ઘોન કઠોના॥

ગાવ઼હિ છિવ઼િ શ્રવ઼ઊકિ સહેઊ॥સયિ઼ ળયમાઊ નામ ઉન મેઊ॥

નાવ઼ામ વય કે મેદ વળાવે વ઼ાઊ મે નામાયામ શ્રા નામયનાળિ માનસ મે મળમ્રનિ્નળા હૈય઼॥

વાઊ્મીકિ નામાયામ કે શ્રનુસાન શ્ન્દ્ન કે સાનથિ માળઊ હૈય઼॥

શ્રથ સંસ્માનયામાસ માઊળિ નાઘવં ળદા॥

अजानन्निव किं वीर त्वमेनमनुवर्तसे॥१॥

विसृजास्मै वधाय त्वमस्त्रं पैतामहं प्रभो।

विनाशकालःकथितो यः सुरैःसोद्यं वर्तते॥२॥

स विसृष्टो महावेगः शरीरान्तकरःपरः।

विभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः॥१८॥

रुधिराक्तः स वेगेन शरीरान्तकरःशरः।

रावणस्य हरन् प्राणान् विविश धरणीतलम्॥१९॥

स शरो रावणं हत्वा रुधिरार्द्रकृतच्छविः।

कृतकर्मा निभृतवत् स तूणीं पुनराविशत्॥२०॥

रामचरित मानस के अनुसार रावण के भाई विभीषण भेद बतावे वाला हैया।

नाभिकुंड पियुष बस याकें।नाथ जिअत रावनु बल ताकें॥

𑒮𑒳𑒢𑒞 𑒫𑒱𑒦𑒲𑒭𑒝 𑒫𑒔𑒢 𑒏𑒵𑒣𑒰𑒪𑒰। 𑒯𑒩𑒭𑒱 𑒑𑒯𑒹 𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒰𑒪𑒰॥

𑒮𑒰𑒨𑒏 𑒋𑒏 𑒢𑒰𑒦𑒱 𑒮𑒩 𑒮𑒼𑒭𑒰। 𑒁𑒣𑒩 𑒪𑒑𑒹 𑒦𑒳𑒖 𑒮𑒱𑒩 𑒏𑒩𑒱 𑒩𑒼𑒭𑒰॥

𑒪𑒻 𑒮𑒱𑒩 𑒫𑒰𑒯𑒳 𑒔𑒪𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒔𑒰। 𑒮𑒱𑒩 𑒦𑒳𑒖 𑒯𑒲𑒢 𑒩𑒳𑓀𑒛 𑒧𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒔𑒰॥

𑒁𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒹 𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒫𑒡 𑒏𑒹 𑒦𑒹𑒠 𑒫𑒞𑒰𑒫𑒹 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒂 𑒩𑒰𑒧𑒔𑒩𑒱𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒧𑒹 𑒧𑒞𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒯𑒻𑒨।

-𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑒏 𑒮𑒯 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲।
-𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑒏 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲, *𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏, 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒠𑒹𑒫𑒲, 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒮𑓂𑒫𑓐𑒩𑒰𑒧𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑓀𑒛𑒪, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲-𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲, 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒞𑒱𑒟𑒱-𑓐𑓑 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑓑𑓙𑓖𑓐 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨𑒞𑒰- 𑒋𑒧-𑒋𑒮𑒮𑒲 (𑒩𑒮𑒰𑒨𑒢 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩), 𑒋𑒧 𑒋 (𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲)। 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲-𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 -𑒏𑒯𑒰𑒢𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒂 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒣𑒼𑒟𑒲- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒦𑒰𑒮𑒰 𑒏𑒹 𑒢 𑒥𑒰𑓀𑒙𑒱𑒨𑒾 𑓒𑓐𑓒𑓒 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰- 𑒮𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒣𑒼𑒟𑒲- 𑒖𑒢𑒏 𑒢𑓀𑒠𑒱𑒢𑒲 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒂 𑒬𑒾𑒩𑓂𑒨 𑒑𑒰𑒟𑒰 𑓒𑓐𑓒𑓒 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 -𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒒𑒩 -𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒂 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰 (𑒧𑒻𑒮𑒰𑒧)। 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 -𑒠𑒻𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒖𑒰𑒑𑒩𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏- 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒔𑒱𑒞𑒢, 𑒠𑒰𑒨𑒱𑒞𑓂𑒫- 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱, 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒟𑒧𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒮𑓀𑒒, 𑒛𑒳𑒧𑒩𑒰, 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒨𑒲 𑒣𑒞𑒰- 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧-𑒣𑒣𑒱𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒳𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒟𑒰𑒢𑒰-𑒣𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒞𑒰-𑒣𑒣𑒱𑒩𑒰 𑒮𑒠𑒢,𑒧𑒳𑒩𑒪𑒱𑒨𑒰𑒔𑒏 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛-𑓐𑓔 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙-𑒔𑒏𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨-𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒱𑒢-𑓘𑓔𑓓𑓓𑓐𑓒 𑒧𑒼 𑒢𑓀-𑓙𑓙𑓗𑓓𑓖𑓔𑓑𑓐𑓗𑓕 𑒄𑒧𑒹𑒪-𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑒠𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒪𑓐𑓐𑓑𑓐𑒑𑒧𑒰𑒃𑒪𑒔𑒼𑒧*

𑒌 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒰𑒪𑒱𑒮𑒞𑒰𑒙𑒛𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑓐𑒑𑒧𑒰𑒃𑒪𑒔𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒙𑒰𑒅।**

૨૭ભાભદેવ કામત-ભાભદેવ કામત- શ્રાંયભકિ ઉપન્યાસ "જોટ" માદે સન્વશ્ની નાળકશિોન મશ્નિ ળીકે - ટમ્ી એક શ્રય્યાત્મ પથકે પથકિ - સ્વતંત્નતા સેનાની ળભ શ્રછિ ળા' યના, ળનિગી તા' યના઼િ પ્નક્નાયિાયીન સામાળકિ પનવિત્નન'ક સ્વન



ભાભદેવ કામત- શ્રાંયભકિ ઉપન્યાસ "જોટ" માદે સન્વશ્ની નાળકશિોન મશ્નિ ળીકે - ટમ્ી એક શ્રય્યાત્મ પથકે પથકિ - સ્વતંત્નતા સેનાની ળભ શ્રછિ ળા' યના, ળનિગી તા' યના઼િ પ્નક્નાયિાયીન સામાળકિ પનવિત્નન'ક સ્વન

૧

શ્રાંયભકિ ઉપન્યાસ "જોટ" માદે



વ઼રોમ્પ્ય સાહિત્યિકાર ડૉ(પ્રો) સુભાષ ચંદ્ર યાદવ જીક સદ્યપ્રકાશિત સામાજિક ઉપન્યાસ 'ભોટ' પઢવાક અવસર ભેટલ કિછુ સંકલ્પ લોક - સુપૌલ, વહિના સઁ ૬૮ પૃષ્ઠ 'ક મૈથિલી ભાષા મેં પોથી ૨૦૨૨ મેં વહરાએલ અછિ। એહિ પોથીક કભર આકર્ષક છૈક,જાહિક મૂલ્ય સય ટાકા નિર્ધારિત કયલ ગેલ અછિ। ઉપન્યાસ વિધા એકદિસ કોનૂ વ્યક્તિક ચરિત્ર - ચરિત્રાંમ થીક તઁ દોસર દિસ સમાજ આઓર સમયકે ઇતિહાસ રૂપમે સાક્ષી થકૈક। માતૃભાષા મૈથિલીક વિકાસ લલ લોકનિથા, લઘુકથા, દીર્ઘ કથા આઓર ઉપન્યાસ લેખન કાર્ય સઁ આન વિધાક વનસ્વત વેસી કાજ ભેલ અછિ। તકર કારણ છૈ ,લોક વા પાઠક અપના - અપના વૂઢ઼ મૈયાઁ - વાવા, નાના - નાની આ શ્રેષ્ઠજન સઁ ખીસ્સા વાલપન સઁ સુનવાક અભ્યાસી છથિ।આ જનિક પૂર્વજ પંડિત,અધ્યાપક વા લોકગાથાક મૂલગૌન રહનિ,સે શ્રોતા - પાઠક આનક અપેક્ષા વેસી અધ્યયનશીલ વાલપને સઁ ભs જાઈ છથિ। તેં ઉપન્યાસ પઢ઼યમે અધિક સમય દેનિહાર કમ પાઠક હોય છથિ। પઢૈક અભિરૂચિ આ ને પઢ઼ૈક વા કમ પઢૈક અવુહ્યન દૃષ્ટિયે ' ભોટ' સામાજિક ઉપન્યાસ કેં પાઠક અપના દૃષ્ટિકોણ સઁ આંકતાહ આ મનલગૂ વૂહતા ભોટ ઉપન્યાસ'ક સૌન્દર્ય જે હોઈક,એહિ કથ્ય જે વુહાર મુદ્દા એહિ વામી-વોલીક જે ટોન નાયક યદુવંશ , નાયિકા સરશ્વતી , સહનાયક ઉપન્યાસકાર સ્વયં આ સહનાયિકા લક્ષ્મી 'ક મુહેં જે શબ્દ વહરાએલ અછિ સે મિથિલા 'ક સપૌલ- સહરસા આ મધેપુરા જિલા 'ક વોલવચન છી। મિથિલાક પ્રાય: હર ગામમે દૂ તરહક મૈથિલી વાજલ જાઇત રહલ અછિ। વર્ણ આ જાતીય સમીકરણ કેર આધારપર એહિ માનક તય કરી

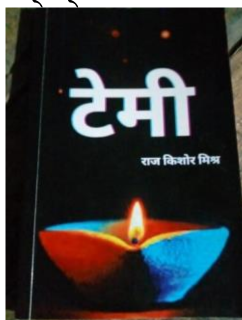
𑒞𑒿 𑒫𑒳𑒗𑒰𑒋𑒞 𑒮𑒫𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒯𑒢, 𑒞𑒐𑒢, 𑒁𑒐𑒢 ,𑒏𑒐𑒢 ,𑒖𑒯𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒯𑒩𑒮𑒚 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒂 𑒮𑒹 𑒥𑒻𑒬𑓂𑒨 - 𑒮𑒼𑒪𑓂𑒯𑒏𑒢 (𑒩𑒰𑒩 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒨𑒰𑒩) 𑒏𑒹𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏' 𑒞𑒐𑒻𑒢, 𑒞𑒫 ,𑒞𑒦𑒲,𑒁𑒐𑒻𑒢𑒰, 𑒖𑒐𑒻𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒻𑒞 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏𑒹 𑓗𑓐% 𑒪𑒼𑒏𑒥𑒰𑒮𑒲 𑒏' 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒞𑓂𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒕। 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒿 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒞𑒱 𑒣𑒱𑒕𑒛𑓃𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏𑒹 𑒢𑒼𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱,𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒖𑒫 𑒋𑒏 𑒣𑒵𑒟𑒏 𑒫𑒼𑒪𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒃𑒋। 𑒄 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏𑒰𑒞𑒏 𑒂𑒢- 𑒂𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒫𑒼𑒪𑒲 𑒥𑒰𑒧𑓂𑒯𑒲 𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒿 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒱 𑒮𑒧𑒳𑒠𑒰𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻, 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒅𑒩𑓂𑒠𑒴 - 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒲𑒏' 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒂 𑒥𑒰𑒏𑓂𑒨 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒞𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒥 𑒖𑒲𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒐𑒢 𑒕𑒻𑒢 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞𑒏𑒋 𑒥𑒼 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒥𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲, 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒂 𑒌 𑒣𑓀𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒐𑒏𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒢𑒼𑒯𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒟𑒲𑒏। 𑒍𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒮𑓂𑒙𑒻𑒪 𑒣𑒰𑓀𑒛𑒱𑒞𑓂𑒨𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒌𑒚𑒪- 𑒌𑒚𑒪- 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒨 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒠𑒪𑒱𑒞 ,𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪, 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒣𑒕𑒳𑒂𑒨𑒪 𑒞𑒫𑒏𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒑𑒻𑒕, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒧 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 ,𑒢𑒱𑒩𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 (𑒫𑒰𑒖𑒫-𑒦𑒴𑒏𑒫) 𑒣𑒻𑒒 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏𑒹 (𑒮𑒦𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹) 𑒣𑒮𑒲𑒢 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒩𑒨𑒯 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒟𑒲𑒏 𑒖𑒹 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒖𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒙𑒻 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒣𑓀 𑒑𑒼𑒥𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝 - 𑒦𑒰𑒭𑒰'𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒨 𑒣𑒰𑒮𑒧𑒰𑒩𑓂𑒏 𑒦𑒹𑒙 𑒖𑒰𑒃𑒞; 𑒮𑒨𑒯 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒥𑒏 𑒪𑒪 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒼𑓐 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒫𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒁𑒦𑒲𑒭𑓂𑒙 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 ,𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 '𑒏𑒰𑒚𑒏 𑒫𑒢𑒪 𑒪𑒼𑒏' 𑒧𑒻𑒿 𑒁𑒦𑒱𑒥𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒧 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒯𑒱 𑒁𑒥𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 '𑒏 𑒦𑒰𑒥𑒲 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒖𑒫 - 𑒖𑒫 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒖𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒼𑒞𑓂 𑒥𑒵𑒯𑒞 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒏𑒩𑒞 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒪𑒐𑒏𑒲𑒨 𑒮𑓂𑒥𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒫𑒳𑒗𑒻𑒞𑒻𑒏। 𑒮𑒹 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒼𑒪𑒔𑒰𑒪 𑒏𑒻𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒫𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒮𑒳𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒩𑒼𑒧𑒰𑓀𑒔𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒒𑒩𑒲 𑒢𑒰𑒯 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒮𑒲 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒣𑒙𑒳𑒂 𑒪𑒰𑒔𑒪 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒥𑒜𑓃 𑒧𑒢𑒼𑒩𑒧 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒣𑒻𑒔 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒪 𑒮𑒰𑒨𑒏𑒪 𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒛 𑒦ऽ 𑒏𑒹 𑒑𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒂 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒲𑒪𑒏𑒹 𑒞𑒑𑒹𑒠𑒰,𑒮𑒹 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒪 𑒫𑒰𑒙𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒥𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒑𑒠𑓂𑒠𑒲 𑒧𑒻𑒿 𑒏𑒹𑒨𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒕𑒯𑒩𑒠𑒹𑒫𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒮𑒿 𑒔𑒼𑒩𑒲𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒥𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒯𑒵𑒠𑒨𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒬𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒰𑓀𑒞 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒩𑒰𑒖 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒥𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒩𑓂𑒥 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒲𑒠𑒥𑒰𑒩, 𑒥𑒱𑒡𑒰𑒢𑒮𑒦𑒰 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒡𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒠𑒏𑒹

અભ્યર્થી આ પૂર્વ સાંસદ પ્રત્યાશી બાબત ગુણદોષક ચર્ચામે લાગલ નાગરિક આ દલીય રાજનીતિ પર એક વિમર્શ દેખાયલ ગેલૈક હન્। અપન નાતેદાર જદ્દૂ નેતા કામતા ઓહિઠામ કરાહિ ગામ પહુઁચ કય ઉપન્યાસકાર યાદવજી લાલટેન છાપક કન્ડીડેટ કેર જે ભાતીજ છથીન, અપન ખર્ચા સઁ મદૈત સદૈત કાર્યમે લાગલ ચરિત્ર ઉપસ્થિત કેલનિ અછિ। ચુનાવી ચટકાર દૈત કહિ એહન નામ સબ યથા - મોહરીલ વિદ્દુ જે ખાનગી શિક્ષક બનલ છૈ। ઈ એકબેર ખુદ પંચાયત સમિતિ સદસ્ય બનલ રહૈક। મૈટ્રિક પાસ કૃષક ચન્દેસરી રાજદ઼સઁ જુટલ છૈ। પૈકાર મન્નૂ, પરેમી, બન્દુલિયા હનિકા સઁ વદિસરકે દોકાન પર ચાહ પયિત છૈ,ટમિન દોકાન પર પાન ખુઅવૈત કાલ લખન મહાવીર સેહો પાન ખાઇછ। ભર ભોટમે ચૌક ચૌરાહા સજલ ગુલજાર બુઝાઇછ। અડ્ડાવાજીમે હરસેઠ યદુવંશ યાદવ આ વિશ્વ મોહન જી કેઁ સમર્થક સહ - સહ કરૈ છૈ। સમાજવાદી પાર્ટી કે આ કમ્યુનિસ્ટ પાર્ટી કે ઉમ્મીદવાર કેઁ ભોટકટવા બુઝલ જાઇછ। શવદ્રૂપ વજિત્સ (ભુજપિ,ગૈર) લખન સઁ પરહેજ઼ ઉપન્યાસકાર નહિ ભેલાહ હન્ । નારી સસક્તિકરણ પર જોર દૈત ગઠબન્ધન કેર કાર્યકર્તા કેઁ કહલ જાઇછ તીનૂ પાર્ટી એકતા મેઁ છૈ , તીર છાપ નીતીશ કુમાર આ લાલૂ જીક પાર્ટી,કાઁગ્રેસ સઁ તાલમેલ બનૌને છૈ સે બાત જનજાઇત સબકે બુઝબામે આબય! ધરણા પ્રદર્શન,જુલૂસ ,પર્ચા- પોસ્ટર સઁ પાટલ દુર્ગાસ્થાનક ચુનાવી સભાક પંડાલમે કુર્સી લાગલ આ પ્રચાર - પ્રસારકે કૈસેટ લાઉડસ્પીકર સઁ ગીત લોકતાંત્રિક ઉત્સવ મેઁ ઉત્સાહ ભરને છૈ। વીડીઓ કેર દોકાન પર હારમુનિયાઁ બાજાક માસ્ટર નથુ ,જમીલ , સૂર્ય નારાયણ,કમલદાસ,વિનોદ પટેલ આ પાઠક ટોલક એક છૌરા,અશોક ભોટ માદે ગપ્પ દૈત રહૈત છૈ। મુખિયા વિક્રમ કેર ચુનાવક મુખ્ય પ્રતિદ્વંદ્વી સઠ઼ીના પ્રત્યક્ષ રૂપ સઁ આઈકોન બનલ છૈ। વિદ્દુક મુઁહ સઁ સ્રી યાદવ જી કહાવૈત દેખાઈ છથિ સઠ઼ીના કે આવાજ જેહન રોવદાર રહઈ ,તેહને આકર્ષક ઓકર રૂપ રહૈ। લગ ઓકરા દસિ તાઇકતે રૈહ જાઇ। વૃદ્ધ નત્થૂકે બ્લાઁકમેઁ દેવીક અવતાર સઁ કમ નહીઁ બુઝાય - સઠ઼ીના। દીના પાઠકકે તઁ મુખિયા કન્ડિડેટ બાવત્ સઠ઼ીના કરકરા દેલકૈક,બૂઢ઼ પાતિ ઉતારિ ગેલ હોય। ઉપન્યાસમે સંવાદ કૌશલ બઢ઼ સજીવ બુઝાએત। સઠ઼ીના દિલ્લીમે

નાળમસ્ત્નીક વીવી નહૈત ળમીન ખ્નીદ વક્ત્ની કાળમે મોઈમકે સંગ પુનૈત છૈ। નીક શ્રામદનીક વઊ પન નવ઼ટોઊમે કોઠા યનિ પીટા ઊને ય઼ા સસ્ત્રીનાક ગાત રળળતદાન વુહ્રારછ। શ્રોકન ઊયકૈત પાતન ડાંડ઼ , ડીકા સનક યંયઊ શ્રાઁખ્િ ગોઊ મટોઊ યેહ્ના,શ્રૂઊઊ-શ્રૂઊઊ ઊાઊટનેશ ગાઊ ,મુઁહ પનહક પારનકે યમક ખ્વૂ નીક ઊાગૈત છૈ। મહમહ કનૈત દેહ સઁ શ્રત્તન સુગન્ય મતેને ળાળા હોય઼ યન્દેસની કેઁ। શ્રુઊસન વહિૈસૈત સુનૈત પન સઁ નળૈન નૈ હૅટૈવૈ છૈક ળેના। યન્દેસની સઁ સસ્ત્રીનાકે નીક ઊાગનપન છૈક। સે એકદનિ શ્રકસ્માત દેહ છુશ્રા ગેઊપન શ્રોકના વનશ્રુસન ડનઊ સાઁપે ળંકા ઊાગઊૈક। યન્દેસનીકે ળખ્નનિ સઁ થાહ યઊૈત છૈ સસ્ત્રીના દઊ્ઊિ સઁ શ્રેન શ્રાવિ ગેઊ , તખ્નનિ સઁ શ્રોકન પૈન શ્રોનૈહ વિહકિ ળાઈછ। સસ્ત્રીના સુન્દનકિ માયા થકિૈક,શ્રોકન શ્રાંયન દશિ કામુક દ ૃષ્ટપિે એકટક નહિાનત વ઼ાસનાક શ્રાગમિ યન્દેસની તનૈપ નહઊાહ। સે દેખ્ગિમિ છિગુનૈત દીપ્ત જેઊ સસ્ત્રીના જોટક ગપ્પ દસિ વ઼ાતાવ઼નાર્ણ ક' માનઊહ શ્રછિ। એહ્ન ઊાઊત્િય઼પૂન્ર્ણ મૈથઊિ સાહત્િય઼ દશિ નવ઼ પઢિકિ ઊીક ળાગૂક નહત; ઉપન્ય઼ાસ કાન ઈ કથા ૩૫ સાઊ પહઊિ ઊખ્નિે નહતિથિ ,સે પછુશ્રા ગેઊ। જોટન શ્રાવ વ઼ોટમે નગદ ટાકા ઊેમય઼ યાહૈત છૈ સે કામતા સન સહયોગી શ્રા ૧૦ હળાન દૈ વાઊ વહુતો મદદગાન ઊીક ય઼ાદવ઼ ળીક ખ્નેમામે છૈ। એક ઊાખ્ એક દનિક ખ્નન્ય એકે ગોટય઼ ઉઠા ઊેને હોઈક। તહનિા વ઼શ્સિ઼ મોહ્ન કૅ કયિોટ ળાતિ સઁ ખ્વુ સહ્યોગી છૈ। શ્રોકન પત્ની સુળાતા સેહો પે ક્ષેત્ન સઁ ઉપયુનાવ઼મે વ઼યિાય઼ક જેઊ છઊૈક। વાપો કાંગ્નેસ ળમાનામે ઉપમંત્ની વહિાન સનકાન મૈં જેઊ છઊૈક। તૈં શ્રોકન સમન્થક તઁ પાઈ સઁ હોની ખ્નેઊય઼ સેહો કોનૂ વ઼શિષ વાત નહિ। પદ રંયી સીના વાઊ મોદીળી કૅ વાતકૅ ગઠવંયન વાઊ કહૈત છૈ જોટક ખ્નાતિ કહી પાકસ્તિાન પન નૈ યઢ઼ાએ કડ દેખ્ । વહિાન ક' યુનાવ઼ી દાંવ઼-પેંય કેન શ્રનાડ઼ી ઉપન્ય઼ાસકાન તઁ પ્નજાવ઼શાઊી નૂપેં સમ્પૂન્ર્ણ કથાનકમે શ્રાય઼ઊ છૈ।

२

𑒮𑒩𑓂𑒫𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒖𑒲𑒏𑒹 - 𑒙𑒹𑒧𑒲



𑒅𑒢𑓂𑒢𑒻𑒮 𑒑𑒼𑒙 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰'𑒏 १२५ 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒭 २०२३ 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒏𑒧𑒱𑒞 २५० 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒹 𑒨𑒬𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩। 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒖𑒲𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩𑒑𑒳𑒖 𑒏◌𑒦𑒩 𑒣𑒩 𑒩𑓀𑒑𑒲𑒪 𑒕𑒫𑒱 '𑒠𑒲𑒣' 𑒏𑒹𑒩 𑒙𑒹𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒑𑒱 𑒪𑒹𑒮𑒪 𑒕𑒻𑒏 ,𑒖𑒹 𑒐𑒴𑒥 𑒮𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒏 𑒯𑒢𑓂। 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒃𑒖𑒼𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒂𑒢𑒻𑒞 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒧𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒕। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪 '𑒏 𑒧𑒡𑒳𑒬𑓂𑒩𑒰𑒫𑒝𑒲 𑒣𑒰𑒫𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒪𑒪 𑒠𑒑𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒫𑒱𑒡𑒱 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒙𑒹𑒧𑒲 𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒢𑓂𑒞𑒳𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 (𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒿 𑒣𑒞𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰) 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒑𑒞 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒿𑒔𑒻𑒞 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒯𑒱𑒫𑒰𑒞𑒲 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒑 𑒁𑒧𑒩𑒞𑓂𑒫 𑒍 𑒣𑒞𑒱𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒌 𑒖𑒙𑒱𑒪 𑒫𑒱𑒡𑒱 𑒏𑒿 𑒁𑒠𑒬𑓂𑒩𑒾 𑒮𑒿 𑒮𑒯𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒬𑒼𑒏𑒰 𑒒𑒰𑒫 𑒥𑒢𑒰 𑒦𑒼𑒑𑒨 𑒕𑒟𑒱𑒢𑒱। 𑒋𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒠𑓂 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒏𑒟𑒰 " 𑒖𑒲𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒣𑒩 " 𑒧𑒻𑒿 𑒬𑒧𑓂𑒦𑒴 𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒃𑒨𑒯 𑒠𑒲𑒣 𑒟𑒲𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒖𑒰𑒑𑒱𑒏𑒨 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒼𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒥𑒢𑒱 𑒦𑒰𑒧𑒞𑒱 𑒙𑒹𑒧𑒲 𑒅𑒮𑒏𑒰𑒫𑒻𑒞 𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒖𑒪𑒲 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲, 𑒮𑒾𑒩 𑒆𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒂 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒮𑒢𑒞𑒹𑒪 𑒮𑒿 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒰𑒪𑒙𑒹𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒏, 𑒧𑒬𑒰𑒪𑒼 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒖𑒢𑒏𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒻𑒏। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒠𑓂𑒨𑓁𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒬𑒳𑒦𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒒𑒲-𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒰𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕! 𑒄 𑒠𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒖𑒾𑓀 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒔𑒾𑒥𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒩𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒖𑒳𑒂𑒩 𑒣𑒟 𑒂𑒪𑒼𑒏𑒱𑒞 𑒏𑒨 𑒠𑒯𑒼𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲 𑒞𑒿 𑒡𑒢𑓂𑒨𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒯𑒼𑒨𑒥! 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒖𑒲 𑒮𑒯𑒖 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒲 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞

મૈથિલી - હિન્દી સાહિત્ય ક્ષેત્રમે કવિતા વિધાક વહુતો પોથી અપનહિ પ્રકાશિત કઽ ચુકલાહ અછિ સદ્યપ્રકાશિત ઈ કાવ્ય પોથી ' ટેમી ' પઢવાક અવસર ભેટલ હયા એહિમે સંગ્રહિત કવિતાક સૌંદર્ય વઢ વેસી આકર્ષિત કરૈત ચા પોથીમે અક્ષર-શબ્દક શુદ્ધતા મેં ટંકણ કાર્યમે લીન કવિ મહોદયક ધર્મપત્ની શ્રીમતી અનીતા મિશ્રાજી પ્રશંસનીય રૂપેં અગ્રગામી ભેલ છથિ કવિતાક દૌડ़મે ઈ રચના જીવનક વિવિધ રંગક આયામ માપલ જા સકૈછ વર્તમાન સામાજિક પરિવેશ જાહિ તિવ્રતા સં પરિવર્તનશીલ છૈ, તાહિ સમય-ચક્ર ક' પ્રતિવિંવિ છી ઈ અક્ષર રૂપી કવિતા પોથી અક્સમે સમય સં આએલ ,સે પ્રકાશનક દાયિત્વ હુનક સુપુત્રી સુશ્રી શિક્ષા મિશ્રાકે સહયોગાત્મક રૂપ સુસ્પષ્ટ હએકૈત દેખાઇછ શ્રીમાન રાજકિશોર મિશ્ર જીક કવિતા વિવિધ આયામ - વિસ્તૃત , સૌન્દર્ય છટા નવીન આ નૈકા - નૈકા વિચારક પ્રતિમાન ગઢૈત અછિ સબ કાવ્યકે ભાવ અત્યન્ત ચિત્તાકર્ષક આ ગૂઢ રહસ્ય'ક દ્યોતક છૈક ટેમી પઢલાક વાદ હિનક આન મૈથિલી કાવ્ય પોથી -: મેઘપુષ્પ,ચાનનિ, નવપાત - નવવાત, ઉપાયન, સપ્તવર્ણ, નવ ઘર ઉઠય - પુરાન ઘર ખસય આ જિનગીક સોન સન પાંખ જિજ્ઞાસુ પૂર્વક પઢવાક ઉત્કણ્ઠા વઢલ મિથિલાક માટિ - પાનિ કવિતા મેં એકર ભૌગોલિક પરિવેશ આ ઇતિહાસિક પુરાન દસ્તાવેજી અંશ ઓ ધાર્મિક મહિમા તથા આહાર - વિહારક રીતિ રિવાજ સંદર્ભિત આખ્યાન કેં અપ્પયાઇસકે કવિજી વોજતવ ભરલનિ અછિ મધુમાસ કવિતામે તતેક સુન્દરસન ગરહેન ભેલ છન્હિ જે સાશ્વત સત્યક દર્શન કરવૈછ, જેના -

રસ સં સિક્ત મધુમાસક રભસ સં ,
ધારૂ દિસિ મોદ સં માતલ ,
અલક ગાછ પર ઉગલ કનોજરિ ,
ઉંઠી કુસુમ સં કસિ - કસિ ગાંથલ ।

આજુક નારી કવિતામે મહિલા સશક્તીકરણ કેર સજીવ ચિત્રણ કરૈત

उत्तरोत्तर विकासक प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रहबाक दृश्य देखेबामे समर्थ भेलाह अछि। विज्ञान, कला , चिकित्सा, क्रीड़ा ,शिक्षा आ गृहस्थी सँ अफसर बेटिया चरकि पद प्रतिष्ठा पर अधिष्ठात्री नारी शक्ति'क उत्थानक बखान कयलाह अछि जे ठमकल नहि वरन् पुरूषोके पछोर करैत आगू बढ़बाक अभिप्रेरणा जगबैत छथीन। एहि पोथीक केन्द्रीय कविता थीक - 'दीप आ फतिंगा' जाहिमे तिमिर कँ भगबैत दीपकके लगीच कोना फतिंगा सभक हेंज चारोहि लागि जाइछ। एहि फतिंगाके कियो नोत दऽ कऽ नहि ने बोहो करबैत य। ओ एक चुम्बकीय शक्तिक कारणेँ अपनाके आबै सँ वा हराकै सँ नै रोकि पाबैत छै। एहिमे प्रकृतिक आभाक रश्मि देखेबाक कविकेर यथेष्ट प्रयास केने छथि।

शेष कविता - भीखमंगा, भूकम्प, अराध्यक फूल, गाम बनल जा रहल शहर,फगुआ, जिनगीक संघर्ष,कविताक द्विरागमन,गामक राजनीति,पलायन, बड़दक गहिंकी, ऊर्जाक महत्व, जिनगीक दर्शन,मनुष्य आ मशीन, वृद्धाश्रम आओर जँ जग जल नहि होइत! खूब अपील करैत छैक,जे अपनेआपमे सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीके सद्यप्रकाशित ई काव्य पोथी "

टेमी " अत्यन्त सारगर्भित बुझाइछ। ओना देशज आ निसन्न मैथिली भाषा केर जगह बाहरी शब्द सँ ओहल कहि शिष्टक शब्द देल गेल छैन। तैयो एहि तरहक मर्मस्पर्शी काव्य रचबाक आ स्तरीय विषय चयन लेल हम श्री राजकिशोर बाबूक सुदीर्घ जीवनक सफल कामना करैत छियैन। हिन्दीए पुस्तक जहाँता मैथिली 'क पोथी सेहो विशिष्टता प्रमाणित होइत गनीज बुक ऑफ इण्डिया रिकॉर्ड्स बना सकय

३

एक अध्यात्म पथके पथिक - स्वतंत्रता सेनानी



જય - જય!

મધુબની જિલા અન્તર્ગત પ્રસિદ્ધ ગ્રામ સુન્દર બિરાજીત નિવાસી સર્વશ્રી યુગલ શર્મા આ શ્રીમતી દેવકી દેવી જીકે ઓહિઠામ દરસન્ ૧૯૧૨ કેર લગાયકમે એક બિશિષ્ટ બાલક કેઁ જન્મ ભેલનિ। આનન્દ'ક એહિ ક્ષણમે સરસમાજ આ કૈવર્ત પરિવારક લોકનિ હુનકર શુભ સંજ્ઞા રખલનિ આનન્દ શર્મા જી। આનન્દ શર્માજીક બાલ-વિવાહ રેશમાક' સઁગ સહોરવા ગામમે ભેલ રહનિ।જાહિ સઁ હુનકા દૂ પુત્ર રત્ન ક્રમશઃ રામ નારાયણ આ શિવ નારાયણ ભેલનિ। હમ હુનકર સક્તાસ્થિથલ પર પ્રતિમા અનાવરણ સમારોહ આયોજનમે જાએ, સર્વધર્મ સમભાવ ભજન, વિનય - પ્રાર્થના ધરિ પ્રસ્તુત કયને રહી। મહાન સ્વાધીનતા સેનાની સ્વ૰ આનન્દ બાબૂ એક યશસ્વી શિક્ષક રહથિ। ઓ હુલાસપટ્ટી - જાગેશ્વર સ્થાનમે ૧૯૭૫ ઈ કેઁ મિડિલ સ્કૂલ સઁ સેવાનિવૃત્ત ભેલાહ। ઓતય પાર્વતી મંદિર નિર્માણ કય રાજસ્થાન સઁ સંગમરમરકે મૂર્તિ ધરિ સ્થાપિત કયલન્હિ। સામાજિક સર્વજાતીય પંચૈતીમે લાગલ રહૈત શ્રધાક પાત્ર દસક બીચમે છલાહ। વિદ્યાર્થી સબકેઁ સાંઝ-પ્રાત પઢૈત પ્રતિ જાગરૂક કરૈત પડ઼ોસી ગામસબમે આ પહુનાઈમે જાકય કુટુંબ કેર ધીયાપુતાકે સજગ કરૈત રહલાહ। પ્રશ્નાવલી પુછૈથ આ સમાધાન સેહો બતબથિ। હનિક બહુતો શિષ્ય જીવનમે આગૂ બઢલાહ આ પદ પ્રતિષ્ઠા પૌલનિ। જાહિમે વિધાનસભા પૂર્વ અધ્યક્ષ સ્વ૰ રાધાનન્દન બાબુ ,પટનામે પશુપાલન

વ઼િભાગ કેન નદિશક ઊક્ષ્મી વાવૂ શ્રાદિ છઊપ્પનિ। શનામળી શ્રપન ળીવનક વ઼ેશી સમય સન્વ઼ળાતીય ઉત્થાન ઊઊ દેઊથનિ। શ્રજાકૈવ઼ન્ત કઊ્યામ સમતિ કોઊકાત્તા કેँ एक વૈસાનમે પ્નસ્તાવ઼ દૈત મયુવની,ઊહેનયિ઼ાંળમે છાત્નાવ઼ાસ ઊઊ શ્રાયાનશિઊ નપ્પઊૈનાશ્રો મહાન સ્વ઼તંત્નતા સેનાની ગડ઼વ઼ા નવિ઼ાસી સ્વ઼ શ્રનંત ઊાઊ કામત ળીક સંગ પ્પુવ પુનઊનાિળાતીય મહાસભા શ્રાયોળનમે ળન ળાગૃતિ કૈલ ગામે - ગામે કતેકો ળઊિમે જ્નમામ કયને નહથિ। હુનકન ઊપ્પિતિ ભાષામ શ્રા મંચીય સંભાષામ કેન હમ કાયઊ છી। एक ઉદાહનામ દ્નષ્ટવ઼્ય શ્રછિ-: હિંદીસँ મૈથિલી શ્રનુવ઼ાદ

વહિન પ્નાંતીય કૃષવિ઼ત્ન્ત કૈવ઼ન્ત एवં કેવટ ળાતીય મહાસભાક ૧૪ વ઼ાં શ્રયવિ઼ેશન સુપૌઊ (સહન્ષા) મહાસભાક સંક્ષપ્તિ કાન્ય વ઼િવિ઼નામ દૈત વાળઊ છઊહ-:(દિ ૧૫-૦૫-૧૯૬૪ ई કેँ) શ્નયયેય સભાપતિ ળી, શ્રાગત શ્રતિથિગામ, મત્િનગામ શ્રાશ્રોન વહિમ ઊકની! સન્વ઼શક્તિમાન સૃષ્ટકિ્નતા પનમાત્મા કેँ વેન-વેન નમન કૈલ છી। યન્ય છથિ શ્રો પ્નજુ ળનિક શ્રસીમ કૃપા શ્રા ઉત્સાહ પ્નેનામા સँ एળ હમ-સવ એકત્નતિ ભેઊહું, ળાગિત - ગંગામે ડુભકી ઊગાવૈત વન્યૂ-વન્યૂ ગાના સँ ગાના ળોડ઼કય, વૈપાનકિ શ્રદાન પ્નદાન કય સંગઠન સૂત્ન કેँ મળબૂત કાય, નાષ્ટ્નકે પડ઼િતિ શ્રંગકે સ્વ઼સ્થ્ય ક' નાષ્ટ્નોત્થાનમે સહયોગ કનવાક ઊઊ તનહ-તનહકે શ્રભિલાષા ઊ' કેँ શ્રાયઊહું શ્રછિ। एहન શુભ ઘનીમે યન્દ શવ્દ સँ શ્રપને સભાક ળે સેવ઼ા કનવાક શ્રહોભાગ ભેટઊ હેન, તાહિ ઊઊ શ્રહૉંક શ્રાભાની નહવ, સંગહિ હિમન હૃદય શ્રાનન્દ વ઼િહ્વ઼ઊ ભ' ક' ઉભૈન નહઊ યા વન્યૂવ઼ન ! હમ વ઼િગત કતેકો સાઊ સँ મંત્ની પદ પન નહે શ્રહૉં સભાક સેવ઼ા કૈલ શ્રાવિ નહઊ છી। एहિ સેવ઼ાન્થ શ્રવયમિ હમના મહાસભાક કાન્યક્નમ શ્રાદિ વ઼ષિયમે ળે શ્રનુભવ઼ ભેઊ, સંક્ષેપમે વુહ્વ઼ા દેનાઇ શ્રપન કન્ત્તવ્ય઼ વુહૈત છી। તા શ્રાગૂક ઊઊ શ્રપને ઊકનિ કેँ માન્ગ નન્િયાનમમે સહાયક ભ' સકય। ઉદ્દેશ્ય઼-:(૧) ળાતકિ શ્રનેકો દવિ઼ાના, ળાગિત સભા કતેકો ઠામ કયઊનિ, પનંચ एहિ ળઊિન્તન્ગત ભગવ઼ાન શ્ની ૧૦૮ શંકન ઊગ સહિસન સ્થાન- મહેશ્વ઼ન ઊાઊ દાસ વ઼્યાસકે સતત્ પનયિ઼ાસ સँ ૧૯૪૧ ई મેં

𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒰𑒟𑒣𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒢𑒾𑒂𑒥𑒰𑒐𑒩 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒠𑒳𑒩𑒠𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒕𑒪𑒯𑒴𑒿। 𑒂𑒢 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒴𑒑𑒝 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏, 𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒖𑒰𑒞𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒼 𑒂𑒢𑒼 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒲𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒑-𑒩𑒑𑒧𑒹𑒿 𑒖𑒼𑒬 𑒅𑒧𑒻𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓂𑒤𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒕, 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒋𑒐𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒫𑒼 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒂𑒢𑒼 𑒞𑒹𑒖 𑒑𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞' 𑒏𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒞𑒿 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠' 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯, 𑒂𑒄 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒢𑒫 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒑𑒳𑒧𑒻𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲' 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒮𑓀𑒔𑒨, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒮𑒧𑒢𑓂𑒫𑒨𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃 𑒕𑒻𑒏' 𑒞𑒹𑒿 𑒧𑒯𑒰𑒮𑒦𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒞 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒴𑒑𑒝 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒻𑒞𑒢𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒰𑒨, 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱𑒏 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱 𑒥𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒞𑒞𑓂 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒞।

𑓒) 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫-: 𑒮𑒖𑓂𑒖𑒢𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠 !

𑒄 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒖𑒳𑒑 𑒟𑒲𑒏। 𑒂𑒑𑒳 𑒥𑒜𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒞𑒰𑒏𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒥𑒏𑒹 𑒮𑒥 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒨𑒰 𑒋𑒏 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒕𑒰𑒩𑒱 𑒁𑒑𑒳𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒹𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒕𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒨 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑒱 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒬 𑒧𑒹𑒿 𑒕𑒻𑒏। 𑒂 𑒄 𑒮𑒰𑒿𑒔𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒙 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒡𑒰𑒩 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒨 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒮𑓂𑒞 𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒋𑒏𑒩𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒣𑒞𑒱𑒨𑒰𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒥𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹 𑒢𑒿𑒨 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒅𑒣𑒩 𑒒𑒲𑒔𑒻𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱,𑒂 𑒢𑒻 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒂𑒑𑒴𑒋 𑒥𑒜𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒼 𑒕𑒻𑒏, 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒂 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏𑒼𑒝 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏,𑒖𑒞𑒨 𑒮𑒯𑒮𑓂𑒩𑒼 𑒥𑒩𑒐 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 , 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏, 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏, 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒥 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒨𑒹 𑒣𑒕𑒳𑒂𑒨𑒪 𑒞𑒥𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒖𑒧𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒨𑒹 𑒖𑒾𑓀 𑒯𑒧 𑒏𑒠𑒰𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒒𑒵𑒝𑒱𑒞 𑒦' 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒮𑓂𑒫𑒯 𑒏𑒵𑒞 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑒲𑒧 𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒕 𑒏𑒙𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒑𑒏 𑒂𑒑𑒴 𑒖𑒯𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒰𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒒 𑒥𑒢𑒪 𑒂 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒟𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲 (𑒬𑒴𑒠𑓂𑒩) 𑒧𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒯𑒧

𑒂𑒍𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒳𑒠𑒰𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒨 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒹𑒨 𑒠ृ𑒭𑓂𑒙𑒨𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒅 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒴𑒏 𑒠𑒰𑒮 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒧𑒰𑒨 𑒂 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒴 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒯𑒹𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒨। 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒮𑒠𑒲 𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒮𑒞𑒰𑒏 𑒖𑒲𑒖𑒲𑒩 𑒧𑒹𑒿 𑒖𑒏𑒩𑒪 𑒠𑒹𑒬 𑒞𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒲 𑒦' 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏,𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒰𑒮𑒞𑒰 ,𑒅𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩𑒰𑒛𑓃𑒱𑒢 ,𑒬𑒼𑒭𑒝 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒔𑒰𑓀𑒑𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒏𑒻𑒩 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒠ृ𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒁𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒥𑒜 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒐𑒮𑒪 𑒨𑒰। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒁𑒑𑒳𑒂,𑒡𑒩𑒧𑒏 𑒚𑒱𑒏𑒠𑒰𑒩 𑒮𑒥 𑒞𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒅𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒡 𑒪𑒑𑒰 𑒩𑒐𑒪𑒏 𑒯𑒢𑓂। 𑒖𑒾 𑒮𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 ऋ𑒔𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒯𑒼𑒨 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒨 𑒖𑒹 𑒮𑒴𑒢𑒨𑒥𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒦𑒰𑒫𑒲 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒻𑒿 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒯𑒲𑒢 𑒏𑒨 𑒞𑒹𑒖𑒼𑒧𑒨 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒞 𑒥𑒢𑒨𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒁𑒫𑒩𑒴𑒠𑓂𑒡 𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒨𑒰। 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒬𑒰 𑒂𑒩𑒼 𑒠𑒨𑒢𑒲𑒨-𑒮𑒼𑒔𑒢𑒲𑒨 𑒁𑒕𑒱।𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒃𑒥𑒪 𑒂 𑒥𑒯𑒳𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒏 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒏।𑒞𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒴𑒢𑒳 𑒥𑒢𑒱𑒠𑒳𑒏 𑒨𑒰𑒠𑒹𑓀 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 '𑒫𑒰𑒠' 𑒂 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒪𑒛𑓃𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒬𑒲 𑒏𑒻𑒿 𑒙𑒱𑒏𑒱𑒬 𑒠𑒻𑒞 𑒨𑒰𑒯𑒧-𑒮𑒥 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒮𑓀𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪 𑒕𑒲𑒯𑒹।𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒧𑒲 𑒢𑒯𑒲𑒿 𑒕𑒻𑒏 ,𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒠𑒻𑒞 𑒮𑒢𑓂 १९४२𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒬𑒱𑒏𑓀𑒖𑒹𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒪𑒻𑒢।𑒣𑒕𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒁𑒋 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒯𑒰𑒠𑒳𑒩 𑒢𑒾𑒖𑒫𑒰𑒢 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒣𑒳𑒢𑓁𑒣𑒕𑒱𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒕।𑒞𑒏𑒩 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒟𑒲𑒏 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫।𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏𑒏 𑒯𑒲𑒢𑒞𑒰 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒲।𑒁𑓀𑒞𑓁 𑒖𑒰𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰𑒩𑒴𑒜𑓃 𑒏𑒰𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒮 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒲𑒔𑒏 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒬𑒲𑒪 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒻𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏(𑒤𑒰𑒩𑓂𑒧 𑒋 𑒂 𑒥𑒲)𑒠𑒻𑒞 ,𑒖𑒲𑒞𑒹𑒥𑒰𑒙 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒫𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒒𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒢𑒿𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒟,𑒞𑒰𑒡𑒩𑒱 𑒯𑒧 𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪𑒏𑒹 𑒣𑒕𑒱𑒩𑒪𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒨𑒥।

𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒋𑒫𑓀 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏ृ𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒮𑒿 𑒞𑒱𑒩𑒮𑓂𑒏ृ𑒞 𑒂 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒂𑒔𑒩𑒝 𑒮𑒿 𑒯𑒲𑒢 𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒏𑒞𑒨 𑒡𑒩𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲'𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒡𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪 𑒦' 𑒮𑒏𑒻𑒕? 𑒯𑒿! 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒅𑒠𑒰𑒩 𑒬𑒰𑒮𑒢-𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰'𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒋𑒯𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒹 𑒏𑒱𑒕 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒰𑒫𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱।𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒿 𑒎𑒑𑒳𑒩𑒲 𑒣𑒩 𑒑𑒢𑒨

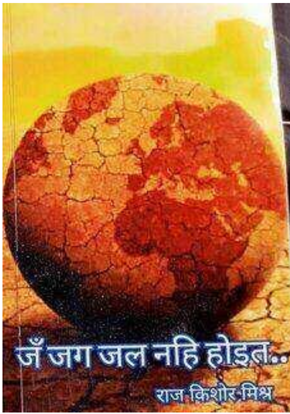
लोकर पालौ सरकारी दृष्टि सँ महाविद्यालय केर नि:शुल्क शिक्षाक तरहेँ विद्यालयोमे नि:शुल्क पढ़ायबे ओरियाओन होय आ पढ़यवाला छात्रगणकेँ अनुदान भेटय,तखने ई दृष्टिमे प्रगति होयब संभव हैत।
३) कार्यकाल_ आब हम अपनेक चयनित महासभाक कार्यक्रम क' दिस मोड़ैत छी-: आइ सँ तीन साल पहिले एहि महासभाक तेरहवां अधिवेशन दरभंगा जिला अन्तर्गत हृदयपुर मेँ२८-२९-३० जी १९९१ मेँ सम्पन्न भेल रहय।ओतय प्रान्तक कोना-कोना सँ जातिक सदस्य ,,विद्वान एवं अनन्य महानुभाव पदाधिकारी तथा अनेकानेक महानुभाव अपन मधुर भाषा सँ हमर प्रशंसाके ऊपर स्तर उठेबाक कोशिश करैत छथि। अधिवेशन केर सुअवसर पर छात्र सम्मेलन,युवक सम्मेलन आओर नारी सम्मेलन सेहो भेल रहय।ऐसी अवसर पर निश्चुकि पौने छलहुँ जे एक स्मृति-पत्र ल'के प्रतिनिधि मंडल राज्य सरकार तथा कांग्रेस सभापति सँ भेंट करी।से तहिना कयल गेल ,परंच एकर कोनो तरहक सुलभ नँय भेटलाकइकडाम कार्यकारिणी समितिक बैसार तथा साधारणसभाक बैसार सेहो होइत रहल ।तकर अलावा जातिक अनेको आपसी झगड़ा झंझट केर फैसला -मिलन कयल गेल।महासभाक प्रयास सँ एकगोट महेश्वर कैवर्त माध्यमिक विद्यालय अंचरगढ़ी मेँ १९८४ई० सँ चलि रहल छैक।जाहिमे सम्प्रति आदेशपाल१५०छात्र आ चारि शिक्षक ओ एक अध्यक्षता आओर उच्च माध्यमिक विद्यालय भूतपूर्व सभापति श्री राजकुमार कामति जी केर सद्प्रयास सँ सुनके ओतय कसिन ऊच्चांगल विद्यालय-चचनाहा 'क नाओ सँ चलि रहल छैक।ओहिमे लगायक १५बिगहा जमीन तथा ३०हजार टाका हुनका परिवार दृष्टिसँ देल जा चुका छन्हि।आ १६ बिगहा जमीन ओहिठामक जनता सेहो देलनि अछि।अर्थात् कुल ३१बिगहा भूमि विद्यालय केँ छैक।महासभाक प्रयास सँ सेहो उक्त विद्यालय केँ हजारो टाका सँ ऊपर दान भेटल छैक।
आय-व्यय-:
गत अधिवेशन केर कुल चन्दा २२०५टाकापौने तेरह आना आयल आ २३१८ टाका ||=-_ आना पाइ सर्वांगीण समिति दृष्टिसँ व्यय कयल गेल।महासभा के

𑒅𑒣𑒩 ११२𑒙𑒰𑒏𑒰 |||०||𑒂𑒑𑒰 𑒏𑒩𑒖 𑒔𑒜𑒱 𑒑𑒹𑒪।𑒁𑒡𑒱𑒫𑒹𑒬𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒂𑒃 𑒞𑒏𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒩,𑒑𑒞 𑒁𑒡𑒱𑒫𑒹𑒬𑒢 𑒏' 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒧𑒹 १०८𑒙𑒰𑒏𑒰 _,=𑒂𑒑𑒰 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪।𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞𑓂 𑒏𑒳𑒪 𑒩𑒏𑒧 𑒂𑒃 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒐 २४-५-१९८६४𑒄०𑒡𑒩𑒱 २२१𑒙𑒰𑒏𑒰 |=✓||𑒂𑒑𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒢𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒮𑒦𑒰𑒏 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒯,𑒃 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒐𑒳𑒠𑒹 𑒯𑒧 𑒧𑒯𑒰𑒮𑒦𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨 𑒮𑒿 ऋ𑒝 𑒪'𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱।ऋ𑒝𑒏 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒧 𑒏𑒰𑒖𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒰𑒣𑒩𑒫𑒰𑒯𑒲 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒕।

𑒅𑒣𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩_"𑒖𑒾-𑒖𑒾 𑒎𑒭𑒡𑒱 𑒏𑒧𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒼𑒑𑒼 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪।"𑒁𑒯𑒰𑓀𑒏 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒥𑒹𑒏𑒰𑒩𑒲,𑒥𑒹𑒑𑒰𑒩𑒲 ,𑒁𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 ,𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯,𑒁𑒢𑒧𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒑 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒔𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒞𑒰𑒩𑒰 𑒯𑒙𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒁𑒕𑒱, 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒨𑒥,𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒂 𑒧𑒹𑒡𑒰𑒫𑒲 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒠𑒱𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒼𑒭 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒰𑒃 𑒣𑒩𑒧 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱।𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒢𑓂𑒞𑒳𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒳𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒂 𑒢𑒫 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒰𑒠𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒩𑒼𑒡 𑒩𑒯𑒞 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒫𑓂𑒩𑒞 𑒪'𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒞𑒨 𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒃,𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒔𑒻𑒢 𑒮𑒿 𑒥𑒻𑒮 𑒮𑒏𑒥।𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒮𑒧𑒨 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒪𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒢 𑒁𑒪𑓂𑒣𑒖𑓂𑒘 𑒁𑒖𑒼𑒑 𑒂 𑒠𑒲𑒢-𑒯𑒲𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒩𑒯𑒨 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒨𑒪।𑒁𑒞𑒋𑒫 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒩𑒞𑒱𑒦𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒩𑒰𑒐𑒻𑒞 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒁𑒡𑒱𑒫𑒹𑒬𑒢'𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒧𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒧𑓂𑒣𑒰 𑒏𑒩𑒥। 𑒖𑒨 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠!

४

𑒖𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰' 𑒡𑒩𑒱, 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒞𑒰' 𑒡𑒩𑒱!



𑒫𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒖𑒲𑒏 𑒙𑒙𑒏𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨 𑒣𑒼𑒟𑒲 " 𑒖𑒿 𑒖𑒑 𑒖𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 " 𑓒𑓐𑓒𑓓 𑒧𑒻𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑓑𑓓𑓒 𑒣◌𑒵𑒭𑓂𑒚𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒠𑒰𑒧 𑓓𑓐𑓐 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒧𑒹 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒋 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒂𑒫𑒩𑒝 𑒏𑒪𑒹𑒫𑒩 𑒖𑒑𑒞 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨-𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑓀𑒏𑒢 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒮𑒖𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪। 𑒒𑒼𑒩 𑒖𑒪 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒩𑒾𑒠𑒲 - 𑒁𑒏𑒰𑒪 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒫𑒮𑒳𑒢𑓂𑒡𑒩𑒰 𑒕𑒯𑒼𑒕𑒲𑒞 𑒠𑒩𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒤𑒰𑒙𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒋 𑒮𑒥 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒂𑒠𑒩𑓂𑒬 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒫𑒱 𑒖𑒲𑒏 𑒍𑒮 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒪𑒏𑓂𑒭 𑒠𑒩𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻𑒢। 𑒫𑒢𑓂𑒠𑒹𑒧𑒰𑒞𑒩𑒧𑓂 𑒧𑒻𑓀 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒠𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒳 𑒁𑒧𑒩𑒱𑒞 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒩𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒅𑒖𑒰𑒑𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒲𑒪 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒳 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰, 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 , 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒞𑒟𑒰 𑒋𑒬𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒮𑒲𑒧𑒢 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒖𑒑𑒞 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒩 𑒮𑒼𑒔𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒖𑒹 𑒂𑒣𑒢𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒹𑒪𑒢𑒱 " 𑒙𑒹𑒧𑒲" 𑒧𑒻𑓀 𑒖𑒹 𑓑𑓙 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒣𑒩 ' 𑒖𑒿 𑒖𑒑 𑒖𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞! ' 𑒬𑒱𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨 ,𑒂𑒥 𑒍 ' 𑒖𑒿 𑒖𑒑 𑒖𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 ' 𑒣𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒪𑒹𑒪 𑒤𑒳𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯! 𑒮𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒃 𑒢𑒫 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒰 𑒁𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒬𑒳 𑒏𑒫𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒖𑒲𑒏𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒰𑓀𑒖𑒪 𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒯𑒱 𑒔𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒹 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒔𑒩𑒰𑒔𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒫𑒰 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒹 𑒫𑒾𑒮𑓂𑒞 𑒠𑒹𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲,𑒣𑒩𑒹𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒮𑒹 𑒖𑒪 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒪𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒣𑓂𑒨𑒱𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒿

अकानल जाए सकैछ। सद्यप्रकाशित ' जँ जगा जल नहि होएत ' पोथीक विषय सूचीमे सम्पूर्ण पाठकेँ चारि भागमे विभक्त कएल गेल छैक। जलक महत्व पहिल भाग छी, जाहिमे तीन गोट कविता मीज्हर अछि। यथा- जँ जगा जल नहि होएत -१, जँ जगा जल नहि होएत -२, आ जँ जगा जल नहि होएत -३। दोसर भाग अछि - जलक स्रोत सभ; एहिमे आठ गोट कविता दे गेल छैक। यथा - जल - स्रोत सभक पर्यायिय,वर्षा - जल, नदी , झील , झरना, इनार - पोखरि - धरती , आ भू-जल , महासागर। तेसर भाग थीक -: जल-संकटक कारण ओ ओकर दुष्प्रभाव, जाहिमे कुल आध दर्जन कविता सजाओल गेल हन्। जेना -: जल संकटक - कारण-१, जल संकटक कारण -२, जल संकटक दुष्प्रभाव -१, जल संकटक दुष्प्रभाव -२, जँ जगा जल नहि बाँचत-१, जँ जगा जल नहि बाँचत- २ ल चारिम भाग थीक -: जल - संकट समाधान। एहिमे तीन गो पाठ सन्निहित छैक,जेनाकि - जल संरक्षण ओ बचत-१, जल संरक्षण ओ बचत-२ आओर उपसंहार।

सबके प्रायः बूझल छन्हि मानव शरीरमे ७०% जल आ ३० प्रतिशत रक्त रहैत छैक। शोणितोके दू भाग भेल छै - लाल रक्तकण आ स्वेत लहू। कदाचित स्वच्छ पेयजल आपूर्ति नहि रहलापर जीवैक लेल अशुद्ध जलो सँ तत्कालीन काज चलाओल जाइछ। जलमे आयरन, आर्सेनिक आ फ्लोराइड तत्वक मात्रा रहला सँ मानव रुग्ण भऽ जाइछ।पीवय योग्य पानिक मीठगर जल आ समुद्री जलके खड़ा पाइन बुझल जाइछ। मेघ पाइन केँ जमाकरैत पीयल आ खेती तथा पशुपालन मेँ खपत कयल जा सकैछ छी। मृदुजल आ कठोर जलके लिटमस पेपर सँ जाँचि परेख सकैत छी। ओना जाहि जल सँ साबुन - अपमार्जक (सर्फ) फेनाएत नै से अलगे पहचानमे अबैछ। कहल गेल छैक - ' जल जीवन थीक'! ऐ विशिष विषयके केन्द्रमे राखि कविता विधा मेँ वृहद मानसिक खोराक ल एकटा पृथक पोथी सोरजव से श्रीमान राज किशोरे बाबु सँ हुअय। आजुक प्रासांगिकता सँ भरल ई पोथी पढ़ैतकाल पाठकके अकक्ष नहीं लागत। ई मनलगू कविता विधाक विविधि रस यथा- वीर, श्रृंगार, हास्य,करुण,रौद्र, भक्ति, विभत्स, अद्भुत, शांत,वत्सल आ भक्तिमे नहियो

रहैत आ बिनु छन्द केर उपन्यासे पाठकके सदृश्य पढ़य लागत तँ एक सुनाहे हाथ सँ छुटत नहि। ताहि सँ ऐ पोथीक पठनीयता'क आभा वुह्वामे हूट आबि जायत। हम खंड काव्य नेत्रदान आ बागवान पढ़ि चुकल छी। मुदा ई जे खंडकाव्य भयानक रसमे रचल गेल अछि से व्यक्तिवादी आ क्षेत्रीयता सँ ऊपर या विश्वव्यापी जे समस्या जल संकट'क अछि, से समाधान ताकैत छई। जटिल समस्याक निदान एहि पृथ्वी पर कोन रूपेँ भेटैत अछि से वर्णन ऐ पोथीमे पाठक पाबि संतुष्ट भऽ सकैछ। ई विषय जल प्रबंधनक तकनीकी'क थीक, तकरा साहित्यिक चासनीमे सराबोर कऽ एक अजगैव प्रयोग सँ पहिल कविवर महोदय कैं साहित्य सेवी श्री दलिप कुमार झा सँ मन्त्रमुग्ध चर भेल रहल। पर्यावरणविद् ई० दिनेश कुमार मिश्र जल पर आधारित मानव जीवन आ विभिन्न नदीक बाढ़ि सँ त्रस्त मानवीय चिन्तनके सोहा आनबाक भागीरथ परियासमे देखाइत रहलाह अछि,जे विभिन्न देश सँ बहैत आबि रहल नदीक अजस्र जलधारा आ एक राज्य वा एक देशमे जल बँटवारा चरि अप्पयियासने छथि। मुदा कविक छवि जे आकार बैत सम्पूर्ण जल आधारित भ' सकैछ से एहि पोथीमे सांगोपांग चर्चा विविध रूपेँ भेल छैक। विश्वमे तीन मिलियन सँ बेसी नदी बहैत छै, जाहिमे भारतोमे दूसय मुख्य नदीमे लगायक जलस्रोत छैक। एक भाग पृथ्वी आ महासमुद्र तीन हिस्सा जल सँ लबालब ऐ ब्रह्मांडमे अछि। तैयो पृथ्वी पर जल संकट उत्पन्न क्षेत्रवार रूपेँ होइत रहैक अछि। भारत वर्षमे सन् २०१९ जूनक अंतमि चरि २२% जल भंडारण क्षमताके अपेक्षा मात्र १२५% भंडारण रहैक। देशमे सव साल करोड़ लोकक समक्ष जल संकट उत्पन्न होइत रहैत अछि। एहन अनुमान कयल गेल छैक जे २०२५ ई० चरि पियजल सधि जाएत! अपना देशमे ८०% जल कृषि काजमे खर्च होइछ।एक किलो धान उपज ल २५ सय लिटर जलक खगता होइछ। हमरे अमलदारीमे सन् १९८९,१९८२ आ १९८७ मेँ भीषण अकाल (रौदी) भेल रहय। पछाति १९८७ मेँ अधिक जलवृष्टि नेपालमे भेला सँ प्रलयकारी बाढ़ि आ १९८८ मे भयंकर भूकम्प ओहिना मोन पड़ैत अछि। जलके कम उपयोग आ पर्याप्त बचाव करक सव मनुष्यक कर्तव्य थीक।

एक बेर गांधी जी प्रयागराज पं० नेहरू जी सँ भेटघांट करबाक लेल एलाह। नेहरू जी भरल लोटा जल चरण पखारने ले दैत पुनः दोसरो लोटा बढ़ा देलनि। कुशलक्षेम क' वार्तालाप मेँ आध लोटा जल सचलापर मोन पड़ैत,बजलथीन पश्चाताप करैत छी ।हमरा सँ जलक अपव्यय भऽ गेल। ताहि प्रसंग नेहरू जी कहलथिन एतय गंगा जीक संगम यमुनाक अछैत छै।ओ संदेश देलथिन कम जलके उपयोग केनाइ सिखाउ। ई देश आजादी काल जलके प्रति स्वयं सजगता आ जागरूकता बढ़ेबाक एक मशिन छलैक। राजकिशोर मिश्र जी जी आंगनि लोक छथि ओ संत विनोबा भावे जीक तरहेँ २०साल आगूक सोचैत छथि। जल संकट सँ मानवीय त्रासदी कोना रोकल जा सकैछ आ पर्यावरण अक्षुण्ण रहत , ताहि लेल अपन आंगन सँ अन्तरयना एहि पोथीमे पाँति गढ़लनि अछि।
यथा-:
नीर जँ नहि हेतै धरा पर,
जिनगी बनि हेइतथि धरती,
कंकर - पाथर ,पाषाण - शैल,
रहैत परसल सकैत, परती।

सुखल पोखरि मे कोना क' उगैत,
सहस्त्रदल पंचमुखी कमल ?
कोनो ने पुड़ैनकि पात कतहु,
ने सेमार, ने जलकुम्भी जमल।

मंगनी मे नहि भेटत पानी,
आब तँ लगत कैया,
बएनो नहि परसत कियो,
देत कियो नहि पैया। उपरोक्त पांतिमे जे ओज आ रोचकता भेटैछ से वर्णनीय अछि। हिनक आरो किछि किछु पाँति एहन भेटलनि अछि -:
वोलगा बहैत अछि रूसमे,

आ' नुस्थीजी, तंजानिआ,
सेवद्र व्राटिनक जीवन- रेखा,
जीव नदीक अछि,तानिआ।

बागमती, कोसी,तँ कतहु कमला बलान,
कतेको नदी पर बहिली - उत्पादनक प्रधान।

महा समुद्र अछि अगाध,अतल,
विस्तृत अछि एकर, जलक संसार,
मुदा जाहि पानि सँ मेटत त्रास नहि,
ओकरा सँ कोन जग- उपकार ?

नहरि - केनाल भेल सभ नाला,
पड़ल प्रदुषण सँ छैक पाला।

पानि ऊघि कते आनत भरिया ?
तवचल, भूकत कुकुर - नढिआ।

सगर सहर कंक्रीट सँ पाटल ,
मांटि देखब भेल दुर्लभ,
बरखा-पानि बहटि क' चलि गेल,
जलभृत जल बनि हतप्रभ।

एहि तरहेँ एक पूर्णकि रूपेँ श्री राज किशोर जीक कविता हलकैत लौकैत रहलनि अछि। कविता विधा मेँ मैथिली सँ पहिल ओ हिन्दी भाषा मेँ अपन रचना गढ़ने छथि। उर्जा संदर्भमे आओर प्रदूषण प्रभृति पोथी एशिया महादेश आ संसार स्तर पर सराहल गेलनि ओ इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स धरि पहुँचयमे हुनक पत्नी जे शुद्ध टंकण कार्य आ विदुषी पुत्री जे प्रकाशनक

काज गतिमान कयलीह से सराहनीय डेग कहल जाएत।आ आब मातृभाषामे (मैथिली) डेगाडेगी चलब सँ आगू दौड़ैत भाषायी प्रवाह दिसि उन्मुक्त होइत जा रहलीह अछि। जे शुभ संकेत छी। पोथीमे नीक कागत लागल छैन,परंच अक्षर शब्द आ वाक्य संयोजन अधिक जगहके अतिक्रमण कयने छैक। ऐ कें पुरापन्ना घोनगार रूपें अँटावेश होयब पर्यावरणीय दृष्टिकोण सँ बचाओ करनाइ निहायत आवश्यक छैक। स्पष्ट अछि जे कागत निर्माणमे गाछ वृक्षक लगादी सरल बांस आ साबे घास आदि संसाधन बोन सँ भेटैछ जे पर्यावरण संतुलन लेल अति अनिवार्य छैक।

५

प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर

मैथिली साहित्यमे राजनीति शास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक साहित्य क' रचना कम देखल जाइत अछि। आजुक परिवेश मेँ एकछाहा नवकविता वा कहि सकैत छी अकविता लिखबाक बाढ़ि आयल छैक। पद्दके बनिस्बत गद्य लेखन काज कम भ' रहलैक हन्। एहि चलनसारिके ढड़ियाबैत आत्मकथा, निबंध, यात्रा प्रसंग, कथा संग्रह आ प्रेरक संस्मरण दिशि उन्मुख रहैत श्री रविन्द्र नारायण मिश्र जी एगारह गोट उपन्यास धरि प्रकाशित कय चुकल छथि।हालहिमे हुनक " बदलि रहल अछि सभ किछु " मैथिली उपन्यास पढ़लीह। जेकर ओ स्वयं लेखक आ प्रकाशक छथि। एहि पोथी मेँ १३२ टा पन्ना अछि। नमिन कागतमे छपल पोथीके सरकारी आईएसबी एन प्राप्त भेल छैक आ २५० टाका दामधरि निर्धारण कयने छथि। १४ अप्रैल २०२२ कें ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०) दिल्ली एनसीआर प्रक्षेत्र सँ छपल एहि पोथीके ओ अपन पितामह स्व० श्रीशरण मिश्र जीके स्मृतिमे समर्पण कयने छथि।पोथीक मादे पाठक कें अपन रचना सभक विषयमे सेहो कहने छथिन जे "ई- पत्रिका विदेह" मेँ नियमित अबैत रहलाह हन्। धरि आवरण रंगीन गत्ताक विषयमे पृथक

સઁ ળનાવ દેઉના,ળે પૌ્ની કાશ્વી દશિસઁ દવ્રાઉ પ૧ ૩કે૧ઉ ગેઉ યતિ્૧ થકિૈનાહિનિક૧ પૂ્૧વ્ર પ્૧કાશતિ ૩પન્યાસ વ્રવિામે યથા-: નમસ્તસ્યૈ,મહ૧ાળ,ઉળકોટ૧,સીમાક શ્રોહપિા૧ , માત્ૃભૂમ િ,સ્વપ્નઉક, શંખ્નાદ, ઢહૈત દેવાઉ,હમ શ્રાવ િ૧હઉ છી,પ્૧ઉયક પ્૧ાત,વતિ િગેઉ સમય, પ્૧ાતવિમ્વિ શ્રાશ્રો૧ સદ્ય:પ્૧કાશતિ નવ્ર ૩પન્યાસ ' વદઉ િ૧હઉ શ્રછ િસજા કછ્િ ' છન્હ િહન્દિી શ્રા શ્રંગ્રેળી મેં સેહો પુસ્તકક ૧યના કતેકો ભેઉ છન્હ, ળે ઈન્ટ૧નેટ પ૧ ૩પઉવ્ધ છૈક। એહિ પાઠકકેં ૧ાળનીત િદઉક નેતાક શ્રાન્ત૧ાકિ યત્ર્ા શ્રા વ્યવહા૧કિ યત્ર્ા૧મે ળે શ્રન્ત૧ છૈ ઈ તેક૧ ઠેહ ભેટૈત યા કુઉ ૩૪ ટા પાઠકે એકેસુ૧મે ગહી૧ શ્રભાવ્િયા કેં૧ સંગ પઢઉ ળા સકૈત છૈ।શ્રોના મૈથલિીમે પાઠકક શ્રાવ શ્રકાઉ શ્રછ િ। તેં પત્ર_ પત્૧કિાક સંગહિ સ્તરીય પોથીક કતિનહિા૧ ઉક શ્રા સંસ્થા કમશમ દેખા૨ છથિ। વહુત પ૧ાપિક્વ્ર પાઠક પોથી સમીક્ષા પઢ િ- ગમ િનવ્ર પોથી કનિમે પ્૧કાશન શ્રા દોકાનય૧ ાપહુઁચૈત છથિ।એખન ૧ાળનીત િળે વહિા૧ક યઉૈત શ્રાછ િસે પુન્ામત: ૧ાળનતિ્ળિ ક' શ્રાગૂ- પાછૂ ઘુમૈત શ્રછ િ।તે મેં સમાળક ઉકકે સમય શ્રા પ૧ાશ્૧મ સેહો ળાશ્ત છૈ।સંતોખક ઉઉ ભેટૈત છન્હ િસં૧૧ક્ષક સં પ્૧ત્યક્ષ વ્રા પ૧ોક્ષ નૂપેં સં૧ક્ષામ।૧હસ્યમય સ્થતિકિ ૧ાળ વનાકય ૩પયોગ કૈ૧ત ળે નાયક કા૧્યક૧્તા શ્રો ઉઠૈત - સમાંગ વનાકય પોસને ૧હૈત ; શ્રપના પાઁછા ટકિૈને ૧હૈત છથિ, સયહ પૈઘૌત વનઉ દેખાઈછ। મુદા ળહનિા ૩દય ભેઉાસન્તા સૂ૧ળો કમત૧ હોઈછ,તહનિા સ્થાપતિ નેતાળી કેં સમયક સઁગ પ૧ાસ્થિતિ ભોગય પડ઼ૈત છૈક। પ્૧સ્તુત ૩પન્યાસક કથ્ય, ભાવ-ભંગમિા ક' નાપ શાવ્યિસ્થ ૩ત્ક૧્ષ ય૧ િપહુઁચઉ છૈક।શ્રાખ્તિ સમકાઉીન ૩પન્યાસકા૧ હેતુક૧ હા ળે "કક૧ા ઉ શ્ર૧ળવ હે !" મેં ક્ષેત્૧ીય નમ્તિતા _પંચકોશી,દક્ષમિાહ। શ્રા ભદૌસક પ્૧યોગ કયને છથિ,શ્રોહઠિામ ૧વ્રન્દ્૧ ના૧ાયમ મશ્ર્િ૧ શ્રુ૧ીછ સ્થાન શક્તપિુ૧મ શ્રા વ્રળિયપુ૧મ સન ભા૧તમે પ્૧યઉતિ દક્ષમિ ઈઉાકાક નામ મુન્દ્૧ય કયઉન િશ્રછ િ।દેહાતી મયટુશ્ર૧-વપટુશ્ર૧ શ્રવોચ વાઉકિા'ક ભ૧ામ- પોષામ શ્રોક૧ મામાળી શ્રપના ગામમે કૈત વો એ ય૧ િપઢવૈત છૈક।એક પ્૧તાપી નેતાળી કેં શ્રો વાઉકિા કે૧ મામૂળી

ओहिठामक अवराजात रहैत छैक। से हुनक गहिकी नजरि अवश्ये पड़ल छलैक,तेँ सुझाव दैत छैक जे एकरा वियाहक चिन्ता एखन नैँय करी। हमरा डेरा पर शहरमे लने अवधीक।ओतय नीक जकाँ ओरियाओन क' संगहि नोकरी धरा देबैन।ओहि सँ कथा-संबंध पैघ घर-वरमे आसान सँ भ' जायत। मुदा हुनका हृदयमे किछ दोहरे भाव उमगैत रहैक।आने किछु लकसन संदीपजी सेहो ओहना गेलाह नेताजीक संग। उपन्यास'क पाठक पढैतकाल आरम्भे मेँ वास्तविक जीनगाकि अनुभव करैत संभवत: स्व० रेलमंत्री ललित नारायण मिश्र जीके बम हत्याकांड आ स्व० प्रधानमंत्री राजीव गांधी जीके मृत्यु बमविस्फोट कांड , मंच परहक दृश्य सँ भयाक्रान्त भ' उठैत होथि।ओना आगू जे दृष्टांत भेटैछ नेताजीक पत्नि महिमाक ' राज्यप्रमुख बनैत घरी स्वत: वास्तविक जीवनमे बिहार'क एक मुख्यमंत्री जीके धर्मपत्नि मोन पड़ैत।जे हो परंच दीर्घ कथा क' विस्तार पबैत ई सामाजिक उपन्यास एक राजनीतिक षढयन्त्र क ' नजारा बड़ जीमकेँ देखबैमे समर्थ भेल छैई।

नवतुरिया लकनीक राजनीतिक दल गठन होइछ-जनक्रांति दल। एहि दलक हम 'शब्द' सँ तात्पर्य अछि- लेखक स्वयं , जे कदाचित लेखकक हृदयमे बसैत अछि। शक्तिनाथ आ संदीप कँ संग पुरैत नारी निकेतन सँ भागा परायल शिल्पा प्रमुख पात्र रहैत छथीन।ओम्हर समग्र विकास दलक राज्यप्रमुख नेताजीक सब तरहेँ चलती रहैत छैन।एक तरहेँ अन्तरराष्ट्रीय तस्करी गिरोह 'क परोक्ष समर्थन रहैत छैन। नारी निकेतनक अपना इच्छा सँ अनैतिक प्रयोग करैत छथि।पाँचटा मूसदम्ड नाजी लैत सदा हरदम अपने छाह जेकाँ काज आबै छैन।सरिया गाममे शिल्पा नहिँ भेटैत छैक मुसकदम्ड सबकेँ।विकिट स्थिति हिलैत जहन आजीवन कारावास भोगय छथि,तँ पत्नीक सहारे पार्टीक तागैत अपने लग राखै छथि।ओहि अपनायी मुसदम्डक दखलंदाजी सँ त्रस्त होइत,हृदय परिवर्तन होय छैन महिमा जीके।आ ओ संदीप सँ जे पहिल पूर्व परिचित कार्यकर्ता नेताजीक रहथि, एसकरे भेंट करय आबि जाई छथिन। ताहि सँ पूर्वहि अपना पद सँ त्याग -पत्र देवाक जनतब मीडिया कँ सेहो द' देने रहै छथीन्ह।आब विपक्षीक तागैत शिल्पाजीक

नेतृत्वकर्ता सँ एतेक बढ़ैत छन्हि जे विजयोत्सव मनाबैत योग्य होइछ।पाँचटा सीट मात्र निर्दलीय उम्मीदवार जीतै छैक,सेहो वएह जे हिनका अपनहि पार्टीक असंतुष्ट टिकिट वंचित कार्यकर्ता छथि।राज शासनक सब प्रत्याशी हारि गेल,कारण दू गुट बनल छलैक आ मतदाता'क बीच सेहो छवि धूमिल भेल रहैक।स्वेत वस्त्रधारी आब गुलाबी परिधान मेँ प्रतिनिधि सभाक बैसारमे आबि अपना जगह पर स्वयं नँय बनि श्री शक्तिनाथ केँ फूलमाला लाबैत राज्य प्रमुख मनोनीत करैत सत्ता सोपलाह। एहि स्वेच्छाचारिता ल समर्थक जनता लोकनि जिन्दाबाद नाराक जयघोष करैत रहल। चुनावी राजनीति समयमे महमिलीक पार्टीक किछु असंतुष्ट नेता आ कार्यकर्ता जे अलग गुट बनाकय पार्टीक प्रतिष्ठा मलीन करैत झटका बैसा देलकैक, ताहि गुटक नामधारी लेखक महोदय नै क' सकलाह।आओर नेताजीक सुभा संख्या सेहो किछु राख्य सकै छलाह। श्री मिश्र जीक उपन्यास लेखन शैलीक हम कायल छी,किछु एहनसन पाँति द्रष्टव्य अछि-:

सरकारी घोषणा सँ जनता बहुत खुश रहय।मासे-मासे पानि बिजलीक बिल नहि देबय पड़ैक। मासमे दू बेर किलोक किलो मंगनीमे राशन भेटि जाइक। सभ अपन-अपन दरबाजा पर तास खेलाए,भोजन करए आ साँझ पड़ितहि सुति रहए । पृष्ठ-११० सँ उद्धृत।

उपन्यासमे दू दलक उपरयढ़ , पुलिसिया कार्रवाई , हवाई जहाज यात्रा , अस्पतालक दृश्य, सीबीआई जाँच , माननीय उच्च अदालत केर निष्कर्ष रोचक लागल।आब २० साल सँ बेसिये राज्य करैत सभै खपि गेलैक।समाजक अनुकूल वातावरण सृजन भेलैक, जाहि सँ बालिका सब डाक्टर, इंजिनियर बनि रहलैक। सर्व जातीय एकता बढ़ल आ सामुहिक भोजमे- उत्सवमे समरसता देखल जाइक। खानपियन सबजाना हृष्ट लागै आ शिक्षाक त्याग सँ हुनक स्वप्न साकार होइत गेलैक।एहि तरहेँ सामाजिक परिवर्तन सतत् साकारात्मक दर्शन बढ़ैत डेग सन बुझाय। सामाजिक सद्भावना सभ जखन-जखन कतौह करथि तँ आखरमि एक नवीन शब्द -चरैवेति - चरैवति अवश्ये शिक्षाजी कहथि।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓒𑓘.𑒪𑒰𑒪𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒢𑒼𑒞𑒏 𑒥𑒛𑓃𑒲! (𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰) 𑒖𑒹𑒯𑒢 𑒩𑒼𑒣𑒥, 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒙𑒥! (𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰)



𑒪𑒰𑒪𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒢𑒼𑒞𑒏 𑒥𑒛𑓃𑒲! (𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰) 𑒖𑒹𑒯𑒢 𑒩𑒼𑒣𑒥, 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒙𑒥! (𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰)

𑓑

𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰 - 𑒢𑒼𑒞𑒏 𑒥𑒛𑓃𑒲!

𑒁𑒢𑒏𑒱𑒞 𑒏𑒻𑓀 𑒢𑒏𑒱𑒞𑒢 𑒕𑒻, 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒕𑒰𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒢𑒼𑒞 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒹 𑒠𑒳𑒣𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒱𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒏𑒹𑒪𑒏! 𑒖𑒯𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒱𑒞𑒪𑒃 𑒞' 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒾𑒯𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒰𑒯𑒙 𑒮𑒳𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒣𑒴𑒥𑒰𑒩𑒱 𑒙𑒼𑒪। 𑒧𑒳𑒢𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒰𑒛𑒏 𑒠𑒴 𑒧𑒯𑒪 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒏𑒲 𑒣𑒩 𑒣𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒍 𑒣𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒅𑒢𑒙𑒁 - 𑒮𑒳𑒢𑒙𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒨 - 𑒥𑒰𑒣 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒖𑒰𑒢𑒻 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒻𑓀 𑒂𑒥 𑒍 𑒮𑒥 𑒏𑒰𑒛𑒏𑒹 𑒡𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲 - 𑒧𑒹𑒖 𑒏' 𑒮𑒹𑒙𑒱𑓀𑒑 𑒥𑒳𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒥𑒩𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞 𑒂𑒮𑒢𑒲 𑒥𑒻𑒮 𑒏𑓄 𑒦𑒩𑒣𑒼𑒭 𑒠𑒯𑒲 𑒔𑒳𑒩𑒰 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒂 𑒛𑒪𑒢𑒰 𑒖𑒐𑒢𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒯𑒳𑒿।𑒮𑒹 𑒯𑒰𑒿 - 𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒱 𑒕𑒰𑒪𑒯𑒲𑒠𑒰𑒩 𑒠𑒯𑒲𑒧𑒹 𑒢𑒼𑒢 𑒠' 𑒠𑒹𑒪𑒏𑓂 𑒞𑒯𑒏𑒱 𑒜𑒹𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒣𑓂𑒣𑒢𑒨𑒩 𑒁𑒪𑒔𑒳𑒏𑒰𑒩𑒱 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒙𑒼𑒪𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒑𑒖𑒲 𑒢𑒹𑒥𑒼 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒻𑒏 ,𑒂𑒥𑒼 𑒖𑒧𑒰𑒃𑒢 𑒋𑒏 𑒔𑒳𑒙𑒏𑒲 𑒂𑒿𑒏𑒱 𑒪𑒱?

૨

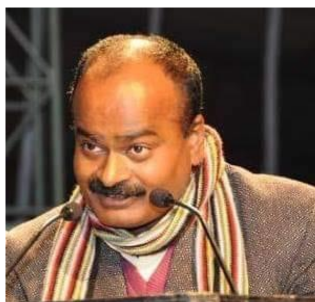
લઘુકથા - ખેહન નોપવ, તેહને કાટવ!

ઉમાકાંત આ મહાકાન્ત અપન વાવુજીક પછાતિ છોટયાસકે મનખ્પ - વટૈયા લગોલાહ વાવૂજી 'ક નયિન પૈઘ જાયક આશ્રમમે રહૈત જેલ્ગનિ સમાજક કડિયાની અન્ત્યેષ્ટિ'ક ખગાહ લગાક કહેમે મેં પૃથક-પૃથક સમુહમે વૈસકઽ નયિાયૈત રહૈક। આ એકટા અલગો વિયાન દેખ્ય સેહો અયનાખમે સવ કયિો રહથિ। યાનૂ જાએ- વહમિ વેનાવેની મુખ્યાગ્નિ દૈ લેલ પ્રસન્નત હોરૂ આનતી આ અછયિાક પનકિ્નમા તિ્નપિખ્યન કયૈત ગેલથિ। લાઉડસ્પીકર સઁ અવાજ દુર-દુર ધનકિ વનિુ ફકાનોક લોક ગૌર સઁ સુનૈ। વાવાજી 'ક સ્મસાન મેં વકિનજી સમદાઉન મંડલિકિ સેહો ખુટાન જેલ રહૈક। સ્વરાર્ગીય જેલાસન્નતા હુનક વ્યક્તિત્વક નેપાલ પ્રકરાઅ કોના કાટરમલિ વોન્દજેલા પર પહાન યાનપ્પેત સઁ હસિક વાઘકે તુના સઁ માનકિ જગૌને રહથિ, વાદમે ખુટમલિમે પ્પૈટ કય પૈતૃક ભૂ-સમ્પત્તિ કેર કોશી વકાશ્ત કેશ ઘોઘરડીહા અંચલ અયકિાની સઁ લઽકઽ પટના હાઈકોર્ટ ધનિ લડ઼લનિ; આદિ ગ્રામનવાદન યરયા માસ્ક સઁ પ્રસાનતિ જેલ રહય। ઉમાકાન્ત આ મહાકાન્ત ભૈવાની જોખ કોના દૂ ગામ વઢકિય હોય લ યનિતિ દેખાએ। ઉમાજી કેઁ સવા દૂ કઠા યતની પરહક પ્પેતપર લક્ષ્મી પંડિત આ ડીહ પરક યનકિડવા યનહર પ્પેતક વેયનામા ખત્રસમિન ટાકા વેમાક યુકતા દેલનિ ઓકર પતિયિૌત જાય ખનક પ્રાખાપતિ સત્ લાએઅ આ જપ્પાની ખી દૂનૂ જાય સેહો એક-એક કટ્ઠા વાડ઼ી એક એક લાખ મોવલગ મેં કવાલ કયેલનિ। અનુખજાય મહાકાંત સેહો એક કડ્ઠા જીડ પૌને તીન લાખ ટકામે એક ગૌઁ મુસલમાન હાથે વડ઼કા કોલામે સઁ દસ્તાવેજ શુલપરાસ ખાકય તામીલ કેલક। આઓર અપના શ્વસુર ખીક રાય સઁ સાઢ઼ે સાત કઠા ઉવખાઊ પ્પેત રામનીત હાથે એવં દછનિવાન વાયક વોરીન વાલ રકવા ૦વ્ગિહ - ૧૭ કટા - ૧૮ ધુર મેં સઁ વાન્હેકાત દશિ સઁ યાન કિઠા વયલ કહામી ખંગાલ આ સુરેશ જૈયા હાથે નગદીમે વેય તઁ દેલક, મુદા મહા ઘોલશ્ચયક્કા કયૈત સભા સજૈતી મૃતભોજક પ્રતતિોય દૂનૂ જાય ઉપસ્થતિ કેલક। ખાતીય મૈનજનક ઉપસ્થતિમિ ગ્રામીતકે વૈસારમે અગ્રાખ જાય વાજૈન - હમના ગામામે ઉન્તની પડ઼લ અછ,િખઁ ૨ દૂનૂ જાએ પ્પોરીશ

𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒞𑒨𑓃 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒁𑒠𑒰𑒨𑓃 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒪𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒨𑓃𑒢𑒲𑒨𑓃 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒼 𑒁𑒮𑒏𑒩𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨 𑒏𑒩𑒥𑒻। 𑒑𑒰𑒧𑒦𑒩𑒰𑒏𑒱 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒐𑒹 𑒠𑒬𑒹 𑒠𑒴𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒯𑒲 𑒔𑒳𑒩𑒰 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒂𑒧 𑒂 𑒣𑒴𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒪𑒹𑒥𑒲 𑒛𑒪𑒢𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒼𑒖 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒠𑒰𑒢 - 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒰 𑒂 𑒫𑒩𑒣𑓂𑒩𑒼𑒮𑓂𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏𑒰𑓀𑒛𑒏𑒹 𑒖𑒑𑒯 𑒒𑒰𑒙 𑒣𑒩 𑒢𑒻 , 𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒔𑒢𑒧𑒰 𑒙𑒰𑓀𑒑𑒰 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣𑒧𑒹 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒩𑒲𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒏𑒹 𑒖𑒪𑒰𑒮𑓂𑒞𑒩𑒲𑒨𑓃 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑓃 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒨𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒻𑒏 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒣𑓂𑒣𑒮𑓂𑒩𑒰𑒔𑒏 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏 - 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒯𑒼𑒠𑒱𑒬𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒩𑒝 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩-𑒥𑒖𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒲𑒢 𑒮𑒯𑒰𑒨𑓃𑒏 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞𑒖𑒲 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒩𑒮𑒱𑒏 𑒪𑒰𑒪 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲,𑒮𑒩𑒫𑒠𑒹𑒫 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰 , 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒰𑒧𑒞 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑒠𑒬𑒩𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒩𑓀𑒦 𑓓𑓐 𑒥𑒩𑒐 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒮𑒿 𑒏𑒨𑓃 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒱 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒮𑒩𑒰𑒨𑒣𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒯𑒨𑓃 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒪 𑒖𑒲 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒨𑓃 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞𑒰𑒄 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒨𑓃𑒰𑒠𑒱 𑒂 𑒏𑒻𑒫𑒩𑓂𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯। 𑒠𑒹𑒮𑒲 𑒋𑒩𑒨𑓃 𑒏𑒻𑒥 𑒕𑓀𑒙𑒨𑓃𑒥𑒰𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒼 𑒮𑒿 𑒏𑒧𑒲𑒮𑒢 𑒂 𑒣𑓀𑒔𑒻𑒞𑒱𑒨𑓃𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒞𑒩𑒣𑒹𑒮𑒏𑒲 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒮𑒳𑒪𑓂𑒏 𑒂𑒮𑒳𑒪𑒻𑒞 𑒨𑓃। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒙𑒙 𑒮𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒮𑒞𑒧𑒰𑒫𑒼𑒩𑓂𑒛 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒻 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒻 𑒂 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒮𑓂𑒣𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒖𑒹 𑒩𑒼𑒣𑒪𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒣𑒾𑒪𑒢𑒱! 𑒮𑒳𑒢𑒻 𑒕𑒱𑒨𑓃𑒻 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒑𑒻𑒞 𑒞𑒹𑒩𑒯𑒰 𑒢𑒻𑒏𑒰𑒜𑓃𑓀𑒑𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒟 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒖𑒹𑒚𑒏𑒰 𑒦𑒰𑒨𑓃 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒱𑒬𑒳𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩𑒹 𑒧𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒬𑒩𑒰𑒥 𑒥𑒹 𑒞𑒪𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒢𑒱𑒦𑒹 𑒏𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒏।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑓃 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒰𑒪𑒱𑒮𑒞𑒰𑒛𑓃𑒫𑒰𑒠𑒱𑒯𑒰𑓐𑒑𑒰𑒧𑒰𑒪𑒱𑓃𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑓙𑓘𑓗ॉ 𑒏𑒻𑒪𑒰𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒮𑒫𑒰𑒏 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒮𑒞



ડૉ કૈલાશ કુમાર મિશ્ર

સવાક કુસુમ કામિની કકરા કે દૂસત

૧
પોથી ચર્ચા
સવાક કુસુમ કામિની (મૈથિલી કવિતા સંગ્રહ)
કવિ: વિનોદ કુમાર ઝા

વિનોદ કુમાર ઝા જે મૈથિલી સાહિત્ય આ સંસ્કૃતિ વિભાગક સઁગ અનેક તરહક સામાજિક સઞ્જાલ પર સરકાર નામે પ્રસિદ્ધ છથિ હિનકર દૂ પોથી (દુનૂ કવિતા સંગ્રહ), 'મહાનગર મે કવિ' આ 'સવાક કુસુમ કામિની' હમરા પઢ઼ેલ છથિ સરકાર વજૈત, લિખૈત કમ છથિ મુદા મૈથિલી સાહિત્ય આ સંસ્કૃતિ હિનુ સદૈવ સાકાંક્ષ રહૈત છથિ મધુબની સઁ કોલકાતા, કોલકાતા સઁ પટના, પટના સઁ દિલ્લી આ અંતતઃ દિલ્લી સઁ મુંબઈ ધરિ' કતહુ સરકાર રહૈત છથિ હિનકા સંગ મૈથિલી સાહિત્ય સઁ જુડ઼લ લોક ઉત્સાહિત રહૈત છથિ દિલ્લીક અનુભવ હમ સ્વયં કેને છી। ઈ નવ-નવ લોક કે સાહિત્ય સૃજન લેલ, સાહિત્ય મે સહયોગ લેલ પ્રેરિત કરૈત છથિ, હિનક સરોકાર પૂર્ણતઃ સાહિત્યિક સાંસ્કૃતિક હોઇત છનિ તાંહિ લોક હિનક બાત કે સમ્માન કરૈત છનિ। જાહિ તરહેં દૂ બેર દિલ્લી આ એક બેર મુંબઈ મે સરકાર 'મૈથિલી લિટરેચર ફેસ્ટિવલ' કેર વિપરીત

𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪𑒞𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒮𑒾𑒏𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱।

𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒖𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒄 𑒏𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒜𑒹𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒯𑒵𑒙𑒠𑒢𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒣𑒼𑒣𑒳𑒪𑒩 𑒟𑒱𑒏𑒰𑒯! 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒏 𑒂𑒡 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒣𑒱 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒫𑒱 𑒦' 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒐𑒻𑒩! 𑒯𑒧 𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒖𑒳𑒩 𑒕𑒲, 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒥𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒯𑒹𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒩𑒯𑒹𑒖 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒕𑒪। 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞-𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒦𑒹𑒪, 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒣𑒜𑓃𑒥, 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒜𑓃𑒥। 𑒮𑒋𑒯 𑒏𑒋𑒪। 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒮𑒿 𑒁𑓀𑒞 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒏𑓂𑒮𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒄 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒧𑒣𑓀𑒟𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒧𑒣𑓀𑒟 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒠𑓂𑒡𑒞𑒰 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒑𑒼𑒔𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒞𑒰𑒩 𑒠𑒴 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒕𑒣𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒨 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒄 𑒋𑒏𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒏𑓂𑒫 𑒦' 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒯𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒦 𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒂 𑒧𑒾𑒐𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒲। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒾𑒐𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒥𑒪 𑒖𑒢𑒩𑒹𑒬𑒢 𑒮𑒿 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒩𑒰𑒐𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒼𑒟𑒲 '𑒮𑒫𑒰𑒏 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲' 𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 १९७० 𑒮𑒿 𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨, 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮, 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒲, 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨, 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩, 𑒮𑓀𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞𑒏

જ્ઞાન રખૈત છથિ। મૈથિલી સંગ સંસ્કૃત, હિંદી સાહિત્ય કેર ગ્રન્થ સબહક મૂલ બાત સ્મરણ છનિ। પૂરા વિશ્વ સંગ ભારત મે કોના માર્ક્સવાદી વિચારધારા એક રાજનૈતિક દલ અથવા સત્તાધારી દલ કેર રૂપ મે બઢ઼લ અછિ, સંકુચિત ભેલ અછિ, સેહો કોના આહૂ મે સ્થાન વિશેષ પર વ્યક્તિ અથવા આરો કુનો કારણે પરિવર્તન આ વિખંડન હોઇત ગેલૈક અછિ તકર એક-એક સૂત્ર હિનકા બુઝલ છનિ। અપન સભ બાત કે રસે-રસે રખૈત છથિ। કથ્ય કહબાક શૈલી મુદા કવિતા છનિ। આઁખ્યા મૈથિલિ અવલોકનકર્તા કેર છનિ:

મૈથિલિ આઁખિસઁ કએલ અવલોકન
દેખલ, ભોગલ, ભીજલ યથાર્થમે
વાસનક અંતિમ ચાઉરક અર્થબોધમે
જનસરોકારક પક્ષધરતામે
વૈચારિક સોચક પ્રતિબદ્ધતામે
જ્ઞાન, વિજ્ઞાન, અધ્યાત્મક સંજ્ઞાનમે
મનુષ્યતાક સાપેક્ષ વિચારધારામે
સંવેદનાકેં દેલ સહજ અભિવ્યક્તિ। (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૫)

વામપંથી વિચારધારાક લોકક ભ્રમજાલ એખન ધરિ નહિયે ટૂટલ છૈક। માર્ક્સ આબ કુનો પાર્ટી, કુનો, દલ, કુનો વિચારધારા, કુનો દેશ સઁ, ભૌગોલિક સીમા સઁ બાન્હલ નહિ છથિ। માર્ક્સ સબ ઠામ સમા ગેલ છથિ। કારણ માર્ક્સ કે અહાઁ ઇંગ્લૈંડ, અમેરિકા, ભારત, જાપાન સબ ઠામ દેખિ સકૈત છી। ભારત કેર સભ દલ આ દલક નેતા અપના ભીતર આ બાહરી આવરણ સંગ માર્ક્સ કે લેને ઘુમૈત છથિ। ગાઁધી કેર વૈષ્ણવ જન સર્વહારા ભ' ગેલ અછિ, ભારતીય જનતા દલક નેતા આ ભારત કેર પ્રધાનમંત્રી નરેન્દ્ર મોદી અપના કે પછિડ઼ા વર્ગક પ્રતિનિધિ કહૈત છથિ, અનાજ સભ લલ ભેટૈત છૈક, ઝુગ્ગી મે લોક આબ એ.સી. લગબૈત અછિ, અન્ન તરકારી કેર નમક જકાઁ માર્ક્સ આ અમ્બેડકર સબ ઠામ ઘુલલ છથિ। ભારતક સંવિધાન કેર અનુચ્છેદ સભ મે માર્ક્સ સમાહિત છથિ। આબ એક સંગ કિછુ ગલત હોઇત છૈક તઁ સબ પાર્ટી લઇન કે છોડ઼ૈત ઓકર વિરોધ કરૈત અછિ। બલ્કિ માર્ક્સ, અમ્બેડકર, બુદ્ધ કેર નામ પર કિછુ લોક

दोकान सेहो चला रहल छथि। तिरुपति देवस्थानम केर कार्यकारिणी सर्व सम्मति सँ हरिजन पंडित केर नियुक्ति कैल छथि। उलटे सुबालतेरन, महिला आदि विषय पर जतय कुनो कारण सँ मार्क्स मौन छलाह ततय लोक काज क रहल छथि। मार्क्स संग कोना सोवियत संघ धोखा केलक आ अमेरिका सँ युद्धक शस्त्र बनबाक होड़ मे लागल, कोना शीत युद्ध मे विश्व के ठुसेने अछि से सभ जनैत छी; कहेन कम्युनिस्ट अछि चीन के तकर वर्त्तमान की करी, के नहि जनैत अछि? अर्थ ई जे भ' गेल मार्क्सवाद एक दल, एक विचारधारा केर रूप मे यूटोपिया। मुदा मार्क्स केर बात तँ लोक मानिये रहल अछि क्रियाकलाप मे, व्यवहार मे, लोकोपकारी योजना मे। विज्ञान आब बहुत अर्थ मे सभक भेल जा रहल अछि। मोबाइल, सामाजिक संजाल, वोट सब किछु आनि रहल अछि वास्तविक मार्क्सवाद। मीडिया, धर्म, सामाजिक कार्य, शिक्षाक संस्थान, सब ठाम त घुसल अछि मार्क्सवाद। मुदा विनोद जी अपन सवाक कुसुम कामिनी के ताकि रहल छथि अनेक ठाम:

सवाक छथि हमर कुसुम कामिनी
धरती पर स्वर्ग-सुन्दरी उर्वशीकेँ
सापेक्षता आ निरपेक्षताक इजोतमे
आइंस्टीन आ वेदक दर्शनसं कएल निरूपण
कुण्डलिनी-चक्रक शक्ति सर्पिणी
जलवीक रसमे, पसेनाक मधुर चासनी
मार्क्सक साम्यवाद रूप-भूगोल बदलैत बनल
भारतीय संस्करण समाजवादी लोकतंत्र
लिप्खिव वेधप अलअक्सा, कालिदासक मेघ
तलवानी सोचक ऐतिहासिक दृष्टिकोण। (पृष्ठ संख्या ६)

कवि अपन बात कहि रहल छथि। सोच कोना प्रस्फुटित भ' रहल छनि तकर पृष्ठभूमि बना रहल छथि। कोना सब ठाम साम्यवाद ताकि रहल छथि तकर उद्धरण द' रहल छथि। ई बता रहल छथि जे कोना महानगर मे रहैत, कोलाहल सुनैत ई अतीत दिस जा रहल छथि। कोना अनुभव जे बहुत छनि से संक्षिप्त

વનિ પસરિ રહલ છનિ। હિનકર એક-એક અવલોકન કે સમૂહક પ્રતિનિધિ ઓહિના વુઝ્ઝ સકૈત છી જેના પકૈત ભાતક વર્તન સઁ અંતિમ ચારિ દાના ચાઉર દેખિ લોક વૂઝિ જાઇત અછિ જે સભ ભાત પાકિ ગેલ। ઈ વાત હમ નહિ, સરકાર કહૈત છથિ।

એતેક અવશ્ય અછિ જે હિનક ભાષા સહજ, સોઝ આ વોધગમ્ય છનિ:
હમર ભાષા, શિલ્પ, શૈલી
વેઢંગ, વેછપ, વનિ માત્ર રંદા
કમ્મે ભેટત અકાદમિક કલાકારીક શવ્દજાલ
કૈચ-સ્ચેજ વા સ્લૈસી લગિ
આ ને રહસ્યક ચમત્કારિક વન-લાઇનર
આ ને અલંકાર-શ્રૃંગારક કોનો ઉત્કર્ષ। (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૬)
ભલે કમ લખૈત છથિ, સ્ટેજ સઁ દૂર રહૈત છથિ મુદા સાહિત્ય લેખન મે જે કષ્ય ભ’ રહલ અછિ તાહિ લલ હિનકર ચિતા દેખિ સકૈત છી:
ખોજમે લાગલ છી જે
કમ ભ’ રહલ અછિ સાહિત્યિક ગુણવત્તા
વા વહુત તેજીસં વદલિ રહલ અછિ
ગુણવત્તાક પ્રતિમાનક ચારણા।- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૭)

’સવાક કુસુમ કામિની’ નામક એક કવિતા એહિ સંગ્રહ મે છૈક જકરા નામપર એહિ સંગ્રહક નામકરણ કએલ ગેલ છૈક।
કવિક માર્ક્સવાદ આ સામ્યવાદ સદૈવ જાગ્રત રહૈત છનિ। ઈ ભગવાન સઁ પૈઘ મનુખ કે માનૈત છથિ કારણ મનુખે તઁ નિર્માણ કરૈત અછિ સ્થૂલ અથવા સૂક્ષ્મ દેવતાક। એતેર ઈ કહૈત છથિ દુનૂ એકે અછિ મનુખ આ ભગવાન :
મનુક્ખેક વનાઓલ મનુક્ખ આ ભગવાન દુનૂ
કે પૈઘ આ કે છોટ
કે નીક આ કે વેજાએ
કે સહી આ કે ગલત
હમ માનૈત છી

एकहि अछि मनुक्ख आ भगवान- (पृष्ठ संख्या २४)

जीवन, प्रकृति आ परिवेश सँ कवि बिम्ब लैत छथि। बिम्ब विज्ञान , योग, तंत्र, प्रेम, कर्म सँ मुक्त भेल अबैत अछि बाढ़नि , तुलसी चौड़ा, चुट्टी, जिलेबी, छल्ला, आदि हिनिकर बिम्ब बनैत छनि। जिलेबी चाहे ग्राहक हो अथवा रस सँ बोरल गाम चुल्हा पाक हो, अपन भव्य उपस्थिति, भाव आ बिम्ब बनैत अछि। जिलेबी कविता ई कथ्य कहय मे सशक्त रहल अछि जे मनुक्ख के जिलेबी सँ ई सिखक चाहि जे जिलेबी ग्राहक काँटक पीड़ा सहबाक गुण विकसित भेलाक बादे कहियो जिलेबी जकाँ मीठ भ' सकैत अछि। चुल्हा बल गाम जिलेबी के बाटे मे सरकार केर कहब छनि जे गाम चुल्हा के पाछू बैसल हलुआर, इंजेक्शन सँ नहि, अपन चुबैत घाम सँ जिलेबी मे मिठास भरैत अछि!

जिलेबी ग्राहक विकट काँटक पीड़ा
सहबाक कौशल कर' पड़ैछ जाग्रत
गाम चूल्हाक पाछू बैसल हलुआर
इंजेक्शनसँ नहि
अपन चुवैत घामसँ
भरैत अछि चासनीक मिठास जिलेबीमे
पंचकर्मक बादे अबैछ जीवनमे मिठास ! (पृष्ठ संख्या ४२)

परिश्रमक मधुर सुआद केर कतेक नीक प्रमाण छनि जिलेबी कविता। कविता केर नामकरण तहिना बेछप! शेष अन्य पाठक स्वतः निकालि सकैत छथि।

आगर बिम्ब देखक हो तँ 'हाथ' कविता अवश्य पढ़ी। बेर-बेर पढ़ी। कविता स्वतः प्रमाणित अछि। अन्य अपने आप स्पष्ट होइत जाइत छैक। किछु अंश देखल जाए:
छेनी-हथौड़ी वा बुलडोजर
नहि तोड़ैत अछि पहाड़-पाथर

तोड़ैत अछि ओकरा चलवयवला हाथ
दशरथ माँझीक हाथ तोड़ने छल पहाड़
आ बनौने रहय सरल-सुगम रस्ता
हाथ लिखने अछि वेद-पुराण, संविधान
जखन आदिम मनुष्यक हाथमे अएलैक हाथ
अपन अस्तित्व बचाबक लेल
मशीनक लागल हाथ विकास आ विज्ञान संग
करय लागल आविष्कार आ चमत्कार
श्रमसँ बनल हाथ कएलक अथक परिश्रम
बनौलक अट्टालिका, रेल, पुल, जहाज
आ प्रजातंत्रक लेल विनाशकारी हथियार
आ हाथो-हाथ उठा लेलक
पृथ्वीकेँ अपना हाथपर- (पृष्ठ संख्या ४८)

अन्य स्पष्ट अछि, कविता मे हाथ मानवीय सोच संग चलक चाहि, साकारात्मक रहक चाहि, अपन ज्ञान, सम्पदा, सोच सँ समाज कल्याण करक चाहि, तकर शंखनाद क' रहल अछि। कवि कहय चाहैत छथि, अगर सोच ठीक हो तँ पद्मश्री दशरथ माँझी अपन हाथ मे [illegible] लए पहाड़ के काटि सकैत छथि, अम्बेडकर सर्वसोची भ' सकैत छथि - केवल मनुष्य केर भीतर जे राक्षसी प्रवृत्ति अछि तकरा बाहर करबाक दरकार छैक।

विनोद जीक बिम्ब आ ओकरा संग सन्देश देखय चाहैत छी तँ 'बाढ़नि' कविता अवश्य पढ़ी। बाढ़नि कतेक उपयोगी अछि तथापि वृद्ध जाइत अछि अछोप, निकृष्ट, राखल जाइत अछि बाहरा कविक लेखनी सजग भ' गेल अछि:
हम बाढ़नि
अछूत, अस्पृश्य
राखल जेल अन्हारमे, कोनमे, शीतमे, बरखामे

धूरामे, गर्दामे, कूड़ामे, कचड़ामे
भद्र लोकक परिदृश्यसँ बारल
कोनो उत्सव, शुभकाजसँ दूर
घरक कोनो कोनमे पड़ल रहबाक लेल विवश- (पृष्ठ संख्या २८)

बाढ़नि बिम्ब संग कवि अपन इच्छा कोना व्यक्त करैत छथि तकर उदाहरण उल्लेखनीय अछि। बाढ़नि टूटि गेल छैक, तार-तार भेल छैक, लोक फेकबा लेल तैयार अछि, मुदा ओहि सँ पहिने ओकर अभिलाषा गज्जब:

हमर हड़ल फूलक
एक-एकटा काठीक अछि इच्छा
फेकबासँ पूर्व
मनुक्खक संकुचित विचारकेँ
पसरल व्यभिचार, भ्रष्टाचारकेँ
अन्धविश्वासक जमीनकेँ
साफ-सूथड़ा क' सजा दैत
स्वच्छ, संवेदनशील, सजग समाज!- (पृष्ठ संख्या ३०)

एहि कविता केर निचोड़ छैक जे बाढ़नि सँ सर्व समावेशी समाजक कल्पना कवि करैत छथि, बाढ़नि मे प्रगतिशीलता देखैत छथि:

हम सर्वसेवी प्रगतिशील बाढ़नि
आगू बढ़ैत काज करब
नेत आ नियति दुनू।- (पृष्ठ संख्या ३०)

कवि मुदा सब बिम्ब सँ आ सब कविता सँ साम्यवाद तकैत छथि। ओकर परिधि सँ जेना बाहर नहि जेताह से सपथ खा लेने होथि। 'गमछा' कविता अनेक तह

ઘોષૈત અછિ વદલૈત પરિવેશ મે નામ પરિવર્તન, રાજનૈતિક સાંસ્કૃતિક સ્વભાવ, ગમછાક સમયક સંગ વદલૈત નામ, સ્વરુપ, ગમછાક ઇતિહાસ સભ કિછુ વતવૈત સામ્યવાદી વિચાર જેના દરબજ્જા પર ઠક-ઠક કરૈત હો!

પુરાતગામી, તુર્કીસઁ અનલની તૌલિયા
હમરા દુનૂમે વુનિયાદી અન્તર
હમ વર્ગહીન, ગમાર, સર્વહારા
ઓ પૂઁજીવાદી, અભિજાત્યક વ્યવસ્થા
દુનૂક વીચ કતેકો દિનસઁ
ચલિ આબિ રહલ વર્ગ-સંઘર્ષ
આધુનિકતાક સુનામી હેલૈત
ફૈશન ટ્રેંડકેં ચકચિવૈત
વાસમે, અપવિાસમે
આઁચર, ઓઢ઼ની, સ્ટૉલ, તુમાલ, કમ્બનમે
જન-સરોકાર લેલ અપન સ્થાનપર
અડિગ, સુરક્ષિત છી હમ અંગપોછા- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૩૬)

વહુત લોકક માનવ છનિ, જાહિ મે હમ સેહો છી, જે આઇ હમ સભ પોથી લિખૈત છી મુદા પઢ઼ૈત નહિ છી। પઢ઼િતો છી તઁ પોથી કેર ચયન દિસિ સાકાંક્ષ નહિ રહૈત છી। અહિ વિષય પર વિનોદ જી અપન 'પોથી' કવિતા મે લિખૈત છથિ:

હમસભ સંસ્કારતિ છી પઢ઼વાક લેલ
કમોવેસ ગમ્ભીર રોમાંસ કરી પોથીક સંગ
મુદા ચાહી પોથી-ચુનાવક વિવેક- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૩૮)

પોથી ચુનાવ આ પઢ઼વાક વાત કહૈત છથિ આ સ્વયં ઓકર પાલન સેહો કરૈત છથિ। અર્થ ઈ ભેલ જે હિનક કથની આ કરની મે અંતર નહિ છનિ। તકર પ્રમાણ હિનક ચુટ્ટી ન્યૂટનક સેવ, ન્યૂટનક ગતિક નિયમ, કાલિદાસક મેઘ, યૂટોપિયા, કાર્લ માર્ક્સ આ સમાજવાદી સન કવિતા મે પોરે-પોર ભેટત। ચુટ્ટી કવિતા મે મજદૂરક તુલના ચુટ્ટી સઁ ભેલ અછિ। કહલ ગેલ અછિ જે સશ્રિષ્ઠ રાની

𑒔𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒢𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒞𑒰 𑒬𑒹𑒭 𑒔𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒳𑒢𑒼 𑒅𑒔𑒰𑒥𑒔 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒐𑒙𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒪𑒹𑒪। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩 𑒐𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪, 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒪𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩 𑒏𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏! 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒨𑒏? 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿
𑒥𑒳𑒗𑒥𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒢𑒣𑒳𑓀𑒮𑒏
𑒣𑒯𑒱𑒢𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒩𑒥𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧𑒲𑒮𑒿 𑒂𑒖𑒰𑒠 !- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓕𑓒)

𑒣𑒩𑒠𑒹𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒴𑒜𑓃 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒰𑒣 𑒏𑒹 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒮। 𑒃𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒙𑒏-𑒙𑒏 𑒞𑒰𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒙 – 𑒦’ 𑒖𑒰𑒨 𑒦𑒹𑒙 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫। 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒂 𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒏𑒳𑒢𑒼 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 ’𑒏𑒹𑒥𑒰𑒛𑓃’ 𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩:

𑒖𑒐𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒕 𑒞𑒰𑒪𑒰
𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒞 𑒙𑒏𑒙𑒏𑒲 𑒪𑒑𑒾𑒢𑒹
𑒁𑒥𑒻𑒞-𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒋𑒏-𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿
𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒴𑒜𑓃 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒣 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒤𑒰𑒛𑓃𑒱
𑒞𑒰𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒞 𑒥𑒰𑒙
𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒠𑒹𑒮𑒲 𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰𑒏- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓖𑓒)

’𑒮𑒫𑒰𑒏 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲’ 𑒏𑒹𑒩 𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒂𑒃𑓀𑒮𑓂𑒙𑒲𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒞 𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒫𑒱 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:

𑒡𑒩𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰𑓀𑒛 𑒡𑒩𑒱
𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒁𑒢𑓀𑒞 𑒡𑒩𑒱
𑒕𑒟𑒱 𑒋𑒐𑒢𑒼
𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰 𑒂 𑒢𑒱𑒩𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰𑒏
𑒥𑒢𑒪 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒫𑒹𑒏𑓂𑒭𑒏
𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱

હમર સવ઼ાક કુસુમ કામિની- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૭૫)
સામ્યવ઼ાદી વ઼િચારધારાક કેર વહુત લોક એહેન છથિ જનિકા આસ્થા જૂપ્પ, અછૂત આદિક દર્દ દેખાઇત છનિ, નહિ જેટલ તઁ કલ્પના ક' સૈત છથિ। વ઼િનોદ જીક અનેક કવ઼િતા જેના 'જૂપ્પ' એહિ અવધારણાક કેર પ્રમાણ અછિ। જતય આવ઼શ્યકતા સઁ અધિક હોઇક, જતય કેર પૉપુલર સરકાર સ્કૂલ કેર નેના કે મુશ્કિલ ભોજન દૈત હોઇક, જતય કોરોના કાલ મે આ એખનો મુશ્કિલ અનાજ પાઈ ઘરે-ઘરે જેરૈટ હોઇક, જતય સંવ઼િધાન મે પ્રત્યક્ષ રૂપ સઁ સામ્યવ઼ાદી વાત સમાહિત હોઇક આ જકરા સભ દલ, સમુદાય વ઼િચારધારાક સમ્માન કરૈત હોઇક, જતય એક આદિવ઼ાસી મહિલા રાષ્ટ્રપતિ કેર સુદૂર જાહિ સમિરહા મે જાતક વનિ મરલ હોઇક આ સમસ્ત દેશ મે વાત ધંગલ કેર આગિ જકાઁ પસરિ ગેલ હોઇક, તતય ઈ વાત સભ આઉટ ઑફ કૉન્ટેક્સ્ટ બુઝના જાઇત છૈક। આબ લોક મહિલા ઉત્થાન સંગ સભ અલ્ટરન પર ગમ્ભીર ભેલ અછિ। દલિત ઉત્થાન આ નવ઼ બૌદ્ધ વ઼િચારધારાક દિન-દિન ક' રહલ અછિ, ફેર કહેન તાન? તાહિ સમય લૌન અછિ જેના કવ઼િ ૧૯૮૦ કેર અન્તિમ કક્ષા મે સુતિ રહલ હોથિ આ એખને જાગલ છથિ। ઇતિહાસ કે વ઼ર્તમાન મે દેખબ કેર કલા મે ઓહુના વામપંથી માહિર હોઇત છથિ। ઈ મહારથ વ઼િનોદ જી કે સેહો છનિ।

નિષ્ઠુરક સેવ઼ કવ઼િતા એક ઠામ તઁ પ્રાચીન ભારતીય જ્ઞાન કેર મહિમા મંડિત કરૈત અછિ તઁ દોસર દિસ વ઼િદ્વ઼ાન લોકનિ મે જે સોચક ઉભાર્યવૃત્તા છન્હિ તાહિ પર તંજ કસૈત અછિ:
"લટકલ વૃદ્ધચોલીવ઼ાક અનુલોમ-વ઼િલોમમે
નચિયાઁ-ઊપર ક' રહલ અછિ
નિષ્ઠુરક સેવ઼ા" (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૮૩)

"તાલિવાની સોચ" કવ઼િતા એક દિસ ધાર્મિક ઉન્માદ કેર વ઼િરોધ કરૈત અછિ ત' દોસર દિસ પુરુષ સઁ મહિલા કોના પ્રભાવ઼િત હોઇત છથિ તકર વૈશ્વ઼િક આ કાલ ખણ્ડ સઁ ઇતર વાત પ્રેષિત કરૈત છૈક:

"युद्धक समय आ रूप जे कोनो हो आन्तरिक हो वा दू चारि दिशक बीच
माटिक बाद समाजसँ बेसी रौदल गेल
बर्बरताक मारल महिला
जँ रौदल नहियो गेल
तखनो बचिया, बेसहारा रहबे करत" (पृष्ठ संख्या ९६)

"कालिदासक मेघ" पढैत काल नीक लागल। जेना जेना बाबा यात्री "कालिदास सच सच बतलाना" केर पाठ र संग आबि गेल छथि। मुदा विनोद जी सौन्दर्य बोधक वर्णन गम्भीरी आ बहुत बात सब कहैत छथि। मेघ सँ पारिस्थितिकी केर चिन्ता, मनुष्य द्वारे प्रकृति दोहन आ नाना तरहक प्रश्न एक्सटेंशन मे कहैत छथि, यात्रीक प्रश्न ओहिना छनि:
"नौदशिआयल चनरी, श्वटल दामाड़ि
आब कोना चलत हर, कोदारि
हकन्न नोर कानि रहल बनिहार
बीचामे आब लागल कीड़ा-घुन
अन्नपूर्णा कोना हेतीह अवतरित
जन-बोनिहारक छनि गेल रोजी-रोटी
अहिपर निर्भर ओकर चूल्हा-चक्की
कोना भरत सन्तानक भूखल पेट
ओहो मन्मथ ज' कानि रहल अछि मेघ" (पृष्ठ संख्या ११९)

कवि सम्पूर्ण वातावरण , पर्यावरण लेल चिन्तित छथि आ मेघदूत जकाँ आधुनिक स्थिति केर नजारा प्रस्तुत करैत छथि:

"पियासल जीव-जन्तुक उदास आँखि
गाछ-बिरिछ, खड़-खड़ पात

सुखाएल झरना, पोखरि-इनार
क्षीणकाय नदी, उमकल धार
कोना भेटतैक पुण्य गंगाजल
कोना हेतैक सागर संग मधुर-मिलन
एहि बेर कहैत पातर उमकल नदी" (पृष्ठ संख्या ११८)

से जे हो, बहुत दिनक बाद एहेन कविताक पोथी पढ़ल अछि जकरा पढ़ला सँ आनन्दक अनुभव भेल। भेल, साहित्य पढ़ि रहल छी। भेल, साहित्यकार स्वयं गहन अध्ययन केने छथि, भेल, साहित्यकार स्पष्टवक्ता छथि। अगर अहाँ स्पष्टवक्ता छी तँ बात कुनो बाद प्रतिवाद केर कतु, बात गम्भीर हएत, प्रमाणिक हएत।

अपन बातक कथ्य हम पुनः विनोद कुमार झाक शब्द सँ कहैत छी जे पोथी के पाठक लेल सार्थक बनबैत अछि:
"हम रहि वा नहि रहि
मुदा कविता हमर बाजत, करत संवाद
सहेजति' राखब हमर कविता।" (पृष्ठ संख्या ७)

सवाक कुसुम कामिनी (मैथिली कविता संग्रह)
कवी: विनोद कुमार झा
मूल्य: २००
नवारम्भ: मधुबनी
प्रथम संस्करण: २०२३

२
ककरा के दूसत

𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 - 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳

𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 -𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒮𑒞। 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒢𑒹 𑒥𑒹𑒕𑒣 𑒕𑒻𑒏। 𑒄 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒝 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒐𑒱𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒄 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒖𑒴𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒖𑒑𑒞 𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒠𑒻𑒫 𑒁𑒫𑒪𑒼𑒏𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱, 𑒢𑒲𑒏, 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯, 𑒞𑒏𑒩 𑒞𑓂𑒫𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒹𑒭𑒝 𑒣𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒄 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒚𑒢, 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢, 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏𑒰𑒪𑒨, 𑒂𑒠𑒱 𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒕𑒢𑒱, 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒯𑒧𑒞𑒱, 𑒁𑒮𑒯𑒧𑒞𑒱, 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒕𑒢𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 (𑒣𑒠𑓂𑒨) 𑒧𑒹 𑒄 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰, 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩, 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒂 𑒏𑒞𑒾-𑒏𑒞𑒾 𑒁𑒐𑒰𑒝𑓂𑒛 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞, 𑒦𑒰𑒫 𑒂 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒯𑒼𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒕𑒰𑒣 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒞𑒲𑒯, 𑒞𑒹𑒢𑒰 - 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒚𑒼𑒮 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒞𑒢𑒱, 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑓂𑒞 𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒦𑒹𑒙𑒞। 𑒮𑒹 𑒏𑒐𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒞? 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒦𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒥, 𑒧𑒢𑒢 𑒏𑒩𑒥। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒄 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒰𑒧, 𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒲, 𑒄 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒤𑒪𑒰𑓀-𑒤𑒪𑒰𑓀 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒹 𑒯𑒹𑒞𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹 𑒁𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒮𑒼𑒔 𑒮𑓀 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒼𑒔 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒣𑒜𑓃𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞। 𑒧𑒡𑒳 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒞𑒰𑒪𑒰𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱 - 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒮𑒿 , 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒮𑒿, 𑒣𑒞𑒱◌𑒵𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒿 !

𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒧𑒹 𑒏𑒳𑒪 𑓕𑓔 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒍𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒄 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒦’ 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒢𑒹 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒤𑒳𑒙𑒱𑒞 𑒦’ 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏।

'अग्निगामिनी' कविता मे जखन एक माय अपन सासुर बसैत बेटी सँ अपन पुतहु केर प्रशंसा करैत बेटाक बारे मे ई कहैत छथि जे बेटा सेहो माय दसि कम आ पत्नी दसि अधिक रहैत अछि तँ मधुक उत्तर समाज मे दहेज प्रथा केर प्रचलन आ बेटा आ बेटी मे अंतर पर प्रहार व्यंग्य रूपेँ करैत छनि:

"से हम कहलियनि - की करबे माय
जौजीकेँ बाबू देने छथि दूधक मोल चुकाय
सेर अनका सम्पत्तियो लेने की
बकियल बेटा पर कर्षोजे की
बक्री-बट्टामे केहन हाय दैया
दहेजक बोटल गानू रुपैया
जुनि विवाद आब करू हे मैया
तेँ अनुगामी बनल छथि जैया (पृष्ठ संख्या १४)

बेटी आ नारीक स्थिति पर चिन्तित छथि साहित्यकार। सोनोग्राफी आ मेडिकल तंत्र संग कोना लोक डॉक्टर सँ मिलि एक दसि भ्रूण हत्या करैत छथि आ दोसर दसि दुर्गा पूजा आ अन्य उत्सव पर कन्या पूजन करैत छथि, ताहि पर सोझे कठोर प्रहार करैत छथि। ओना एहि विषय पर कतेक स्त्री आ पुरुष साहित्यकार कलम उठौने छथि मुदा मुन्नी मधु केर कहबाक तेवर आ बिम्ब बेछप छनि।
'गर्भमे माय' कविता केर किछु अंश देखल सकैत छी आ अनुभव क' सकैत छी:
एहि बीच नवरात्रि आबि गेल
कन्या-पूजनमे सभ अग्रसर भेल
मुदा कक्का करैत छथि दोसरे तैयारी
नहि जनमय देथिन बेटी सन बेमारी

𑒮𑒼𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒠' 𑒋𑒪𑒐𑒢𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒖𑒲
𑒂𑒪 𑒥𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒮𑒻𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿-(𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓑𑓕)

𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣 𑒣𑒩 𑒏𑒢𑒹 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒨 - 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒪𑒪 '𑒥𑒹𑒧𑒰𑒢𑒲', 𑒖𑒹 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒦𑓂𑒩𑒴𑒝 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 '𑒂𑒪 𑒥𑒪 𑒏𑒮𑒻𑒨𑒰' 𑒂 𑒁𑓀𑒞𑒞𑓁 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒹 '𑒮𑒼𑒣𑒰𑒢𑒲' 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒑𑒞𑒱 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒒𑒵𑒝𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 ! 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒯𑒖𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒠𑒧𑓂𑒦 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 ! 𑒁𑒞𑒨 𑒩𑒳𑒏𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒕𑒟𑒱! 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒂𑒑𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒻𑒞 𑒪𑒏, 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒹 𑒠𑒳𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:
𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒩𑒱
𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏-𑒣𑒴𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲
𑒦𑒰𑒫𑒲 𑒧𑒰𑒃𑒏
𑒦𑓂𑒩𑒴𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒏'
𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒯𑓀𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒻 𑒕𑒲।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓑𑓖)

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒩𑒼𑒧𑒰𑓀𑒙𑒱𑒏𑓂𑒮 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 "𑒁𑓀𑒞𑒩" 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒹,𑒖𑒹 𑒯𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒕𑒢𑒱:
𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒩𑒥
𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧𑒲 𑒢𑒯𑒱
𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒥
𑒬𑒼𑒭𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱
𑒁𑒩𑓂𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒑𑒱𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒥
𑒐𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒢𑒯𑒱
𑒮𑒯𑒔𑒩𑒲 𑒩𑒯𑒥
𑒁𑒢𑒳𑒔𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱

𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒥
𑒢𑒾𑒩𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱
𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒥
𑒁𑓀𑒡𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱
𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢
𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒁𑒕𑒱
𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒢𑒥
𑒧𑒬𑒲𑒢 𑒢𑒯𑒱।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 १८)

𑒂𑒥 𑒨𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒩𑓂𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦 𑒏𑒹 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒃𑒛𑒪𑒰𑒃𑒢𑓂𑒮 𑒏𑒹𑒩 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒒𑒩-𑒒𑒩 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒱 𑒠𑒲। 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒏𑒹𑒩 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒲 𑒯𑒼 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒹𑒩 𑒏𑒼𑒛𑒑𑒱 𑒕𑒻𑒏 𑒃 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒣𑒩𑒱𑒦𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒹 𑒔𑒹𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒿 𑒖𑒑𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।
𑒅𑒣𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞 𑒥𑒰𑒞 𑒂 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒛𑒹𑒑 𑒂𑒑𑒰 𑒪' 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 '𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒙𑓀𑒙𑒰', 𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒫𑒡𑒰𑒩𑒝𑒰 𑒣𑒩, 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒣𑒩, 𑒢𑒲𑒞𑒱-𑒁𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒣𑒩, 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒪𑒋 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒣𑒩:

𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒲,
𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒰𑒨𑒾𑒏 𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒴
𑒏𑒢𑓂𑒨𑒹𑒠𑒰𑒢 𑒙𑒰 𑒣𑒩 𑒏𑒨𑒱𑒏 𑒖𑒼𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒋 !- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 २४)

𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒹𑒩𑒼 𑒏𑒩𑓂𑒏𑒮 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒠𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:
𑒥𑒹𑒙𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒜𑒱 𑒕𑒴𑒙𑒨 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒋
𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒩𑒹 𑒐𑒹𑒞 𑒥𑒹𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒲

𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒂𑒪𑒰𑒥𑒪𑒰,
𑒏𑒮𑒻𑒨𑒰 𑒪𑒑 𑒠𑒾𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒲
𑒕𑒲 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒪𑒱𑓀𑒑𑒦𑒹𑒠𑒮𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒮𑒱𑒞
𑒯𑒴𑒛𑒹 𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒙𑓀𑒙𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓒𑓔)

𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒏𑒩 𑒁𑒪𑒑 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲 ! 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒮𑒿 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒣𑒞𑒱 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩, 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱:
𑒯𑒹 𑒨𑒾 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒣𑒴𑒕𑒻 𑒕𑒲
𑒏𑒲 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝 𑒯𑒹𑒞𑒳
𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲
𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿, 𑒂𑓀𑒑𑒲-𑒢𑒴𑒂𑒙𑒰𑒧𑒹
𑒞𑒱𑒪𑒰𑓀𑒖𑒪𑒱 𑒠𑒱𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒼𑒑𑒰𑒩 𑒞𑒰𑒏𑒻 𑒕𑒲 !- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓒𑓔)
𑒋𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒄 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱, 𑒠𑒹𑒬, 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒂 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒯𑒼𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒩𑒹𑒐𑒰 𑒐𑒲𑒔 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒤𑒴𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒐𑒱𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼, 𑒂𑒬𑒰, 𑒢𑒫 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒤𑒛𑓃𑒤𑒛𑓃𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒢𑒫𑒖𑒰𑒑𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒩 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒧𑒫𑒹𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒫𑒹𑒠 𑒣𑒰𑒚 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒯𑒳𑓀𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒐𑒱𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼! 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒝𑒰 𑒪𑒞 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒼𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒤𑒰𑒅𑓀𑒛𑒹𑒬𑒢 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦’ 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼!

𑒯𑒧 𑒑𑒰𑒩𑓂𑒑𑒲-𑒧𑒻𑒞𑓂𑒩𑒹𑒨𑒲𑒏 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒕𑒲
𑒯𑒧 ऋ𑒭𑒱-𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒩 𑒞𑒢𑒨𑒰 𑒕𑒲
𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒰𑒏𑒱-𑒯𑒰𑒩𑒱’ 𑒦𑒰𑒑𑒥 𑒯𑒧
𑒢𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒪 𑒯𑒰𑒩𑒥 𑒯𑒧- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓓𑓒)

𑒕𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒱𑒞 𑒥𑒰𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒪

નહિ કરબ વ્યર્થ વિશ્રામ હમ
અછિ પ્રગતિક નામ જીવન
મૂલમંત્ર ધૈર્ય-સંઘર્ષક સંગમ- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૩૨)

આશાવાદી વિચાર એકાએક પ્રબલ ભ’ ઉઠૈત છૈક, એક નહિ સભ લલ સજગ ભ’ જાગૃત છૈક। કિયોક છુટૈત નહિ છૈક:
તમ સન કારી ઘોર નિરાશા મે
હમ નવલ ઉત્સાહ જગા દેબૈ"

કોનો ને કોનો રૂપે પ્રેમ, વિરહ, માધુર્ય સેહો અપન સનેસ લએ બીચ-બીચ મે અબૈત રહૈત છૈક। વિરહ આ વિરહક વેદના થિરમતિ કે ચંચલ આ ભાવુક ક્ષણમાત્ર લલ અવશ્ય બના દૈત છૈક। વિરહિ નાયિકા કે વસંત નહિ સોહા રહલ છૈક :
જો જો ને દુખદાયી વસંત
તોહર છૌ ભાવટ અંત
હમર વસંતા આયત જહિયા
હૃદય કમલ ખુલાયત તહિયા- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૪૦)

બિના કંત કે કી વસંત! આ જખન હોથિ કંત તઁ સભ દિન સભ ક્ષણ વસંત! કિછુ એહને ભાવ આબિ રહલ અછિ કવિતા મે। વિરહ કેર કવિતા સ્ત્રી આ પુરુષ દુનૂ લિખને છથિ, એખનો લિખૈત છથિ, મુદા સ્ત્રી લિખન કેર ભાવ કનેક મર્યાદિત આ વાસ્તવિક હોઇત છૈક। પુરુષક ભાવ મે વેગ, ઉત્સાહ, આ રોમાંસ અધિક રોમાંચિત કરૈત છૈક। સે દેખા સકૈત છી એહિ કવિતા મે। પૂરા કવિતા પઢ઼લા સઁ અર્થક સમગ્રતા બૂઝિ સકૈત છી।
જાહિ તરહેં આજુક મીડિયા - અખબાર, ટેલીવિઝન, રેડિયો, સામાજિક સંજાલ આદિ નારી દેહક પ્રદર્શન ક’ રહલ અછિ। સમાજ વિચારહીન ભેલ જા રહલ અછિ, સભ કિયોક જનૈત છી। સભ અપન માન, પદ, આયુ આદિક મર્યાદા

𑒥𑒮𑒱𑒢𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒣𑒩 ’𑒢𑒩𑒪𑒑𑒲’ 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒣𑒚𑒢𑒲𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒏 𑒁𑓀𑒬 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒩𑒖𑓂𑒖𑒳 𑒧𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒣 𑒦𑒰𑒫 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
:

𑒏𑒰𑒧 𑒦𑒮𑓂𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒬𑒱𑒫 𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿
𑒏𑒰𑒧𑒳𑒏𑒞𑒰 𑒧𑒔𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒥𑒰𑒯𑒲
𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒩𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼-𑒙𑒲𑒫𑒲 𑒧𑒹
𑒫𑒨𑒰𑒑𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩 𑒠’ 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒑𑒫𑒰𑒯𑒲
𑒣𑒾𑒩𑒳𑒭 𑒧𑒩𑒪𑒰 𑒨𑒳𑒑 𑒥𑒲𑒞𑒪
𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒩𑒪𑒑𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒥𑒰-𑒖𑒰𑒯𑒲- (𑒣ृ𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 ४७)

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒢𑒥𑒹 𑒮𑒿 𑒔𑒳𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒹 𑒋𑒏𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒦’ 𑒋𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒏𑒩𑒝 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒂𑒯𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:
𑒁𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒞
𑒧𑒰𑒞ृ𑒮𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒰𑒑𑒯 𑒣𑒛𑓃𑒞
𑒯𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲, 𑒢𑒩𑒪𑒑𑒲 𑒢𑒯𑒱
𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒹𑒫 𑒣𑒾𑒩𑒳𑒭𑒫𑒰𑒢, 𑒞𑒐𑒢𑒹
𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒢। (𑒣ृ𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 ४७)

’𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒴’ 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒋𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒣𑒱𑒞ृ𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒢𑒩𑓂𑒑𑒪 𑒥𑒹𑒛𑓃𑒲 𑒞𑒼𑒩𑒥𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒯𑒼𑒟𑒱! 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒮𑒦𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒐𑒱 𑒠𑒱𑒧𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒨𑒳। 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒹, 𑒣𑒜𑓃𑒨 𑒏𑒹, 𑒥𑒜𑓃𑒨 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒯𑒩𑒹𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒏’ 𑒮𑒏𑒟𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒩𑓂𑒟𑓂𑒨𑒬𑒰𑒪𑒲:
𑒥𑒰𑒥𑒴, 𑒮𑒴𑒮𑒨𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒲 𑒁𑒟𑒰𑒯
𑒢𑒹𑒢𑒣𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒧 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯
𑒣𑒜𑓃𑒱-𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒥𑒢𑒥 𑒯𑒧 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒲

મનસ્વિની, તેજસ્વિની, વિજ્ઞાની।

મનસ્વિની, તેજસ્વિની, વિજ્ઞાની બનબાક મન્ત્ર ભાલ સ્કૂલિયા માસ્ટર બલ લગૈત છૈક, મુદા ઈ બહુત પૈઘ આહ્વાન છૈક।

ભાષા ભૂમિ આ સંસ્કૃતિ અન્યતમ મૈથિલીમ સંગ હિનક સંલગ્નતા સોહનગાર છૈક। ભાષા અભિયાનક સહયાત્રી લગૈત છથિ। તીનૂક ધ્વજ લેને આગાં બઢ઼ ચાહૈત છથિ:
સુકૃતિ ધ્વજારોહણ ક' જગમે
મારક ગરિમા સઁ હુલસૈત રહી।
ભાષા-ભૂમિક હવન કુંડમે
ધધકૈત આગિ સન પ્રજ્જ્વલિત રહી।- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૫૬)

ભવિષ્યક પ્રતિ તીની શક્તિ કેર સંકલ્પના અનુકરણીય લગૈત અછિ એહિ પોથી કે પઢ઼લાક બાદ। એહેન બાત 'પરમાણુ બમ' શીર્ષક કવિતામે દેખલ જા સકૈત અછિ:
બઢ઼ય દિશિ હમર શક્તિકેં
સૃજને ચરનિ નહિ ઇતિહાસ હમર।
છી હમ કાલજયી કલગિક પદ્મા
વશિવ વજિયી અછિ હમર સમર।

ધર્મરાજ કેર હમ છી સેવક
દુષ્ટ અત્યાચારી લેલ જમ છી
સુરક્ષા-સંરક્ષા આ વિનાશમે
હઁ, હમ પૂરે પરમાણુ બમ છી- (પૃષ્ઠ સંખ્યા ૬૦)

પિતૃસત્તા અદૌ સઁ સ્ત્રીગણ કે દેવી બનેબાક અપૂર્વ સ્વાંગ રચને અછિ।

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒣𑒩𑓂𑒠𑒰 𑒐𑒰𑒮 𑒦' 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒖𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒂𑒥 𑒄 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒠𑒹𑒪 𑒠𑒹𑒫𑒲𑒏 𑒍𑒜𑓃𑒢𑒰 𑒅𑒒𑒰𑒩𑒱 𑒤𑒹𑒏𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱, 𑒋𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱, 𑒮𑒦 𑒪𑒹𑒪, 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒬𑓀𑒐𑒢𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:

𑒯𑒹 𑒫𑒩𑒴 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫-𑒣𑒱𑒞𑒩
𑒪𑒱𑒁 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒠𑒢𑒰𑒧
𑒯𑒧 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒕𑒲 𑒫𑒹𑒫𑒯𑒰𑒩𑒼𑒧𑒹
𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒹 𑒮𑒢 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓖𑓒)

𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒏 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒹 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥 𑒫𑒰𑒞 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒼𑒯𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒋𑒥 𑒦𑒹𑒪 𑒔𑒴𑒜𑓃𑒲, 𑒏𑒏𑒫𑒰, 𑒂𑒧𑒏 𑒁𑒔𑒰𑒩, 𑒮𑒳𑒑𑒳𑒂 𑒂 𑒧𑒢𑒏 𑒩𑒼𑒑 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒩𑒼𑒑 𑒂𑒠𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒯𑒱𑒢𑒲 𑒢𑒰𑒨𑒱𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒰𑒪𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒥𑒜𑓃𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏। '𑒫𑒱𑒩𑒯𑒏 𑒫𑒹𑒬' 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒪𑒣 𑒁𑓀𑒬 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱:

𑒙𑒱𑒏𑒳𑒪𑒲 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒔𑒰𑒩 𑒖𑒼𑒑
𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒢𑒏 𑒩𑒼𑒑 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒖𑒼𑒑
𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒔𑒴𑒜𑓃𑒲, 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒏𑒏𑒫𑒰
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒼𑒩 𑒧𑒢 𑒔𑒏𑒫𑒰।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓗𑓑)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒮𑒿 , 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒿, 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰, 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒂 𑒧𑒹𑒙𑒰 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒣𑒩 𑒑𑒩𑓂𑒫 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒲 , 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡𑒰𑒨 𑒑𑒾𑒩𑒫 𑒏𑒹 𑒏𑒳𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒲, 𑒞𑒰𑒯𑒴 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱:

𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒐𑒹𑒞𑒏 𑒅𑒣𑒖𑒰 𑒮𑒲𑒞𑒰
𑒖𑒑𑒞𑒖𑒢𑒢𑒲 𑒣𑒩𑒧 𑒣𑒳𑒢𑒲𑒞𑒰
𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫 𑒧𑒰𑒢𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒍 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰
𑒔𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒩𑒳𑒖 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒞
𑒮𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲

मैथिलीकेँ स्नेहसँ उच्च स्थान भेटल- (पृष्ठ संख्या ८६)

द्वंद्वावात कविता सच कहि गेँ आजुक स्त्री अर्थात २०२३ स्त्री आ ओकर मायक मनोदशा केर द्वंद्वावात कवि सोचक उजायवृतता वतैत छैक। स्त्रीगण २ निर्णय कोना करी जे दुरागमन बाद जाइत बेटी के पुरने बात सभ केर शिक्षा दी अथवा बदलैत समय केर संग अपन बेटी के परिवर्तन - सोच, व्यवहार आदिमे करैत रहबाक शिक्षा (सीख) दी! ओना बेटी माय सँ कहि आनो आशा रखैत छथि:

पहिल बेर ससुर घर
जाइत धियाकेँ
की सभ सीखेती
वैह सभ कहती
जे हुनक माय
कहने रहथिन
जाउ सुग्गा!
पतिकेँ परमेश्वर बूझब
महत्तामे जाइत छी
अर्थीए टामे बहराएब
अथवा ओ
एतबहि कहथिन जे
नहि ककरो शोषण करब
नहि अपने शोषित रहब
जाउ बेटी
मनुष्य छी
मनुष्य जकाँ रहब !- (पृष्ठ संख्या ८८)

कविताक अंतिम तीन पँक्ति सम्पूर्ण सोच केर कायापलट क दैत छैक। एहि

𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒻𑒏 :
𑒖𑒰𑒅 𑒥𑒹𑒙𑒲
𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒕𑒲
𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒩𑒯𑒥 !

𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒼𑒣𑒩𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒻𑒯𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒲:
𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒢𑒰𑒞𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞
𑒏' 𑒠𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒢𑒱𑒖 𑒡𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞
𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒦 𑒮𑒳𑒐 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒨𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒠𑒰𑒢
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒩𑒯𑒨 𑒠𑒲 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓘𑓗)

𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒰𑒏𑒰𑓀𑒏𑓂𑒭 𑒂 𑒮𑒰𑒫𑒡𑒰𑒢 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢। 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒣𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒬𑒼𑒭𑒝𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒯𑒼𑒢𑒱 !
𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒑𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 -𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱- 𑒧𑒹 𑒠𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:
𑒫𑒰𑒔𑒰𑒪 𑒠𑒵𑒑𑒏
𑒁𑒢𑒑𑒱𑒢𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑒣𑒩
𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒱𑒋 𑒙𑒰 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩
𑒥𑒹𑒏𑒯𑒪 𑒅𑒪𑒯𑒢
𑒁𑒢𑒏𑒯𑒪 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫
𑒖𑒐𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓘𑓘)

𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒹 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒂𑒩𑒼 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:
𑒯𑒵𑒠𑒨𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 –𑒩𑒯𑒱'

𑒅𑒠𑒨 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰𑒏 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒩𑒱
𑒔𑓀𑒔𑒪 𑒦’ 𑒅𑒠𑒨
𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱
𑒥𑒰𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒴𑒗𑒨
𑒪𑒑𑒰 𑒁𑒥𑒱𑒞
𑒥𑒼𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒤𑒴𑒙𑒨
𑒢𑒻𑒢 𑒧𑒪𑒱𑒨
𑒢𑒻𑒢 𑒗𑒳𑒏𑒨
𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓑𑓐𑓐)
𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒃𑒛𑒹𑓀𑒙𑒱𑒙𑒲 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒏𑒹𑒩 𑒦𑒰𑒢 𑒕𑒢𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑓀। 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒼𑒔, 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫, 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩, 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢, 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒾𑒩𑒫𑒥𑒼𑒡 𑒕𑒢𑒱। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒲 𑒯𑒳𑒿𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱:
𑒏𑒯𑒱𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒧
𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲
𑒂 𑒢𑒹 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒣𑒢𑒐𑒹 𑒕𑒲
𑒯𑒧 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒕𑒲
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪
𑒑𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲
𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒞।- (𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓑𑓐𑓔)

𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒏𑒰𑒧𑒏𑒰𑒖𑒲 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒕𑒟𑒱,𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒂 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒿 𑒒𑒩 𑒒𑒳𑒛𑓃𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 , 𑒏𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒏𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒩𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒠𑒰 𑒩𑒞𑓂𑒞𑒲-𑒩𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒮𑒯𑒲 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒒𑒩𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱:

सपनी वासनक श्रृंगार देखाकि'
आँठि-कूदि क' पसार देखाकि'
मोने-मोने नसियिा जाइत छी हम
कुरना-आयमन कयने बनि
माँजि-धोइ क'
जानस घरमे
जुमा जाइत छी हम
हँ, काजपरसँ घुरकि'
काजेपर आबि जाइत छी हम।- (पृष्ठ संख्या १०२)

निम्न वर्गीय, निम्नमध्यम वर्गीय, आ मध्यम वर्गीय परिवार केर कामकाजी महिला सभक परेशानी आ जीवनक दिक्कत मुन्नी मधु लल जोगाल यथार्थ छनि। एहि यथार्थ केर वर्णन सिनेमा केर रील जकाँ हिनक कविताक शब्द पाठक केर माथ मे घुमैत छैक:

घरसँ कार्यालय धरि
गाय-बड़द दुनू हमहीं
ह'रो बहैत छी हम
दूधो परसैत छी हम
तहनो कहाँ कमासुत
कहबैत छी हम
हँ, काजपरसँ घुरकि'
काजेपर आबि जाइत छी हम। (पृष्ठ संख्या १०३)

एहि कविता संग्रह केर पोथी मे नीक-अधलाह सब तरहक कविता भेटत। किछु कविता एहनो भेटत जे गंभीर नहियि जकाँ छैक मुदा सभ नीक भ जेतै तँ नवरस

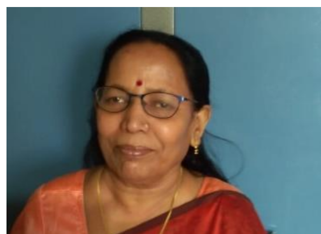
𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒾𑒏! 𑒫𑒢𑒱𑒞𑒰, 𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒫𑒞𑒰𑒩, 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒮𑒩 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒹𑒩 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼! 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒉𑒯𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒏𑒹𑒩 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒙 𑒖𑒼𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

-𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒞,𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒥𑒼𑒗, 𑒯𑒿𑒮𑒲 𑒉𑒏, 𑒩𑒴𑒣 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒩 𑒪𑒐𑒢 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏' 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳 𑒏𑒹𑒩 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒉𑒏 𑒣𑒚𑒢𑒲𑒨 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒕𑒢𑒱। 𑒢𑒫 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒮𑒲𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑒜𑓃𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒂 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒣𑒩 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒛𑒹𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

-𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒴𑒮𑒩: 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒡𑒳
𑒢𑒫𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦: 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 - २०२३
𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨: २०० 𑒩𑒳

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒪𑒮𑒞𑒰𑒤𑓃𑒤𑓃𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰०𑒑𑒧𑒰𑒱𑒪𑒔𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

२१.𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒐𑒹𑒣-२४)



𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝 (१९६०-), 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 - 𑒉𑒧 𑒉, 𑒢𑒻𑒯𑒩- 𑒐𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩, 𑒠𑒩𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰,

𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩- 𑒑𑒼𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒩𑒲 (𑒥𑒪𑒯𑒰), 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮- 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲, 𑒗𑒰𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛। 𑒗𑒰𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢।

𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒦𑒰𑒑- २३)

(𑒧𑒴𑒪 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲- 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒧, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒧)

𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱:

𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒯 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒲𑒨 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑓄 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒲𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒩𑒰𑒖-𑒏𑒰𑒖 𑒮𑓄 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒧𑒑𑓂𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒩𑒰𑒖𑒧𑒯𑒪 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒫𑒢-𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒒𑒳𑒧𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢 𑒫𑒢 𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒥𑒯𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱,𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒨𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒂𑒥 𑒂𑒑𑒴:

𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒏𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒯𑒩 𑒕𑒪 । 𑒧𑒵𑒠𑒳 𑒂 𑒮𑒳𑒐𑒠 𑒯𑒫𑒰𑒏 𑒗𑒼𑒏 𑒑𑒫𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒬𑒨𑒢 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪।𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒹 𑒮𑒼𑒯𑒩𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒗𑒰𑒿𑒣 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒟𑒱।

𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒔𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒋𑒏 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒗𑒼𑒏 𑒗𑒮 𑒒𑒩 𑒏𑒹 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒗𑒧𑒏𑒱 𑒅𑒚𑒪। 𑒒𑒳𑒣𑓂𑒣 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒕𑒪,𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓄 𑒫𑒱𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪,𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒪 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒢𑒱 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒂𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓄 𑒫𑓂𑒨𑒟𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒫𑒱𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪,𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑒨𑒰 𑒐𑒳𑒖𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒔𑒏𑒱𑒞 𑒦𑒨 𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪! 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 ! 𑒁𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 ! 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒢 𑒁𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱! 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒤𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓄 𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒞𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯 𑒍𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑓀𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒧𑒹 । 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩

ज्योति मे हुनकर आँखि आश्चर्य सँ भरल छलनि।ओ देखलनि जे हुनका सोझाँ ठाढ़ दिव्य सौन्दर्य मूर्ति आन कियो नहि हुनक उर्वशी छलनि!
"उर्वशी! ओह उर्वशी!प्रिये उर्वशी! ई उर्वशी!अहाँ उर्वशी थिकहुँ! की अहाँ सत्ते आयल छी ! अथवा हम कुनो स्वप्न मे थिकहुँ!"
राजा अपन विशाल मजबूत आ उन्नत बाँहि मे ओहि सौन्दर्यक दृश्यमान मूर्ति कैं समेटि हृदय लगा लेलनि।राजा आलिंगित अलौकिक प्रेमिका असंख्य चुम्बन के वर्षा देलनि।उर्वशी प्रेम-विह्वल भय प्रियतमक प्रेमक बौछार मे निश्चित स्नान करैत ठाढ़ भऽ गेलीह।उर्वशी किछु क्षण उपरान्त राजा के बंधन सँ अपना के मुक्त करऽ के प्रयास करऽ लगलीह तखन राजा हुनका अपना बाहु-बंधन सँ मुक्त कय हाथ पकड़ि अपन पलंग पर बैसबाक आग्रह केलथि। उर्वशी निःसंकोच हुनक पलंग पर बैसि किछु क्षण अपन प्रियतम दिसि मौन तकैत रहलीह, तखन हुनकर ठोर मे कंपन भेलैक।जेना असंख्य घण्टी एकहि संग घनघना उठल होय,ओहि शान्त वातावरणके निस्तब्धता भंग भऽ गेल। ओहि शांत वातावरण मे बाजि रहल मधुर घण्टी सन उर्वशी के मधुर स्वर बहराएल छल।
"हम अपन बात पूरा केलौं ने हमर प्रिये"?
"हँ प्रिये, आइ हम बहुत प्रसन्न छी,किएक तऽ तप्त मरुभूमि सन ग्रीष्मआ शुष्क हमर जीवन मे वसंत आबि गेल अछि,अहाँक आगमनक कारणेँ। अहाँ हमर अन्हार जीवन मे ज्योतिक किरण बनि अपन पदार्पण केलहुँ अछि। प्रिये!आब हमर नेत्र अहाँक सौन्दर्यक पूरा आनंद लऽ सकैत अछि। हमर हृदयक ताप अहाँक दर्शन रूपी बरखा सँ दूर भऽ गेल अछि प्रिये।"
"हमर प्रियतम, अहाँ हमरा स्वर्ग मे प्रेम-सुधा मे स्नान करबा विरहाग्नि मे जराय लेल छोड़ि स्वयं धरती पर आबि गेलहुँ। मुदा हम एतहु अहाँक पाछाँ पड़लहुँ,अहाँ कैं देल गेल वचन कैं पूरा करबाक लेल। आब हमरा विश्वास दिअ,अहाँ हमरा एतऽ छोड़ि आन ठाम पलायन नहि करब"?-
प्रेम भरल नेत्र सँ राजा दिसि तकैत उर्वशी पुछलखिन।
"नहि प्रिये,जखनहि अहाँ हमरा छोड़ि कऽ चलि जायब,मुदा आब हम अहाँ कैं

કહિયૌ નહિ છોડ઼વા। શ્રહીં કેં છોડ઼િ દિવાક છઉ હમ વહુત પશ્ચાતાપ કેને છી।શ્રહીંક વછિોહ મે હમ૧ સમય઼ કોના વ્ય઼તીત ભેઉ ૬ કયિૌ નહિ વૂહિ સકૈત શ્રછિ। હમ૧ ત્તસ ૭તવે વુહ્ઉ શ્રછિ ળે ૬ સમય઼ મે હમ શ્વ઼ાસ ઉેત ૧હિ મુદા ળીવ઼તિ નહિ ૧હિ। હમ૧ દવ઼િા ૧ાત્૧ા શ્રહીંકે સ્મ૧ામ્ન ક૨ૈત કોન્હુના વીતિ ગેઉ। શ્રહીંક વ઼તિહ મે હમ૧ ૭ુચ઼ િકોનો વાત મે,કોનો કાળ મે નહિ છઉ,સવ સમાપ્ત ભસ ગેઉ। તાહિ ઉઉ હમ શ્રાવ શ્રહીં સઁસ દૂ૧ ળેવાક સપનો મે નહિ સોચ઼ િસકૈત છી" - ૧ાળા ઉ૧્વ઼શી કેં શ્રાશ્વ઼સ્ત ક૨ૈત છથિ।

"પૃથ્વ઼ીપતિ સંસા૧ કે સવ મ૧્ય઼ાદા કે ત્ય઼ાગ કસ કસ હમ૧ા સંગ વ઼િવાહ ક૧વ,હમ૧ા શ્રપન ળીવ઼ન-સાથી, શ્રપન સહ-ચ઼૧્મણિી વના ઉવ"?

"શ્રવ઼શ્ય઼ પ્૧ય઼િ,ૈહો કુનો પૂછવાક વાત થકિ?" - પ્૧ેમસઁ ભ૧ઉ શ્રાઁખિ સઁસ ઉ૧્વ઼શી દસિ તકૈત ૧ાળા વળઉાહ।

"શ્રહીં શ્રપન હૃદય઼ક પ્ય઼ાસ સમાપ્ત ભેઉાક વાદ હમ૧ા નકા૧વ તસ નહિ" - ઉ૧્વ઼શી પૂ૧્ણત: નશ્ચિ઼િત હોવય઼ ચાહૈત છઉીહ।

"કેહન ગપ્પ કસ ૧હઉ છી,મનુષ્ય઼ શ્રપનહિ દેહ સઁ શ્રપન શ્રાત્મા કતહુ નકિાઉિ સકૈત શ્રછિ? શ્રહીં હમ૧ શ્રાત્મા છી,ળકના વનિા હમ નિ૧્ળીવ઼ ૧હવ" - ૧ાળા પ્૧ય઼િતમા કેં પૂ૧્ણ શ્રાશ્વ઼ાસન દેઉથિ।

"તખન હમ૧ કછુિ શ૧્ત શ્રછિ પ્૧ય઼િ,શ્રહીં કેં સદખ્નિ શ્રોક૧ પાઉન ક૧વાક વ઼ચન દેમય઼ પડ઼ત" - ઉ૧્વ઼શી શ્રપન પ્૧ેમ કેં શ૧્ત મે વાન્હય઼ ઉગાઉીહ।

"હમ શ્રહીં કે વ઼ચન દૈત છી,હમ શ્રહીંક હ૧ શ૧્ત વનિા સુનને સ્વ઼ીકા૧ ક૨ૈત છી" - ૧ાળા પ્૧ેમ મે પ્૧ત્યેક શ૧્ત સ્વ઼ીકા૧ ક૧ય઼ ઉઉ તૈયા૧ છઉાહ।

"પ્૧ય઼િતમ,ધ્ય઼ાન સઁ સોચ઼ િકસ શ૧્ત સુનિ કસ વ઼ચન દયિ઼। વડ઼ ભાવુક ભસ કસ પ્૧ેમ મે શ્રાવિ કસ હડ઼વડ઼ી મે કાળ નહિ કરૂ" -

ઉ૧્વ઼શી સ્વ઼૧્ગ પ૧ પૃથ્વ઼ી દ્વ઼ા૧ા શ્રા૧ોપ ઉગાવય઼ કે શ્રનૈતકિતા કે શ્રાક્ષેપ ક૧વાક કોનો શ્રવ઼સ૧ નહિ દેવય઼ ચાહૈત છઉીહ |

"હમ કહઉહું ૭કવે૧ શ્રાવ વદઉવ નહિ,હમ શ્રહીંક સભ શ૧્ત કેં વનિા સુનનહિ સ્વ઼ીકા૧ ક૨ૈત છી। હમ ૬ વાત પૂ૧્ણત: વ઼ચિા૧ કેઉાક વાદ કહિ ૧હઉ છી। શ્રહીં હમ૧ા સઁ હમ૧ પૂ૧ા ૧ાળ્ય઼ છોડ઼વાક વ઼ચન ઉેત છી,૭શ્વ઼૧્ય઼ શ્રા વ઼િઉાસિતા કેં

त्याग करबाक वचन लैत छी वा एतबा धरि नहि जौं हमर प्राण लेबाक वचन सेहो दी,हम एकरा खुशी-खुशी छोड़बाक लेल तैयार छी" - राजा पुरूरव दृढ़तापूर्वक बजलाह।

"तखन कोनो बात नहि। हमर मात्र दू टा शर्त अछि, ई शर्त सभ सदा के लेल मोन राखू,नहि तऽ अहाँ कें पश्चाताप करैत नोर बहबैत रहऽ पड़त,ताहि सऽ हमर बात पहिले अहाँ सुनि लिय तखन वचन देब" - उर्वशी दृढ़ स्वर मे बजलीह।

"हँ - हँ! कहु कथी कहबाक अछि। हमरा सुनबाक आवश्यकता नहि,तथापि हम सुनि रहल छी"।

"हमर पहिल शर्त अहाँ कें वास्ते! हमर पुत्रवत् पालित ई दू गोट मेमना अछि।अहाँ कें एहि दुनू मेमना कें सदखिन रक्षा करऽ पड़त"!

राजा पुरूरवा - "बस एतबहि बात? ई कोन पैघ बात अछि,जकरा वास्ते आहाँ एतेक भूमिका देलहुँ!एतेक प्रकारक जीव-जन्तु हमर पशुशाला मे पालित भऽ रहल अछि। हम ओकर रक्षा करैत छी,तखन अहाँ के एहि दू गोट मेमना सभक रक्षा किएक नहि करब"?

एतेक आसान नहि अछि ई बात प्रियतम! अहाँक कर्मचारी सभ पालतू जानवरक रक्षा करैत अछि, जाहि मे कखनो काल किछु गलती भऽ सकैत अछि,जकर परिणाम स्वरूप ओहि पालतू जानवरक रक्षा नहि भऽ सके आ ओ मरि जाइत होय । अहि बात पर कहियो केओ ध्यान नहि दैत होयताह। अहुँ के ओम्हर ध्यान नहि गेल होयत। मुदा ई मेमना मामूली जीव जंतु नहि अछि, ई हमरा पुत्रवत प्रिय अछि।

राजा पुरूरवा - "हम अहाँ के वचन देने छलहुँ प्रिये, हम हुनका सभक रक्षा अवश्य करब। आब अपन दोसर शर्त बताउ"।

"हमर दोसर शर्त अछि,आनंदक समय अर्थात पति-पत्नी के आपसी विलासक संबंध के समय छोड़ि अहाँ हमरा कखनो नग्न नहि देखाइ देब"।

"ई तऽ आओर आसान शर्त अछि,एकर पालन करब कोनो कठिन काज नहि अछि।हम अहाँ के वचन दैत छी, हम अहाँक एहि दुनू शर्त कें पूर्ण रूप सँ पालन

करब" - राजा पुरूरवा एहि दुनू सहज शर्त कें सुनलाक बाद कनेक हँसलाह।
"जखनहि अहाँ एहि दुनू शर्त मे सँ कोनो एकहुटा शर्त पूरा करबा मे असमर्थ रहब,हम अहाँ कें छोड़ि स्वर्ग चलि जायब।"
"ठीक बात प्रिये, हम अपन जान स बेसी एहि देल गेल वचन के ध्यान राखब"।
एतेक देरी सँ गंभीर उर्वशी आब प्रसन्न आ हर्षित भऽ गेल छलीह। हँसैत बजलीह - "पृथ्वी पर वर-वधू आगि कें साक्षी बना सात टा शर्त पूरा करबाक वचन दैत छथि,मुदा हम केहेन वधु छी,जे अहाँ कें एहि दुनू शर्त कें एहि तरहे पूरा करबाक वचन करयलहुँ अछि। अहाँ कें सेहो कोनो शर्त अछि - हमरा लेल"?
पुरूरवा हँसैत बजलाह "नहि प्रिये, हमर कोनो शर्त नहि अछि"।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ર઼૧઼૧નન્દ વ઼િભાસ નાય઼-ળાવી



નન્દ વ઼િભાસ નાય઼

ળાવી

૧વ઼કિાણ્ન ઝા૨ક સા૧ક વશ્ચિાહ છાપિના। શ્ચા૨યે઼ દૂ વળે વેનૂપહ૧ વ૧ાયિ઼ાની વ઼દિા હણ્ના। ૧વ઼કિાણ્ન ઝા૨ક સાસુ૧મે યન્ય શ્ચછા ળે વેટી વભા વ૧ાયિ઼ાનીકેઁ પાઁય ન૧હક છેણાક વણભ મડિા૨ પ્પુણ્થનિ। વ૧ાયિ઼ાની ળેવા ભભ ૧વ઼કિાણ્ન ઝા૨ દાઢ઼ી વણવૈ છભા નપ્પને હુનક૧ સાનાં પ્૧ાયિ઼ા શ્ચાવિ કડ઼ કહભકૈન-
-પાહુન, ભગાઉ મોછમે ઘી, માનૂ ળાંઘમે યાટી।
નૈપ૧ ૧વ઼કિાણ્ન ઝાય઼ પ્૧ાયિ઼ાસઁ પુછભપ્પનિ- એહેન કોન વાન છૈ ળે મોછમે ઘી ભગાએવ શ્ચા ળાંઘમે યાટી મા૧વ।
પ્૧ાયિ઼ા કહભકૈન-
-સુનૈ છપિ ભડ઼કીવભા વ૧ાયિ઼ાનીકેઁ પાઁય ન૧હક મડિા૨ પ્પુણ્થનિ, નૂહમે છેણાક મડિા૨।
નૈપ૧ ૧વ઼કિાણ્ન ઝાય઼ વળભા- પાઁય ન૧હક મડિા૨ પ્પુશ્ચાવૈથ વ઼ા દસ ન૧હક, છેણાક પ્પુશ્ચાવૈથ શ્ચાકા કાળૂક, હમ૧ા ને મુઁહમે ળાવીએ ભગા ગેભ શ્ચછા।

प्रभा पुछलकैन- से की पाहुन।
नवकिशोर भाय बजला- हमरा पूनमे योनो बढ़ि गेल हेन तँए डॉक्टर मजिर ध्यासँ मना कऽ देने छैथ।

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पीडीएफ मे ई-प्रकाशित हुअए लागल आ ओना सेहो बन्द भऽ गेल आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब ई-प्रकाशित हएब बन्द भऽ गेल अछि आब एकरा ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि- सम्पादक।

सातम पड़ाव

उड़ीसा राज्यक धीय नायारममाकेँ दस वर्ष भऽ गेलैन। पहिल बहाली

𑒦𑒳𑒫𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒦𑒳𑒫𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒂 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒐𑒳𑒪𑒫𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒣𑒠𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒟।

𑒕𑒁 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒮𑒧𑒨। 𑒍𑒢𑒰, 𑒧𑒰𑒒𑒧𑒹 𑒕𑒁 𑒥𑒩𑓂𑒐 𑒮𑒰𑒿𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒂 𑒖𑒹𑒚𑒧𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱, 𑒁𑒐𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒰𑒮𑓂𑒞 𑒞𑒿 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒅𑒑𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒋। 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒋𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒲𑒪𑒩 𑒪𑒑। 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒍𑒓𑓂𑒚𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒅𑒛𑓃𑒲𑒮𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒅𑒚𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒅𑒚𑒻𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒞𑒐𑒢 𑒦𑒳𑒫𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒕𑒪। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒑𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒏𑒼𑒝𑒰𑒩𑓂𑒏𑒏 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒕 𑒏𑒥𑒲𑒩𑒏 𑒐𑒢𑓂𑒞𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪, 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒥𑒰𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒧𑒹 𑒁𑒑𑒧-𑒁𑒟𑒰𑒯 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒁𑒐𑒢 𑒐𑒳𑒪𑒫𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒟। 𑒞𑒯𑒱𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑒲 𑒮𑒩𑒏𑒰 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒠𑒮 𑒥𑒩𑒐 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒳𑒏𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒲-𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒳𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒞 𑒤𑒳𑒩-𑒤𑒰𑒛𑓃 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋।

𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒐𑒾𑓀𑒯 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒐𑒾𑓀𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒥𑒥𑒻𑒞 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒚𑒲𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲, 𑒕𑒼𑒙 𑒂𑒿𑒙-𑒣𑒹𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒌𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒖𑒻𑒏 𑒮𑒯𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒖𑒹 𑒦𑒩𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒖𑒪 𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒋, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒯𑒱𑒢𑓂𑒞𑒹 𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒯𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋।

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒙𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒬 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒧𑒢 𑒏𑒕𑒳 𑒮𑒼𑒔𑒻-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒢 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒏 𑒥𑒰𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒏 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒩𑒼𑒏 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒻𑒢।

𑒢𑒯𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒠𑒯𑒪𑒰 𑒤𑒹𑒏𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒠𑒼𑒯𑒩𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒖𑒻𑒋।

𑒍𑒢𑒰, 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒪 𑒧𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒃-𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒻𑒪 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒔𑒜𑓃𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒹𑒪𑒰, 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒥𑒖𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒲। 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒖𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒥 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒧𑓀𑒖𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒖𑒐𑒢𑒹 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒧𑒖𑓂𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒧𑒖𑓂𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒋𑒞। 𑒞𑒃 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒼𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒮𑒼𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒥𑒹𑒯𑒰𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒳𑒑𑓂𑒑𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒩𑒙𑒢𑓂𑒞 𑒡𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒋, 𑒞𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒧𑒖𑓂𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒲! 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒖𑒼 𑒍𑒯𑒱 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒰𑒖-𑒖𑒼𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒴 𑒂𑒏𑒱 𑒅𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹।

𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒾𑒣𑒹𑒞𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹𑒞𑒹 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒕𑒻 𑒞𑒹𑒞𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒞 𑒞𑒯𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒧 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒏𑒋 𑒥𑒼𑒪𑒲-𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲।

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒋𑒏𑒰𑒑𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏 𑒔𑒰𑒯 𑒯𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒃 𑒕𑒻𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒧𑒯𑒩 𑒪𑒑 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒯𑒟𑒾𑒩, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒥𑒮𑒪 𑒍𑒃 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒅𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒻𑒪𑒻𑒢। 𑒅𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒮𑒾𑒮𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒻𑒞 𑒯𑒟𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒧𑒲𑒢𑓂𑒠𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒕𑒪𑒰, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒋𑒪, 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒮𑒾𑒮𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒢𑒰, 𑒍𑒯𑒳𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒕𑒪 𑒮𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒠𑒰𑒠𑒰-𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒟 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒦 𑒂𑒥 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒋 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪, 𑒍 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯-𑒠𑒰𑒢 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒞𑒱 𑒖𑒑𑒯𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒂𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒥𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒁𑒕𑒱।

सुवासिनीक गप-सप्प करैक इच्छा आ अपन अनिच्छा माने गप-सप्प नहि करैक, कहियो सोच-विचार करबकेँ व्यक्त नहि करैत विचारेमे मोड़ दैत, मोड़ दइक कारण, सुवासिनीकेँ विचारमे ओझराएब रहैत।

रायारमण बजला-

-जहिना अहाँ आइएमे पढ़ैत रही तहिना ने सुचिता सेहो भऽ गेल।

ओना, रायारमण जीह दाबि कऽ बजला मुदा घुरछावला सुतपुतिया भँट्टा जकाँ एकसंग अनेको विचारकेँ समेटि बाजल छला, जइसँ सुवासिनीक मन ओझरा गेलैन। ओझराइक अनेक कारण मनमे उठि गेलैन। पतिजीकेँ दुर्घटनामे मृत्यु भेल रहैन, परिवारमे एकाएक अन्हार पसैर गेल रहए। मुदा ई बात सुवासिनीक मनमे एबे ने केलैन जे अही अन्हार-इजोतक बीच दुनियाँ चलैए आ अपनो चलै छी आ परिवारो चलैए। गामेक जे संगी सुकेशनी छल, माने लोअर प्राइमरी स्कूलसँ कौलेज धरि संगी, सुभ्यस्त परिवार, सात लाख नगद गनि पतिजी विवाह केलखिन, हमरा के करैत? दोसर प्रश्न उठि गेलैन, माएकेँ अनुशंसापर नोकरी भऽ गेलैन, तँए ने अप्पनो तक परिवार ठाढ़ अछि नहि तँ आइ केतए रहितौं?

-केतए रहितौं, सुवासिनीक मनमे अबिते पक्षीक एक वंश रहितो शुद्धी जकाँ सुवासिनीक मन शुद्धैक गेलैन। बजली-

-जँए अहाँ तँए ने हमहूँ एकठाम बैस गप-सप्प करै छी, नहि तँ!

-नहि तँ!पर सुवासिनीकेँ रूकति दुनू हाथो आ मुहोंसँ चरियेबैत रायारमण बजला- नहि तँ, की माने?

एकाएक समुद्रक भवजालमे धँसति भावुक जहिना भावना विहीन बनि जाइए तहिना सुवासिनीकेँ सेहो भेलैन।

तैबीच बहिसैत हिम्मतलाल पहुँच बाजल-

-भाय साहैब, सम्मति गोड़ लगै छी।

हिम्मतलालक गोड़ लगब सुनि रायारमण थकमकेला। थकमकाइक कारण भेलैन जे जँ अपनो असीरवाद दैत हिम्मतलालकेँ किछु कहिए आ पत्नियो किछु असीरवाद दथि लगलखिन तखन असगरे हिम्मतलाल केम्हर-केम्हर मुँह घुमा

शिरोधार्य करत, तइसँ नीक ने जे पहिने हुनके माने पत्नीएकेँ असीरवाद दिअ दियनि। समाजोकेँ त सत्य देखै छी जे दीक्षा बँटनिहारक पथार लागल अछि। जे दिन-राति दीक्षे बाँटए मुदा शिक्षा देनिहार कतौ छैथ। ओ तँ शिक्षाक स्तरमे अछि। राधारमणकेँ से सुतरलैन नहि। अपनो परिवार आ हिम्मतलालक परिवारक बीच जखन सुवासिनी दुनू घाट दिसि तकली तखन जेते पवित्र (नीक) हिम्मतलालक परिवार देखा रहल छेली, माने विधवा माएकेँ, तेना अपन नहि देखा रहल छैन, जइसँ हिम्मतलाल लग बजैक अपन मुँह नहि देखि सुवासिनी चुपे रहब नीक बुझैन। मनो गवाहि देलकैन जे जाइये सहाएब लग ने हमरो हिम्मतलाल गोड़ लगने छल, तेहूमे मुखौटी, जँ परम छुवि लगने रहैत तँ एकटा बातो होइत, सेहो तँ डरायि छल। मुहसँ बजैत हिम्मतलाल ओसारपरक एकटा कुरसीकेँ राधारमण लग सरकबैत बैसल।

हिम्मतलालकेँ बैसति राधारमण बाजल-

-बसमे, माने सवारी-गाड़ीमे अप्पन जोड़ केहेन चलैए?

हिम्मतलाल बाजल-

-जोड़ की जोड़ जकाँ चलैए। विवाह-मूड़नक तेहेन लगान चलैए, जे अन्हरो-डीडरा उड़ि जाइए।

हिम्मतलालक विचार सुनि राधारमण अचम्भितो हँसी हँसि बाजल-

-जाने सबहक उद्धार भऽ जाइए।

बजैक क्रममे राधारमण बाजि गेल, मुदा लगले मन रोकैत कहलकैन, --आजुक परिवेशमे उद्धार हएब! कोनो कहि हँसी-ठट्ठा छी। मुदा मुहसँ निकलल वाण तीर-धनुषक वाण थोड़े छी आकि बन्दूकक गोली थोड़े छी जे छुटि गेल ओ घाव करबे करत। मुँहक वाणमे एते तँ गुण अछि जे ओकरा तोड़लो जा सकैए, मोड़लो जा सकैए आ छोड़लो तँ जाइये सकैए!

मनमे विचार अबैत-अबैत राधारमणक विचारमे ढीलपन एलैन। जइसँ मन बनि गेलैन जे अपन विचारकेँ सुधारि दोहरबैत बाजी। मुदा से भेलैन नहि। नइ होइक कारण भेलैन जे अप्पन तकक जे जीवन राधारमणक हिम्मतलालक बीच रहलैन, ओइ रूपेँ हिम्मतलाल अपनो विचार आ राधारमणोक विचारकेँ हँसी-

મળાકક નૂપમે વુદ્દઉક। હિમ્નિમાનઉાઉ વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, શ્રણ્હનો-ડીડના ક શ્રાવ સસ્ના નહઉ। વ઼િવ઼ાહ વેનમે શ્રાણ કછિુ હુશ્રએ વ઼ા ણર હુશ્રએ મુદા મોટન સાસ્કઉિ યાહ્વે કની।
શ્રોણા, હિમ્નિમાનઉાઉક વ઼યિાનક ણહઉાપન દહઉ શ્ચેકૈક મણ નાયાનમાઅકેઁ જેઉૈન। જેઉૈન ૬ ળે કેહેન વુડ઼વિ઼ાન ળકાઁ વાળઉ શ્રછિ। મોટન સાસ્કઉિ નીસ હળાનસઁ ઊપનમે હોસ્એ, શ્રોહન યઢ઼ણહિાન ળપ્પન દસ હળાન વૈકક કન્ળ સ્વ઼ાવ઼ઉમ્વણક ળનિગી વણા પનવિ઼ાન વસા સકૈએ, નપ્પન ગાાડ઼ીક વદઉા ણગાદે કઇિ ને ઉડ કડ શ્રાનો ણમહન સ્વ઼ાવ઼ઉમ્વી વણ ળીવ઼ન યાનાઅ કૈએ। મુદા શ્રપને મણ નાયાનમાઅકેઁ નોકઉકૈન ળે જાય઼ ળપ્પન સ્વ઼નંન્ન દેશક સજ ળણ સ્વ઼નંન્ન છી નપ્પન સજ મણ સેહો ને સ્વ઼નંન્ન હએન, શ્રા ળપ્પન સજ મણ સ્વ઼નંન્ન હએન નઁ શ્રહિના ને સજ યણી શ્રા સજ કન્મોમે સ્વ઼નંન્ન નૂપૈં ઉાૈન નહના વ઼યિાનકેઁ મોડ઼ૈન નાયાનમાઅ વળઉ-
-હિમ્નિમાનઉાઉ, વ઼હુન દનિક પછાસ્ન દુનૂ જાઁર એકડામ વૈસઉૈ હેન।
શકિાની હિમ્નિમાનઉાઉ ગૈયી માછ ળકાઁ ગૈયપિાસ્ન વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, ઉમનમે શ્રહઁ કછિુ કમ છી મુદા વસિનાહ હમનાસઁ વેસી છી।
હિમ્નિમાનઉાઉક વાન સુણ નાયાનમાઅ યૌકઉ। યૌકૈન યાનૂ દસિ યકોના જેઉ ળે કોણ એહેન કાળે શ્રાક વ઼યિાએ વસિનઉૈ ળે હિમ્નિમાનઉાઉ વાળઉ। શ્રપને ળપ્પન જાઁળપન નાયાનમાઅકેઁ ણહ યઢ઼ૈઉૈન નપ્પન મણ કહઉકૈન ળે કઇિ ને નાળા જાનથની ળકાઁ ળોગી વણ હિમ્નિમાનેઉાઉકેઁ પુછઇિ। વ઼યિાન પનપૂિન્ાઅ હોસ્ને નાયાનમાઅ વળઉ-
-સે કી હિમ્નિમાન?
ને઼યાનઉ વાન વળૈમે ળહિના મણ શ્રુહનામ હોસ્એ નહિના હિમ્નિમાનઉાઉક નહ્વે કનસ્ા વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, દનિ શ્રા નાનીપ્પ થોડ઼ે ળીવ઼ણ છી, ળીવ઼ણ છી શ્રોકન ક્નયિા। સે નઁ વીયમે કોની જેવે ને કએઉ। નહૂમે પનનહમ દનિ નઁ જૈંટ જેઉ નહૌ। શ્રપ્પન એકટા કાળ શ્રનાયિ ઉૈઉૈ, નહી શ્રનાયક વીયમે એઉૈ હેન।
-કાળક શ્રનાય સુણ નાયાનમાઅ સુવ઼ાસનિીકેઁ કહઉપ્પનિ-

-𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒹𑒏 𑒩𑒯𑒪𑒾 𑒂 𑒢𑒹 𑒬𑒯𑒩𑒹𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒾। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒅, 𑒞𑒐𑒢 𑒢𑒹 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒧𑒢𑒼 𑒪𑒰𑒑𑒞 𑒂 𑒢𑒲𑒏𑒼 𑒯𑒋𑒞। 𑒦𑒼𑒖 𑒢𑒹 𑒦𑒰𑒞, 𑒯𑒩-𑒯𑒩 𑒑𑒲𑒞𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒔𑒪𑒞।

𑒍𑒢𑒰, 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒏 𑒧𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒿 𑒂𑒚 𑒒𑒝𑓂𑒙𑒰𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒥𑒮𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒻𑒩𑒞𑒹 𑒥𑒮𑒹 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒼 𑒂 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒏𑒳𑒙𑒼 𑒐𑒰-𑒣𑒲 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒬𑓂𑒞𑒼 𑒪𑒑𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰, 𑒞𑒿𑒋 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒰𑒖𑒥 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥 𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒲𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒔𑒳𑒣 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒔𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒥𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞 ऑ𑒤𑒱𑒮𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪-𑒔𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱?

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒯𑒰𑒪-𑒔𑒰𑒪 𑒏𑒲 𑒩𑒯𑒞 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒪-𑒥𑒹𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒳𑒔𑒰𑒪 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

-𑒥𑒹𑒯𑒰𑒪 𑒂 𑒏𑒳𑒔𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒔𑒾𑒏𑒪𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒰- 𑒮𑒹 𑒏𑒲 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞?

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪- 𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒻𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒱𑒮𑒻𑒩 𑒖𑒰𑒅, 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟𑒏-𑒯𑒰𑒟 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒪। 𑒂𑒥 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒰𑒑𑒖𑒏 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒼𑒙𑒏 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒃 𑒪𑒑𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒋𑒞। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒻𑒩 𑒮𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩𑒹 𑒠𑒹𑒬𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒖𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪, 𑒂𑒥𑒼 𑒖𑒿 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒯𑒰𑒟𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒐𑒢 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲𑒏 𑒮𑒳𑒐 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒪।

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒱𑒨𑒹𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒧𑒢𑒹-𑒧𑒢 𑒧𑒮𑒐𑒩𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒿 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒧𑒹 𑒩𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒼 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒦 𑒪𑒑 𑒥𑒖𑒻𑒞-𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒲𑒏 𑒥𑒖𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒪𑒹𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒠𑒟𑒱𑒋 𑒫𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒟𑒱𑒋। 𑒍𑒢𑒰, 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢 𑒋𑒞𑒼 𑒣𑒲𑒚 𑒚𑒼𑒏𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒣𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒥𑒻। 𑒞𑒼𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒢𑒼𑒏𑒩 𑒕𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒹 𑒕𑒻𑒟। 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒖𑒻𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒮𑓀𑒏𑒼𑒔। 𑒞𑒯𑒲 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒔𑒰𑒯 𑒢𑒹𑒢𑒹

પહુઁયથિ। ગીનૂ ગોમે માને નાયાનમણ, હમિમનળાળ શ્રા સુવાસિની યાહ પીવતિ નહૈથ કિ સુયતિ। શ્રપન કોડનીસઁ નકિંઠ શ્રોસાનપન શ્રાવિ વાળઠ-

-હમિમન યાયા, સુગીક્ષ્મા વહિનક કી સમાયાન?

પહિને માને કહ્યુ સાઠ પૂન્વ, શ્રોના શ્રપ્પનો સાન્વળનકિ શકિષ્મ સંસ્થામે સાઠ જનકિ કોન્સ હોઇએ, ળઇસઁ સાઠ-સાઠ વદ્યિાન્થી ક્ઠાસ શ્રાગૂ હોઇએ, ગઇસઁ શ્રઠગ સેહો પઢ઼ાઇક ગનીકા વદઠવે કએઠ શ્રછિ ળઇસઁ સાઠમે દૂ-ગીન-યાનિ ક્ઠાસ વદ્યિાન્થી વઢવે કનૈ। સુયતિ સેહો વાનહમે સાઠમે મૈટ્નકિ પાસ કનિ કૌઠળમે પઢ઼ૈ। ગૈસંગ સુજ્પસ્ગ ળીવન સ્ગન માને પ્પાન-પાન, નહન-સહન નહને શ્રુટિ કs ળુશ્રાન ગઁ નહિ, મુદા શ્રસ્શ્રુટિગ શ્રવસ્થામે સેહો પહુઁયયિ ગેઠ છઠ। ગ્નામીણ પનવિશક સંસ્કાન ઠળપન સેહો સુયતિમે દસ્ગક દઇયે દેને છઠ, ળે વયિનગિ હોઇગ એ સીમાપન પહુઁય ગેઠ છઠ ળે ઠળપનક વૈયાનકિ નૂપ કેહેન હેવા યાહી। શ્રોના, હાઇયે સ્કૂઠસઁ સુયતિમે વળૈક ગુણ શ્રાવિ ગેઠ છઠ।

હમિમનળાળ વાળઠ- વુય્યી, શ્રાડમ દનિ શ્રોકન વિવાહ હએગ। સબ કહ્યુ ડીક-ડાક જs ગેઠ।

હમિમનળાળક મુહસઁ સુગીક્ષ્માક વિવાહ પ્પસતિ ડનકા ળકાઁ ગઁ નહિ મુદા સઘન વન્પાક વૂન ળકાઁ ળૂન સવહક મનપન હૃનઠૈન। શ્રોના, સવહક શ્રપન-શ્રપન મન ગઁએ શ્રપન-શ્રપન દશા-દશિ સેહો છૈન્હે। નાયાનમણ માન્ન શ્રપન વૈવાહકિ ઘટનાટા સઁ પનચિતિ છૈથ ગઁએ સમાળક નૂપ-નંગ નીક ળકાઁ નહિ વુદ્દે છઠ। માને સુવાસિનીક સંગ નાયાનમણક વિવાહ કેના જેઠ શ્રા પનવિાનમે વગ્નિહસઁ વદ્નિહ કેના ૩ડઠ, વસ ગગવેસઁ પનચિતિ। ગેકન કાનણો સ્પષ્ટ શ્રછિ ળે નાયાનમણકેં કૌઠળ ળીવનમે પનવિાનક દુનવેવહાન, દોવન શ્નમકિ વના દેઠકૈન। વનાઇયે ટા નહિ દેઠકૈન, શ્રુઠી દૈગ નહઠૈન। ળઇસઁ કૌઠળ ળીવનક નળિ઼ટક સંગ એકે ગનપાનમે શ્રાઇ઼એસ સેહો ગૈપ ગેઠ। શ્રાત્મવઠક સંગ શ્રાત્મ-શકૃતિ સેહો દનિાનુકૂઠ મળગૂત હોઇગે ગેઠૈન। ળઇસઁ શ્રાન શ્રાઇ઼એસસઁ એગે દૂની જઇયે ગેઠ છૈન ળે પતિાક શ્રાક્નોશકેં નાયાનમણ સમન કેઠૈન મુદા દોસનાક છાગી ડોઠાઇમાન નહિતિ છૈન। શ્રોના, શ્રપન વિવાહક જોગઠ ઘટનાકેં નાયાનમણ મનસઁ ૩ગાનિ વસૈન ળકાઁ ગેઠ છૈથ, ળઇસઁ ને કહયિો શ્રોઇ શ્રાક્નોશ દસિ મન વઢ઼ઠૈન શ્રા ને

𑒍𑒃𑒣𑒩 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒮𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒃 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒣𑒩 𑒔𑒜𑓃𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒿𑒋 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒔𑒳𑒣𑒹 𑒩𑒯𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒂 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒡𑒩𑒏𑒱, 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒪𑒲𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒠𑒥𑒻𑒞, 𑒥𑒖𑒪𑒲-

-𑒏𑒋𑒧 𑒥𑒩𑒮 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰𑒏 𑒕𑒲?

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒯𑒣𑒩 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒠𑒱𑒢 𑒕𑒪, 𑒪𑒑𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑒏 𑒞𑒳𑒩𑒢𑓂𑒞𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒧𑒹𑒧 𑒮𑒯𑒰𑒋𑒥, 𑒍𑒢𑒰 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒥𑒩𑓂𑒐 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒳𑒂𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒳𑒖𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒐𑒰𑒢-𑒣𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒯𑒢-𑒮𑒯𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒧 𑒕𑒪 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒏𑒠 𑒎𑒠𑒰 𑒖𑒳𑒂𑒢𑒲𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒖𑒃 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒔𑒜𑓃𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒪 𑒞𑒃 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰𑒏 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒏𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒢𑒹 𑒍𑒯𑒢 𑒩𑓀𑒑 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒔𑒜𑓃𑒪 𑒕𑒪। 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒯𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒯 𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒬𑒰𑒩𑒲𑒩𑒱𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒰𑒢-𑒣𑒰𑒢, 𑒩𑒯𑒢-𑒮𑒯𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒑𑒴 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰 𑒥𑒔𑒯𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒯𑒹। 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒳𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧-𑒞𑒹𑒩𑒯𑒧 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰𑒏 𑒅𑒧𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒞𑒹 𑒯𑒋𑒞। 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢𑒰 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪- 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒫𑒩𑓂𑒭𑒹 𑒦𑒫𑒹𑒞 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪। 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒪 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑓄 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒯𑒳𑒁 𑒪𑒑𑒪𑒻। 𑒣𑒯𑒱𑒪, 𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒪, 𑒏𑒋 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒧𑒳𑒯𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒍𑒯𑒢 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒲𑒋𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒼 𑒂 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒱𑒨𑒼, 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱, 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒼𑒪𑒏𑒰𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒰𑒪𑒲 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 ऑ𑒤𑒱𑒮𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒂 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒑𑒰𑒩𑒱-𑒑𑒩𑒾𑒥𑒪𑒱, 𑒧𑒰𑒩𑒱-𑒣𑒲𑒙𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒳𑒏𑒠𑒧𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒖𑒯𑒪𑒼 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

सुचिताक मन चानक बहैत चाना लगलैं आगू बढ़ल। आगू बढ़ैत अपन परिचित, परिचित ऐ मानेमे जे सुचिताक देहमे कोनो रोग भेने एकटा डॉक्टरनी छल जाइर जैठाम गप-सप्पक क्रममे जानकारी भेल जे एमबीबीएस पास लड़कीक विवाह जँ एमबीबीएस पास लड़कासँ कमसँ कम समाजमे हँसनाम हएत। मुदा जेँ महान वैज्ञानिक वा महान विचारके करए ने होथि मुदा विवाह सामान्यतो पढ़ल-लिखल वा नहियोँ पढ़ल-लिखल कन्याक संग हँसी-खुशीसँ मनौल जाइत। अपन हँसनाम बुद्धि और एमबीबीएसक विवाह पति जखन करए लागल तखन अपन बेटीक पढ़ाइक खर्च मनमे नाचि उठलैन। मुदा उपाय की? तीन बीघा अपन बपौती सम्पैत बेचि बेटीक विवाह केलैन। यएह छी अपन समाजक उच्च पढ़ल-लिखल परिवारक आचार-विचार। सुचिताक मनमे विद्रोहक लहैर जागल। मुदा माता-पिताकेँ सोहामे बैसल देखि मनकेँ थतमाति चुपे रहल। रामानन्दजी बजल-

-हिम्मत, केहेन परिवारमे बेटीक विवाह कऽ रहल छह?

हिम्मतलाल मनोनुकूल परिवारमे बेटीक विवाह ठीक केने छल जइसँ मनमे खुशी रहबे करै। बाजल-

-जाए साहेब, जहिना अपन परिवार अछि तहिना ओहो परिवार अछि।

जातीय कुल-गोत्रक मिलान सेहो एक स्तरक भेने एकरंग मानल जाइते अछि, जेँ और बीच आर्थिक वा शैक्षणिक दूरी कोनो मोल करए ने हुअए। यएह विचार रामानन्दजीक मनमे जागि गेलैन जइसँ पुन: दोहरबैत बजल-

-की अपना सन परिवार?

रामानन्दजीक विचारकेँ सोह रखैत हिम्मतलाल बाजल-

-जाए साहेब, जहिना अपन बेटी बीएमे पढ़ए तहिना लड़का सेहो बीए पास कऽ एमएमे नाओं लिखौलक अछि।

आगू बजैत विचार हिम्मतलालक पेटमे छल कि बिचियेमे रामानन्दजी बजल-

-वाह!

रामानन्दजीक -वाह सुनि हिम्मतलालक मनमे अपन काजक प्रति आओ

𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒑𑒪। 𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒑𑒱𑒞 𑒥𑒯𑒱𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲𑒏 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒹𑒏 𑒠𑒩𑒧𑒰𑒯𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒩𑓀𑒑𑒰𑒯𑒹 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏-𑒮𑒿-𑒁𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒩𑒴𑒣𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒐𑒲 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒧𑒳𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒞𑒙𑒰 𑒕𑒯 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒞𑒙𑒰 𑒕𑒻𑒢?

𑒢𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒖𑒲𑒞𑒩𑒰𑒨𑒱 𑒮𑒧𑒠 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒞𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒕𑒱𑒨𑒻। 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒰𑒢-𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏, 𑒖𑒹 𑒃𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒢𑒲-𑒔𑒣𑒩𑒰𑒮𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒃𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩 𑒁𑒤𑒮𑒩𑒼 𑒖𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒣𑒼𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒱𑒨𑒼 𑒖𑒢𑒏𑒱 𑒠𑒩𑒧𑒰𑒯𑒰𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒔𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻𑒢, 𑒞𑒻𑒃𑒧 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒖𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒥 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒲𑒯𑒛𑓃-𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒧 𑒖𑒩𑓂𑒨𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒨 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒿 𑒖𑒹𑒩𑒑𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱- 𑒣𑒰𑒿𑒔, 𑒕𑒯-𑒮𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒐𑒹𑒞-𑒣𑒟𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒁 𑒂 𑒏𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲𑒏 𑒠𑒩𑒧𑒰𑒯𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒹𑓀𑒬𑒢 𑒯𑒳𑒁𑒋, 𑒥𑒢𑓂𑒠𑒩-𑒥𑒰𑒿𑒙𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒖𑒩-𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒢𑒻𑒥𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒏 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒏𑒹𑒿 ऋ𑒭𑒱-𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒟𑒏 𑒏𑒹𑒬𑒏 𑒖𑒙𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒹𑒙𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒹𑒙𑒲-𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒹 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒖𑒹 𑒩𑒯𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒖𑒹 𑒜𑒰𑒿𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒔𑒪𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒦𑒹𑒪। 𑒂𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒣𑒻𑒕𑒪𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒐𑒰𑒏 𑒂 𑒧𑒼𑒯 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒋𑒑𑒪𑒰 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒻𑒮𑒧 𑒫𑓀𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒞 𑒏𑒲 𑒐𑒰𑒋-𑒣𑒲𑒁𑒥 𑒞𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒣𑒳𑒩𑒥𑒻𑒏 𑒦𑒰𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒁𑒕𑒱।

𑒖𑒃 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒪𑒰, 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩𑒹𑒏 𑒅𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪-𑒑𑒧𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒖𑓄 𑒏𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒳𑒙𑒳𑒧𑒻𑒞𑒲 𑒯𑒋𑒞, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒻𑒞 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

-𑒋𑒞𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒖𑒹 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒦𑒹𑒪, 𑒍 𑒏𑒳𑒬𑒪-𑒏𑓂𑒭𑒹𑒧𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒮𑒤𑒩𑒮𑒿 𑒋𑒪𑒯 𑒁𑒕𑒱,

ઠૂમે કાળે ૯૭૬ શ્રછિ, ઠઁ૯ થોડ઼કાઉ નસિયનિ઼ઠ હોરમે ઉગવે કનઠહ વ઼િવ઼ાહ કાળ નહિ પનવિ઼ાનક ય઼ળ્ઞ છો, ઠઁ૯ શ્રસથનિસઁ ગહન વ઼ચિયાન કનૈક શ્રછિ।
નાયાનમામક વ઼ચિયાન હમ્મિઠઉાઉ વુઙ્કિ ગેઉ। શ્રપન ળાન હ૭ુક વનવૈ પાછૂ ઉગવૈઠ વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, શ્રનાડ઼ી-વુનાની ઉ ૯ળે દૂનક વસક સશ્રન ળનમાના હોરળ કોનો કન્મ વાઁકો નહિ નહઉ। ઠેહેન જીન વસમે છઉ ળે વુઙ્કિ પિડ઼૯ ળાન નકિઉ ળાળ। નાઠકિ દસ વળે। પેઉ-પીઉ પછાશ્ઠ નાયાનમામ હમ્મિઠઉાઉકેઁ કહઉપનિ-
-હમ્મિઠ, ળર કાળે ૯૭૬, ૯ક હનશ્રી પહનિ વાળિ ળાહ।
કયહનચિ઼ા પીય઼છડ઼ ઉક હમ્મિઠઉાઉ શ્રછિનિ વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, શ્રપન વાઠ ને ૯કહનશ્રી વાળિ ળાળવ, મુદા મારયક સમાદ જાનિ઼ન છૈન, ઘનવ઼ાઉક શ્રુટ શ્રછિ, સુઠીક્ષ્મામક શ્રઉગે શ્રછિ। ઠઁ૯ ૯કહનશ્રી કેના વાળિ સકૈ છો।
ળહનિ કોનો પોથીક વ઼ચિયાનકેઁ પોથીક શીન્ષકક નૂપમે નાપઉ ળાર૯ ળરસઁ પઢ઼નાહિનક કાન શ્રાઁપસિઁ દેપયિ઼ કઽ ગાઢ઼ જાઽ ળાર૯ ઠહનિ સુવ઼ાસનિયિ઼ોક શ્રા સુયઠોક કાન ગાઢ઼ જેઉ। કાનો કપિ ને ગાઢ઼ હોળઠ, ળપન દુનૂક વીચ પાનવિ઼ાનકિ સમ્વન્ધ શ્રછિ ઠપન પનવિ઼ાનક સજાક સમ્વન્ધ ને શ્રપન-શ્રપન જેઉ।
નાયાનમામ વળઉ-
-યાહે નપ-શપિ વ઼નામન ઉપિહ શ્રાકિ શપિ-નપક વ઼નામન ઉપિહ, વાઠ વનવનચિ઼ જેઉ, દુનૂ ઉપિનિહિન શ્નેષ્ઠ સ઼ૃષ્ટકિન્ઠા જેવે કેઉ। ળહનિ ઠોહન વ઼ચિયાન હુશ્ર ઠહનિ વાળહ।
હમ્મિઠઉાઉ વાળઉ-
-જાય઼ સાહૈવ, ળહનિ શ્રપના મનમે શ્રછિ ઠહનિ મારયોક રચ્છા છૈ, ળે શ્રપને વ઼િવ઼ાહસઁ યાનિ દિનિ પહનિ સજા પનવિ઼ાન શ્રાવિ કઽ મથિઉાક ળે વ઼િવ઼ાહક વેવ઼હાન શ્રછિ શ્રોર વેવ઼હાને શ્રપન વેટીક વ઼િવ઼ાહ કનવ। સે ઠઁ શ્રપને સજા પનવિ઼ાન નહને ને સમ્જાવ઼ જાઽ સકૈળ।
શ્રોના, યાનિ દિનિક સમય઼ શ્રા મથિઉાક વેવ઼હાન, કેના સમ્જાવ઼ હળ। નાયાનમામક મનમે નાચિ ઉઠઉૈન। કહૂ ળે યૂડ઼ાક યાન પહનિ ઠાડ઼ઉ ળાર૯,

पछाइत भाड़ल जाइए, तखन सुखौल जाइए पछाइत ने कुटल जाइए, से केना चारि दिनमे सम्भव अछि। अदौरी कि बर-बरी बनबैमे कम मेहैन अछि से चारि दिनमे केना हएत। तहूमे अदौरीकेँ सुखैयेमे समयक हिसाबसँ दुइयो दिन लगैए आ पाँचो दिन नइ लगैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैसंग घर-दुआरक लिखिया-पढ़िया माने चित्रकारीसँ शुभ सन्देश लिखै चला, सेहो अछि। तहूमे आन काज छी नहि जे एको-दुइयोटा चित्रकारीसँ काज चल सकैए। विवाह सन यज्ञ छी। कोहबरसँ राज-सिंहासन तकक चित्रकारी करैक काज अछि। मुदा मनकेँ मिथिलाक दृश्य हटा राधारमण मन मिथिलाक दिशा दिस मोड़ैत विचार करए लगला। मिथिलाक दृश्य की? वएह ने जे जे कोनो काज, चाहे साधारण जीवनसँ जुड़ल हुअए आ उच्चकोटिक यज्ञ स्वरूप हुअए, जेते मनसँ मथन-मथि करैत करब ओते ओ नीकसँ नीकतम होइते जाइए। यएह छी मिथिलाक दर्शनक दर्पण। जेना कोनो भोज्य वस्तु अछि, ओकर उपयोग साधारणो ढंगसँ होइए आ अधिक-सँ-अधिक नीक बना सेहो नइ भऽ सकैए, ईहो बात नहियेँ अछि। तहिना, आनो-आन जीवनसँ जुड़ल जे काज अछि तहूमे नीक हेबे करत। मुदा संजोग रहल जे हिम्मतलाल अपन विचारकेँ, सन्मुख धार जहिना अपन धाराकेँ प्रवाहित रखितो धारक अगल-बगलमे मुँह बनबैत दोसरो धाराक धार बना प्रवाहित करैत आगू बढ़ैए तहिना हिम्मतलाल अपन विचारकेँ यथास्थितिमे समेटि बाजल-

-भाय साहैब, की कहब। बुढ़ियाक रंग-ढंग दोसरे छैन।

हिम्मतलालक माइक रंग-ढंग दोसरे छैन सुनि जिज्ञासा करैत राधारमण बजला-

-की दोसरे?

हिम्मतलाल बाजल-

-भाय साहैब, भोर होइते चरियाबए लगैए जे राधारमण बौआसँ भेँट भेना बहुदिन भऽ गेल। बेचारे केना रहैत हेता केना नहि से कनी बुझब। ओना, मोबाइलसँ गप-सप्प होइते छैन, मुदा तइसँ मन थोड़े भरै छैन।

हिम्मतलालक मुहसँ माइयक बात सुनि राधारमणक मन जहिना निछोह दौड़ैत

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒋𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒻𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒃𑒨𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒍𑒩 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪, 𑒖𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒩𑒼𑒯 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒑𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒯𑒹 𑒮𑒐𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒩𑒲𑒞 𑒋𑒏 𑒒𑒩 𑒏𑒰𑒢𑒻 𑒋𑒏 𑒒𑒩 𑒑𑒲𑒞। 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒏𑒧𑒰𑒃 𑒪𑒳𑒙𑒰𑒃𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒢𑒻𑒋 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒍𑒯𑒱 𑒪𑒴𑒙𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒼𑒑𑒱 𑒯𑒿𑒮𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒕𑒲𑒯𑒹। 𑒁𑒙𑓂𑒚𑒰𑒩𑒯 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒂 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒅𑒧𑒹𑒩𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒞𑒲𑒢-𑒔𑒾𑒟𑒰𑒃 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒔𑒪𑒻𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒱 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒹𑒔𑓂𑒕𑒰𑒮𑒿, 𑒫𑒨𑒮𑓂𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒨𑒼, 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰-𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒼𑒪 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒢𑒯𑒱। 𑒑𑒰𑒋-𑒧𑒯𑒲𑓀𑒮 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒐𑒩𑒲𑒠-𑒥𑒱𑒏𑓂𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒦 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒖𑒹 𑒐𑒰𑒮 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒕𑒲 𑒞𑒃 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒞𑒏𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱। 𑒫𑒰𑒯 𑒩𑒹 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒢𑒫 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒫𑒻𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒤𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒳𑒏𑒼, 𑒤𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒧𑒲𑒚𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒮𑒰𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒼 𑒥𑒢𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋, 𑒮𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒨𑒱 𑒢𑒹 𑒣𑒹𑒫 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑓂𑒨𑒑𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒪𑒧𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒩𑒐𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒄 𑒂𑒬𑒰 𑒞𑒿 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒋𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒫𑒰 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒥। 𑒞𑒿𑒋 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒮𑒿 𑒩𑒼𑒏𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒧𑒢𑒹-𑒧𑒢 𑒂𑒿𑒏𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒢-𑒧𑒩𑒖𑒰𑒠𑒰 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒒𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑒧𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒧𑒹𑒪 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒾𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒁𑒢𑒧𑒹𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱, 𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒁𑒢𑒧𑒹𑒪 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒩𑒥𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒋।
𑒩𑒰𑒨𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒄𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒐𑒢𑒹 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰-𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒢, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒡𑒰𑒩 𑒣𑒰𑒕𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒍𑒃 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒢 𑒋𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒻𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒑𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒋, 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒥

𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒹𑒚𑒲𑒩 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒏 𑒩𑒴𑒐𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒟𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒚𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒥𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒥𑒾𑒂 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞, 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑓂𑒝𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒹।

𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒩𑒲𑒞-𑒩𑒱𑒫𑒰𑒖 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒎𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒍 𑒮𑒧𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒜𑓀𑒑𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒻 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻-

-𑒔𑒰𑒔𑒰𑒖𑒲, 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳?

-𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒛𑓃𑒲 𑒕𑒼𑒣𑒱 𑒞𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒯, 𑒐𑒳𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒖𑒯। 𑒁𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑒦 𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒕𑒲, 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒂𑒢 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒖𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒫𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒹𑒏 𑒞𑒾𑒯𑒲𑒢 𑒯𑒋𑒞। 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒦 𑒖𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒫𑒹𑒬 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒞 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒢𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒑𑒳𑒛𑓃 𑒒𑒰𑒿𑒫 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒮𑒰𑒢 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞।

𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒞𑒧𑒞𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒏𑒩𑒼 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒟𑒼𑒛𑓃-𑒟𑒰𑒛𑓃 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒃। 𑒍𑒢𑒰, 𑒏𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒖𑒑𑒯 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒁𑒕𑒱, 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧 𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒳𑒔𑒰𑒩𑒲, 𑒁𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒋, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒼𑒏𑒮𑒰𑒢, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒞𑒧𑒞𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒧𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒢𑒹, 𑒍𑒏𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒑𑒞 𑒩𑒴𑒣 𑒖𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒢𑒹-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑓀𑒑 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒋।

𑒍𑒢𑒰, 𑒩𑒮𑒹-𑒩𑒮𑒹, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒞𑒧𑒞𑒧𑒲 𑒕𑒪, 𑒍 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒟𑒲𑒩 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒟𑒲𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒿 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡 𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒥𑒻𑒮 𑒖𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒩𑒯𑒞 𑒞𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒲 𑒂 𑒁𑒢𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒯𑒞 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒋𑒏𑒩𑓀𑒑 𑒯𑒋𑒞। 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒰 𑒢𑒧𑒯𑒩 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒥𑒲𑒞𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒼 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒦𑒼𑒑𑒱𑒨𑒼 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰, 𑒏𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹-𑒦𑒼𑒑𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒋 𑒖𑒹

𑒏𑒼𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒧𑒯𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒏 𑒞𑒧𑒞𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒧-𑒢𑒧𑒲 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒏 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒑𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒃। 𑒢𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒔𑒰𑒔𑒰𑒖𑒲, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒲-𑒫𑒱𑒠𑒰𑒑𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒲 𑒩𑒲𑒞 𑒁𑒕𑒱?

𑒍𑒢𑒰, 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒩𑒲𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒐𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒪, 𑒏𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒌𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒕𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒠𑒳𑒩𑒰𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰। 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑓀𑒬𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱𑒋, 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒻𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒑𑒰𑒧 𑒂 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩𑒼𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒋। 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒫𑒹 𑒖𑒹𑒞𑒹 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒕𑒪, 𑒍𑒞𑒹 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒩𑒯𑒪। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼 𑒥𑒠𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒫𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞𑒞𑒰 𑒋𑒞𑒹 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒃 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲 𑒞𑒲𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪𑒰, 𑒮𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒍𑒯𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒦𑒩𑒱 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒢𑒰, 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒋 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒁𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒚𑒱𑒨𑒼 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒯𑒼𑒃, 𑒯𑒧𑒩𑒰-𑒮𑒦 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒢𑓂𑒯𑒼𑒙𑒰 𑒥𑒩𑒠 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒼𑒪𑓂𑒯𑒳 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒰𑒔𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒲.𑒋. 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒢 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒠𑒃𑒨𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒢𑒹 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒞𑒴𑒪 𑒯𑒼𑒃। 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-

-𑒥𑒰𑒅, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼𑒏 𑒖𑒰𑒪 𑒧𑒯𑒖𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒱 𑒫𑒱𑒏𑒩𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒥 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒍 𑒞𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒫𑒮𑒿 𑒥𑒠𑒻𑒪𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒩𑒴𑒜𑓃 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒴𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒱𑒕𑒳।

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒝, 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒢𑒛𑒹𑒩𑒱𑒨𑒹 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒼 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒏𑒢𑒛𑒹𑒩𑒱𑒨𑒹 𑒏𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒠𑒻𑒪 𑒮𑒼𑒗 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒼𑒗 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒂𑒑𑒴 𑒞𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲, 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒫𑒞 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒳𑒯𑒰𑒿𑒢𑒲 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒞𑒿𑒋 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒲 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒐𑒹𑒞-𑒣𑒟𑒰𑒩, 𑒣𑒼𑒐𑒻𑒩-𑒗𑒢𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒋 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒯𑒼𑒃। 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩

વ્યક્ત કનૈક યૌનસ-સમ્નઠ ભ્રૂમ દિખ્પ નાયાનમામ વળઠ-

-શ્રપ્પન વેસી પાછૂક વ્રયિાન દસિ ળાર-કે નહિ શ્રછિ, ળઁ એનવો વ્રયિાન સમ્રક વોય સમ્નગમ મ્રડ ળાએ, ળેન ગોનેક વોયક ળીવ્રનક શ્રછિ, મુદા સે છુછુન વુહિ પડૈએ।

-છુછુન શવ્દક માને હમ્નિમનઠાઠ નીક ળકાઁ નહિ વુહિ પેઠક, સુવ્રાસનિી દેહક છુછુન શ્રાઁગી ળકાં છુછુન શવ્દક માને વુહઠી, મુદા સુયનિ નાયાનમામક વ્રયિનામ વ્રયિાનક મ્રાવ્રક શવ્દ નૂપમે વુહિ ગેઠ। શ્રોના, શવ્દ મ્રાવ્રસઁ ળહનિ મનક એક કોમ વહ્નિસઠ નહનિ દોસન કોમ વ્રહ્નિવ્રઠ સેહો મ્રેઠ। નરસઁ મ્રાવુક મ્રડ સુયનિ વાળઠ-

-કી છુછુન, પનિાળી?

સુયનિાક પ્નશ્ન સુનિ ળેના હમ્નિમનઠાઠ શ્રકવકાએઠ નેના સુવ્રાસનિી નઁ નહિ શ્રકવકેઠી મુદા યૌકઠી ળૂન, ળે કી વુહિ સુયનિ એહેન પ્નશ્ન ઉઠૌઠક? શ્રોના, નાયાનમામ નળૈન ઉઠા-ઉઠા હમ્નિમનોઠાઠપન દૈથ શ્રા સુવ્રાસનિીયૌંપન, કનિ નઁ હનિકા મનમે ઉઠિ નહઠ છેઠૈન ળે ળાવે કયિો શ્રપન વ્રયિાન શ્રપના મુહસઁ નહિ નકિાઠન નાવે શ્રોકન પેટક વાન પ્નવ્રાહનિ કેના હએન। મુદા નરસઁ પહિલુકે શ્રવસ્થામે સુવ્રાસનિયિોક શ્રા હમ્નિમનોઠાઠક મન શ્રોહ્નાએઠ છઠ, ળરસઁ દુનૂક મન શ્રપન શ્રોહ્ની સોહ્નવૈમે ઠાગઠ છેઠર। નઁએ વ્રયિનનિ મનકેઁ મનક મોનયિેંમે ઉગૈન-ડુમૈન દિખ્પ નાયાનમામક મનમે ઉઠૈન ળે નીક હએન, વૈવ્રાહકિ ળીવ્રનક મહન વુહૈઠ વ્રવ્રિાહ કી છી, પહનિ નર દસિ વઢી। વળઠ- -વાઉ સુયનિ, શ્રામક સુશ્રાદ કેહેન હોરએ, શ્રોરમે પક્કઠ ગુદ્દા વ્રા નસક કી સુશ્રાદ શ્રા ગુામ શ્રછિ, ડમહાએઠ-શ્રયપક્કુક કી શ્રછિ શ્રા કાઁયક કી શ્રછિ। કાઁયોમે પ્પયિ્યો કાઁય શ્રછિ શ્રા શ્રયપ્પયિ્યો શ્રછિ શ્રા ળુશ્રાએઠ નઁ શ્રછિએ। નઁએ નીક હએન ળે ળહનિ નોનામે વુહૈક ળે ળળિ્ગાસા છહ, શ્રોર ળળિ્ગાસા પાછૂ કોનો વ્રયિાન વ્રયિનામ મનમે કનૈએ, ળર શ્રાયાનપન પ્નશ્ન ઉઠૈએ નઁએ મ્રાઁગ-વથુશ્રા ળે વુહૈન હુશ્ર સે વાળહ। હમના ઠગ નર વળવહ નઁ દુનયિોંક વોય કેના વાળિ પેવહ।

એક નઁ નવ્રસોન સુયનિ, નહૂમે કૌઠળક સંગી સવહક વોય વળન્ના સુયનિ, માના-પનિાક વોય સુયનિ, એક પનવ્રિાનસઁ દોસન પનવ્રિાનક વોય સુયનિ,

𑒅𑒧𑒹𑒩𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰, 𑒥𑒰𑒖𑒪-
-𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲, 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒅𑒧𑒹𑒩𑒹 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾 𑒯𑒹𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒋𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾 𑒯𑒹𑒢 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒩𑒴𑒣𑒞𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒮𑒧𑒞𑒼 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋।
𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒋 𑒂 𑒧𑒰𑒋𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒢𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒟, 𑒖𑒿 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒋𑒞 𑒞𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒐𑒰𑒡𑒱 𑒥𑒢𑒻𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒧𑒰𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒻𑒟, 𑒞𑒐𑒢? 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒟𑒴𑒏 𑒠𑒴 𑒩𑒴𑒣 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒃𑒖𑒼𑒞 𑒣𑒏𑓂𑒭। 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩𑒼 𑒃𑒖𑒼𑒞 𑒥𑒢𑒻𑒋 𑒂 𑒃𑒖𑒼𑒞𑒼 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒃 𑒥𑒢𑒻𑒋 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒥𑒰𑒖𑒪-
-𑒥𑒰𑒅 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞, 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒹 𑒔𑒪𑒱𑒨𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒲 𑒥𑒲𑒔 𑒢𑒲𑒏-𑒥𑒹𑒖𑒰𑒋 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒹𑒫𑒯𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒧𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒩𑒰𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒰𑒡𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒡𑒱, 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒍 𑒞𑒿 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒕𑒱𑒌, 𑒧𑒴𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒫𑒋𑒯 𑒦𑒹𑒪। 𑒞𑒿𑒋 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒁𑒚𑒰𑒩𑒯 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒾 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏 𑒁𑒫𑒑𑒻𑒞 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒥𑒢𑒥𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞।
𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒔𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒱𑒮 𑒅𑒢𑒻𑒙-𑒅𑒢𑒻𑒙 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-
-𑒁𑒑𑒩, 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒏𑒩𑒻 𑒞𑒿 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒪𑒹𑒬 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲?
𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝-
-𑒢𑒯𑒱! 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒲 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒮𑒫𑒰𑒮𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒫𑒢𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒋। 𑒌𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒁𑒐𑒢 𑒢𑒯𑒱। 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒏 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒥𑒼𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒱𑒏 𑒛𑓂𑒨𑒴𑒙𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞।
𑒥𑒮𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒟𑒰𑒏𑒪 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒯𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒋 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒦𑒏𑒳𑒂𑒋𑒪𑒧𑒹

-𑒯𑒴𑒿 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒠𑒱𑒁𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒋 𑒢𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒃𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒔𑒰𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲।
(𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒿𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒢𑒰𑒱𑒯𑒮𑒞𑒰𑒓𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰𑓀𑒑𑒧𑒰𑒱𑒯𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓑𑓓.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪-𑒡𑒳𑒩𑒮𑓂𑒟𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒏(𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰)



𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒡𑒳𑒩𑒮𑓂𑒟𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒏

𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪, 𑒖𑒃 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒦𑒼𑒩𑒹𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒔𑒳𑒪𑒥𑒳𑒪𑒲 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪। 𑒖𑒹-𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒋 𑒪𑒑𑒪-𑒖𑒹-𑒮𑒳𑒢𑒻 𑒍 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖 𑒖𑒹𑒚 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒐𑒰𑒋𑒪 𑒡𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒧𑒰𑒕𑒏 𑒁𑒧𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒋, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒪𑒼𑒏 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒞𑒾 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒠𑒮𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒻𑒮 𑒞𑒿 𑒏𑒞𑒾 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒠𑒮𑒙𑒰 𑒧𑒾𑒑𑒲 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒻𑒮 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒟। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒞𑒾 𑒧𑒾𑒑𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒧𑒪𑒱𑒢𑓂𑒯𑒩 𑒦𑓄-𑒩𑒯𑒲 𑒏𑓄 𑒖𑒹 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒪 𑒏𑒼𑒢 𑒔𑒾𑒏 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒋𑒞। 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒏 𑒥𑒯𑒰𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒖𑒰𑒢𑒥 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒮 𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯𑒰-𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒔𑒾𑒏-𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒖𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒹 𑒞𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒋𑒏𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯𑒰𑒏 𑒏𑒋-𑒏𑒩𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒟। 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒾𑒏 𑒥𑒠𑒪 𑒏𑒲 𑒯𑒋𑒞-𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒅 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒮𑒛𑓃? 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒋, 𑒏𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒞𑒲𑒢 𑒩𑒴𑒣 𑒔𑒾𑒏 𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒋। 𑒋𑒏 𑒔𑒾𑒏𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏-𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒔𑒾𑒏𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒫𑒱𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒔𑒰𑒯 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒥𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒯 𑒏𑒱 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒣𑒩 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒚𑒹𑒯𑒏 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒏 𑒮𑒦 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒿𑒖 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒑𑒰 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒹𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒡𑒪𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒻 𑒕𑒲। 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒮𑒰𑒩𑒹-𑒣𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒧 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒻𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒼 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒢 𑒡𑒳𑒩𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒲 𑒡𑒳𑒩𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒲 𑒡𑒳𑒩𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒢 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒏𑒼 𑒞𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒲𑒯𑒹, 𑒏𑒞𑒾 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒖𑒿 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒮𑒳𑒛𑒾𑒪 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒏𑒞𑒾 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒪-𑒡𑒳𑒢𑒧𑒳𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒟। 𑒐𑒰𑒋𑒩 𑒖𑒹 𑒕𑒻𑒟-𑒞𑒿 𑒔𑒱𑒏𑓂𑒏𑒢, 𑒍 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒞𑒰।-𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧-𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢

𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒻𑒢"𑒋𑒏 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒔𑒰𑒯 𑒂𑒢𑒼 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒂𑒅।" -
𑒔𑒰𑒯 𑒂𑒢𑒋 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒲 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒾 -
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪", 𑒞𑒴𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒲𑒥𑒯।"
𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒩𑒔𑒱𑒞 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒹𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒢𑒹-𑒂𑒣𑒳𑒧𑒹 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒛𑒏𑒱𑒨𑒰𑒏𑓄 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒞𑒿 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒋𑒪𑒰𑒪 𑒕𑒲, 𑒏𑒐𑒢 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒞 𑒂 𑒏𑒐𑒢 𑒦𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒾 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒛𑒩𑒰𑒯 𑒧𑒾𑒑𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒮𑒼𑒔𑒢𑒹𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒢𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒃𑒥𑒰𑒪𑒲-, 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒛𑒹𑒩𑒣𑒩 𑒥𑒩𑒲 𑒣𑒏𑒥𑒻𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻𑒢, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪 -𑒏𑒰𑒏𑒰", 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒂𑒮𑒲𑒩𑒥𑒰𑒠𑒮𑒿 𑒢𑒹 𑒖𑒲𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒖𑒲𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒥।"
𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒱𑒨𑒼𑒿 𑒔𑒰𑒯 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒲 𑒂 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪। 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒻𑒞𑒳𑒏𑒰 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒖𑒢𑒏 𑒪𑒑𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒁𑒿𑒑𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒻𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒢𑒧𑒼𑒯𑒢𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒏𑒢𑒤𑒳𑒮𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒻𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒞𑒾 𑒥𑒰𑒖𑒥 𑒢𑒯𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒼𑒮𑒿 𑒕𑒱𑒣𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒏𑓄 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒖𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱। 𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒹𑒯𑒼-𑒥𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒼𑒥𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒋𑒖𑒹𑒢𑓂𑒙 𑒮𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒋। 𑒮𑒳𑒨𑓀𑒑 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒼𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒥𑒖𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒩𑒏𑒾𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒰 𑒕𑒲-, 𑒏𑒹𑒞𑒾 𑒥𑒰𑒖𑒥 𑒢𑒯𑒱, 𑒂 𑒏𑒢𑒞𑒼𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒯𑒢𑒰𑒖𑒹𑒥𑒩 𑒚𑒏𑒱 𑒪𑒃𑒋-
𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒻𑒥, 𑒖𑒩𑒰 𑒢𑒰𑒞 𑒪𑒑𑒰𑒪𑒹 𑒕𑒲।"
𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒖𑒪𑒲-
"𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥 𑒪𑒋𑒯, 𑒢𑒲𑒢𑒏 𑒖𑒰𑒏 𑒙𑒳𑒙𑒱 𑒖𑒹𑒞𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒑𑒰𑒧"𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒥𑒰-𑒒𑒩𑒏 𑒑𑒣-𑒍𑒢𑒰, 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒖𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒩𑒣𑒙 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒋 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒩𑒣𑒙 𑒜𑒼𑒪𑒏 𑒥𑒖𑒾𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒥𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒰𑒃-𑒕𑒻, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒩𑒣𑒙 𑒥𑒖𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒃। -𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒻𑒥, 𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒩𑒏-𑒒𑒩𑒏 𑒑𑒣 𑒁𑒟𑒰𑒯 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒹𑒏𑒩 𑒧𑒖𑒰𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧-
"𑒟𑒰𑒯 𑒣𑒾𑒞।
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒼𑒯𑓀𑒞𑒑𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒑𑒪 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑓀𑒞𑒑𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒑𑒥𑒹

કએ૭ા પુછ૭િએ-
"સે કી ભોગી?"
શ્રાદ૧પૂ૧વક કનિકોસઁ કોનો વ઼યિા૧ પુછ૭ાપ૧ ળહિા માન શ્રપમાનક વ઼યિા૧- મનમે ળગાપિ઼ ળાર છૈન, તહિા ભોગી૭ા૭કેં સેહો મે૭ા તેવોય ગા૭િસક શ્રાયાસઁ વેસી યાહ પીવ ને ને છ૭ા ભોગી૭ા૭ વાળ૭ભાય઼ સાહૈવ" -, શ્રપ્પન ગામમે એકટા નવ઼ ઘટના ઘટિ ગે૭ શ્રછિ, તઁએ ગામક ળડ઼કિ ય૧ય શ્રપ્પન નર ક૧વા મુદા સંક્ષેપમે તઁ એતે કહયિ઼ે દેવ ળે કોનો ગામમે કેતે ૧ગાક માટિ શ્રછિ, કેતે ૧ગાક પાનિ શ્રછિ, કેતે ૧ગાક ગાછપાનકિ ૩પ-વનિીછક સંગા શ્રન્ન-ળોવા૧ી- શ્રા ૩પળૌનહિ઼ાનો કેતે ૧ગાક છૈથ સે થાહ ૭ગાએવ શ્રસાન થોડ઼ે શ્રછિ"!
ભોગી૭ા૭ક તથ્યપૂ૧ામ વ઼યિા૧ શ્રપનો મનમે ઽહક૭ા ઽહૈકતે વળ૭ી-
"શ્રપ્પન પુ૧ના ગાપ"સપ્પ છોડ઼હ઼ા હા૭ક ળે હા૭ત શ્રછિ તેતવે ગાપ ક૧હ઼ા-
ભોગી૭ા૭ વાળ૭-
"ભાય઼ સાહૈવ, કા૭હ્સિઁ શ્રાર યનકિ ળે ઘટના શ્રછિ શ્રપ્પન તેતવે કહૈ છી।"
શ્રપનો નીક વુહિ પિડ઼૭ા શ્રનેને શ્રઠા૧હો પુ૧ાામક યાનિ ૭ાપ્પ મંત્ર૧શ્૭ોક પઢૈ પાછૂ ળે શ્રપ્પન શ્રસ્સી વ૧પ્પક ૩મે૧ પ્પા ૭વ શ્રા પાએવ કછિ઼ુ ને, તરસઁ નીક ને ળે વેદક એક્કે ૭ાપ્પ મંત્૧કેં ળપૈત પાઁય ૭ાપ્પ મંત્૧ક ભોગા ભોગા ૭િવા તેક૧ માને ૬ નર વુહ્વ ળે વેદક મંત્૧ મનુક્પ્પક વ઼ૃદ્યિ વ઼િકાસક સંગાસંગા- ય૭વો કએૈએ, નમિૈવતો શ્રછિ શ્રા પૈછ૭ાકેં છોડ઼િતો તઁ શ્રછએિ઼ -વળ૭ી઼
"શ્રપના ળે નીક વુહિ પિડ઼હ, સએહ વાળહ઼ા"
શ્રપન દશા-દશિા વ્ય઼ક્ત કએૈત ભોગી૭ા૭ વાળ૭-
"ભાય઼ સાહૈવ, કી કહવા દનિા૧તિ ળિર સમાળક પાછૂ-, માને ગામક સમાળક પાછૂ, સમય઼ પ્પપવૈ છી સએહ સમાળ યુ૧શ્કન્ના ૭ક વુહૈએ઼ા"
-યુ૧શ્કન્ના શવ્દ તઁ વહુત દનિસઁ સુનૈત શ્રાવિ ૧હ૭ છી મુદા ગુન૭ી કહયિો ને, તઁએ યુ૧શ્કન્નાક વ઼ાસ્તવ઼કિ ૂપ શ્રપ્પન તક નહયિઁ વુહમિ શ્રાવિ સક૭ શ્રછિ઼ા વળ૭ીકી યુ૧શ્કન્ના ભોગી" -?"
ભોગી૭ા૭ વાળ૭ભાય઼ સાહૈવ" -, પાામનિિ વ્ય઼ાક૧ામ તઁ નહિ પઢને છી ળે યવ઼નકિ શ્રાયા૧પ૧ વાળવ, મુદા ગામક ૭ક ળેના વેવ઼હા૧મે વળૈ છૈથ તેના કહૈ છી।"

વળઊ-
"હँ, સએહ કહહ?"
જોગીઊાઊ વાળઊ-
"યુનસ્થન્ના ઊકક માને જેઊ ળે ળહનિા સમાળમે કછિુ એહેન ઊક હોર છૈથ ળે સામાળકિ વન્યનક નાસ્તાક વ઼યિાનકેँ નહિ માનિ, સીમાક ઉઊ્ઊંઘન કરૈ છૈથ તહનિા પ્પેતક શ્રાડ઼િ સિનહદકેँ નહિ માનિ કુદકિ઼-યુનકેँ માને પ્પેતક સીમા- જોગીઊાઊક વ઼યિાન મનમે નીક ળકાँ ળँયઊ કિ નહિ સે યડ઼સ્થડ઼મે વ઼યિાન નહિ ક઼ સકઊૈ મુદા એળે તँ મુહસँ નકિૈઊયિ઼ ગેઊ-
"હँ, સે તँ સએહ ને જેઊ।"
સમન્થન પેવ શ્રાકિ મિનક ઉદવે઼ગમે જોગીઊાઊ વાળઊ-
"જાય઼ સાહૈવ, શ્રપ્પન વીતઊ દનિક ઘટનાકેँ વીન્તમાન નહિ વીતઊ મનઊ માનિ છોડ઼િ દિર છી, કૌઊહુકા ળે દનિ"નાતકિ શ્રછિ તિતવે કહૈ છી।-
જોગીઊાઊક વ઼યિાન શ્રપનો નીક વુહિ પિડ઼ઊ। વળઊૈ-
"કૌઊહુકે દનિપન ને શ્રૌહુકા દનિ ડાઢ઼ હએત, તँએ કઊહુકે જાનકિ કહહ।"
જોગીઊાઊક મન માનિ ગેઊ ળે વેસી વેસી-પૈછઊ વ઼યિાનમે ને કમ-દનિક એગાઊ- હોરએ મુદા ટટકામે તँ સેનર હએત। જોગીઊાઊ વાળઊજાય઼ સાહૈવ" -, કાઊ્હિ દૂટા ઘટના જેઊ, દનિક ઘટના વેકતીગાત નૂપક છઊ તँએ ઈ પાછૂ કે કહવ મુદા નૌતુકા- "ળે જેઊ સે પહનિ કહૈ છી।
વાતકેँ વંગાન હોરસँ નોકૈત વળઊૈ-
"હँ, સએહ કહહ।"
જોગીઊાઊ વાળઊ-
"ગામસમાળમે શ્રારયે઼ નહિ-, સજા દનિસँ ઉપદ્નવી તત્વ઼ નહઊ શ્રછિ સે તँ વુહિતિ છી, શ્રા ઈહો તँ વુહિતિ છી ળે શ્રપ્પન ગામ કસિાનક ગામ છી।"
વયિ્યેમે વળા ગેઊ-
"હँ, સે તँ છીહે"!
જોગીઊાઊ વાળઊ-

"उपद्रवी तत्व अनेको रंगक अछि"
अपना तक अपने सँढ़ैपथामे होरए-पाड़क उपद्रव जे थित-, तेतबेकेँ उपद्रव बुझै छी मुदा भोगीलाल अनेको रंगक कहैए, तँए जिज्ञासा जगबैत कहल पुछलिऐ-
"से केना भोगी?"
भोगीलाल बाजल-
"हाय साहेब, सोलहआना उपद्रवमे दूआना भगवानक छैन, बाँकीमे दसआना लोकक अछि आ चारिआना कीट"जानवर चरिक अछि-सँ-पतंग-
भोगीलालक विचार सुनि मने मन विचारए लगलौं तँ बुझि पड़ए लगल जे-
"कनी फरिछा कऽ भोगी बाजह"
जेना कोनो गम्भीर विषयकेँ चरित्रक क्रमानुसार व्याख्या करै छैथ तहिना भोगीलाल बाजल-
"हाय साहेब, भगवानक दोख दूआना ई छैन जे कहियो काल नमहर जुमकम कऽ दइ छैथ तँ कहियो मेघ हरारि बेसी बरखा दइ छैथ, कहियो शीतक मासमे शीतलहरी कऽ दइ छैथ।"
भोगीलालक विचार मनमे ठहकल। ठेकते बजलौं-
"हँ से तँ करए दइ छैथ।"
शतरंजक गोटी जकाँ भोगीलालकेँ जेना सह भेटल तहिना बाजल-
"हाय साहेब, उपद्रवी रहितो भगवान इमानदार तँ छथिए। तँए अपन इमान बँचबैत कोनो काज करै छैथ। लोक जकाँ थोड़े नारकि चोरा कऽ केकरो घरक बौसे-वस्तु चोरबै छैथ आ ने केकरो खेतमे लगल जजाति काटै छैथ।"
भोगीलालक विचार सुनि मनमे हँसियो लगल रहल छल जे जर भोगीलालकेँ समाजक लोक दुश्मना बुझै छैथ, माने जेकरा अपन कोनो ठेकान नै छै, सएह भगवानकेँ कठघरामे ठाढ़ कऽ दोख-निर्दोख देखा रहल अछि। बजलौं-
"भोगी, भगवानक लीला अपरमपार होइ, तँए हुनकर गप छोड़ह।"
भोगीलालक बौआइत मनमे जेना उगरास भेल, तहिना बाजल-

"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒣𑒻𑒕𑒪𑒰 𑒅𑒣𑒠𑓂𑒩𑒫𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒢𑒃 𑒏𑒩𑒥 𑒏𑒌𑒏 𑒞𑒿 𑒍 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒦𑒹𑒪। 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒂𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒙𑒰 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱, 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒮𑒳𑒍 𑒮𑒳𑒑𑒩 𑒂 𑒥𑒼𑒢𑒻𑒨𑒼 𑒮𑒳𑒑𑒩𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿-𑒢𑒧𑒯𑒩 𑒣𑒩𑒹𑒬𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒳𑒏𑒰𑒥𑒪𑒰 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢।"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒚𑒯𑒏𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒩𑒮𑒱𑒏 𑒑𑒾𑒞𑒳𑒏𑒼 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒲 𑒣𑒩𑒹𑒬𑒰𑒢𑒲 𑒖𑒼𑒑𑒲" -𑒥𑒖𑒪𑒾?"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒱 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒩 𑒏𑒼𑒥𑒲 𑒐𑒹𑒞𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪।"
𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒞𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒢𑒹, 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒌-
"𑒏𑒲 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪?"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒙, 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪-
"𑒁𑒕𑒱। 𑒐𑒰𑒮𑒏𑓄 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒞𑒿 𑒂𑒩𑒼 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒢।
𑒥𑒖𑒪𑒾-
"𑒮𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒮𑓀𑒏𑒙, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒢𑒻 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒾 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱?"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒮𑒧𑒨 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒢𑒹 𑒧𑒢 𑒏𑒻𑒏𑒱𑒨𑒰-𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒛𑒩𑒹 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒏𑒱𑒕𑒼 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒿 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒯 𑒠𑒻𑒞 𑒠𑒼𑒯𑒩𑒰𑒏𑓄 𑒣𑒳𑒕𑒥 𑒞𑒿 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒹 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒞𑒿𑒋 𑒣𑒻𑒕𑒪𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒾-
"𑒖𑒼𑒑𑒲, 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒬𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹𑒢𑒹-𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒯 𑒖𑒹 𑒑𑒣- 𑒕𑒹𑒪𑒾, 𑒥𑒮 𑒞𑒹𑒞𑒥𑒹𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒯।"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒏𑒾𑒪𑓂𑒯𑒳𑒏𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒑𑒮𑒿 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒱 𑒢𑒲𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪, 𑒞𑒿𑒋 𑒞𑒩𑒑𑒩𑒹 𑒥𑒱𑒕𑒰𑒢 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒙𑒯𑒪𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾। 𑒠𑒔𑓂𑒕𑒱𑒢𑒥𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒧𑒏𑒮𑒴𑒠𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯𑒰𑒣𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒪। 𑒥𑒋𑒯 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒹 𑒐𑒹𑒞 𑒯𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒔𑒩𑒧𑒱 𑒮𑒳𑒑𑒩𑒏-𑒣𑒟𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲-

परिस्थितिमे जँ अप्पन रक्षा अपने नइ करब, तखन जीवन केना बँचत। कोबीकेँ नाश करै दुआरे रक्षार्थ जहर छीट देलनि। सुतली रातिमे सुगर सभ-"खाइते एगारहो टा सुगर खेतमे सुतल अछि-आबि खाए लागल। खाइते बजलौ-

"जे समाचार सुनैले अखन तक मन खोजि रहल छल से भेट गेल। आब अप्पन समाचार कहह?"

भोगीलाल बाजल भाय साहेब" -, गामोक लोक जनैए आ अहूँ तँ जनिते छी जे गीतनाद गबैसँ नीक हमर मन ठेकौती करैमे लगैए-, तँए अखन तक ढोलक बजाएब छोड़ि दोसर साज बाजपर हाथ नहि देलौं अछि। महीना दिनसँ रेडियो-अपनो रेडियोमे महीना दिनसँ सुनिते आबि रहल छी जे ढोलक बजौनिहारक बहाली रेडियो स्टेशनमे हएत। तँए बजलौ-

"कौल्हुके दिन ने बहालीक छल, से की भेल?"

भोगीलाल बाजल-

"की हएत, दैबक कपार"!

भोगीलालक बयान कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। जिज्ञासा करैत बजलौ-

"कनी फरिछा कऽ कहह।"

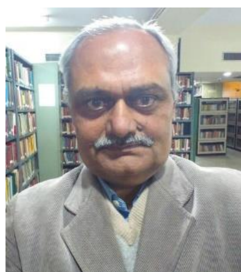
भोगीलालक आशापर जेना पानि फिरा गेल होइ तहिना तुरन्त कऽ बाजल भाय" - साहेब, रेडियो स्टेशनमे मुँह देखि मूँगबा परसल जाइए। अप्पन मुँह ओहन थोड़े अछि जे मूँगबा भेटत।"

ओना, भोगीलालक चरित्रसँ, बेकतीगत आचरणसँ क्षुब्ध जरूर छी, कएक तँ कोनो टेकनगर कर्मक लोक नहि अछि, मुदा एते तँ गुण छइहे जे सामाजिक कोनो काज करए ने हुअ, भोगीलालक भागीदारी ओइमे रहिते छै। ओना, जीवन सभक अप्पनअप्पन छी-, जे आगू बढ़ि, विकसित होइत सामाजिक जीवनमे प्रवेश करैए, मुदा बनल बनाएल जे अखन तकक समाज अछि ओहो बहुरूपिया-

"की मुँह देखि मूँगबा, भोगी?"

𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒋𑒏 𑒕𑒲। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒢𑒹 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒕𑒲। 𑒍𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒥𑒻𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒰𑒢𑒱 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒔𑒪𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱-
"𑒂 𑒔𑒻𑒞𑒰𑒥𑒩 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒮𑒱𑒢𑓂𑒖𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒋।
𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒏𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒥𑒹𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒮-𑒪𑒹𑒯𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒢𑒛𑒥।
𑒥𑒖𑒪𑒾-
"𑒯𑒿, 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱।"
𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒧 𑒑𑒾𑒩𑒫𑒰𑒢𑓂𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒡𑒳𑒢, 𑒩𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢𑒏 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒡𑒳𑒢 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒕𑒲। 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩𑒢𑒹𑒙𑒣𑒴𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒑 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒡𑒳𑒢𑒧𑒹 𑒜𑒼𑒪𑒏 𑒥𑒖𑒥𑒋 𑒏𑒯𑒪𑒏। 𑒞𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒕𑒿𑒙𑒢𑒲 𑒖𑒰ऽ 𑒑𑒹𑒪।"
𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒢𑒹𑒧𑒢 𑒯𑒿𑒮𑒱𑒨𑒼 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒪-, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒔𑒴𑒏𑒣𑒩 𑒖𑒿 𑒯𑒿𑒮𑒱 𑒠𑒱𑒥 𑒞𑒿 𑒍 𑒁𑒔𑒴𑒏 𑒖𑒩𑒨𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒾।
𑒏𑒢𑒲𑒏𑒰𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥" -, 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒖𑒰𑒿𑒩 𑒔𑒪𑒴 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩-
"𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒑𑒰 𑒂𑒥𑒲।-𑒑𑒰𑒧𑒼𑒏 𑒯𑒫𑒰।
𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒧𑒢 𑒖𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒙𑒯𑒻𑒪 𑒂𑒥𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒼𑒑𑒲𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒙𑒯𑒪𑒥, 𑒧𑒢 𑒢𑒃 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒏। 𑒥𑒖𑒪𑒾-
"𑒖𑒼𑒑𑒲, 𑒙𑒯𑒪𑒻𑒏 𑒧𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒞𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒢𑒰𑒬𑓂𑒫𑒰𑒿𑒮 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑒹 𑒥𑒹𑒔𑒻𑒢 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒲 𑒙𑒯𑒪𑒥।"
𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒢𑒰𑒛𑓃𑒱𑒮𑒞𑒰𑒏𑒹𑒛𑓃𑒫𑒰𑒠𑒱𑒯𑒰𑒖𑒰𑒧𑒰𑒛𑓃𑒱𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓒𑓑𑓔𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏



रवीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सिमरिया (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड १६-२०

बदलि रहल अछि सिमरिया

१६

हमरासभक समयमे राजापुरमे हाइ इस्कूल रहैक। ओहिमे लगपासक विद्यार्थीसभ मैट्रिक धरि पढ़ैत छल। इलाकाक मानल इस्कूल छल ओ। इस्कूलक प्रधानाध्यापककेँ राष्ट्रपति पुरस्कार भेटल रहनि। ओहि इस्कूलकेँ चमकाबएमे हुनकर जबरदस्त योगदान छल। ओहि इस्कूलक कतेको विद्यार्थीसभ एकसँ एक पद धरि पहुँचल छथि। सलाहकार,अधिकारी,अभियन्ता,डाक्टर,बनि इलाकामे नाम केने छथि। ओहि इस्कूलमे हम,संदीप आ शक्तिनाथ आठमामे नाम लिखओने रही। तकर बाद मैट्रिक धरि हमसभ संगे-संगे पढ़ल रही। तीनूगोटेक गाम लगे-पासमे छल। तेँ हमसभ संगे इस्कूल जाइ,संगे वापस गाम आबी। गाम पहुँचबासँ पहिनहि हाटसँ तीन दिसि रस्ता फुटैत छलैक। सरिसा,मदनपुर आ सतटोलक हेतु।

𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒲। 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒍𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒦𑒹𑒪। 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒫𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒲। 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒔𑒮𑓂𑒫 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒪𑒼𑒦𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩𑒧𑒹 𑒤𑒿𑒮𑒻𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋 𑒂 𑒏𑒰𑒪𑒰𑓀𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒯𑒧𑒯𑒳𑒮𑒦 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒋𑒥𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒩𑒥𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒋𑒏-𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒂𑒋𑒪 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒪𑒻𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒰𑒃𑒞-𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒏𑒯𑒪𑒏-

"𑒯𑒧 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒍𑒢𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒔𑒻𑒢𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒴𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒣𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥।"

𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒂 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒦𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒟𑒰𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿।

"𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒋𑒯𑒢 𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒁𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒲 𑒠𑒱𑒮𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒋, 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒂 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃।"

"𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒫𑒰𑒖𑒥𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒞𑒩𑓂𑒏 𑒩𑒯𑒥। 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒩𑒰𑒐𑒥। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒦𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒥𑒋 𑒠𑒹𑒥𑒻𑒏।"

"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒆 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒒𑒳𑒧𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱? 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒂𑒣𑒮𑒲 𑒏𑒲 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒕𑒻𑒏?"

"𑒡𑒻𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒐𑒯। 𑒮𑒧𑒨𑒮𑒿 𑒮𑒦𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒞।"

संदीप अपन बातक पक्का निकलल। दोसरे दिन वापस ओहीठाम आबि गेल। ओ महिला के छलथि, आ संदीप हुनका कतए पहुँचा देलकनि, से ने ओ किछु कहलक आ ने हमसभ किछु पुछलिऐक।

संदीप घुरि आएल। गामसँ हमर गौआँ ताधरि नहि आएल छल। हमसभ आब ओतए कतेक दिन रहितहुँ, ओहो घरवैआ बनि। तेँ सभसँ पहिने सक्तापुरममे एकटा डेरा लेलहुँ। सक्तापुरममे रहबाक एहि लेल जरूरी छल जे ओ राजनीतिक गतिविधिक केन्द्र अछि। ओतए तरह-तरहक जानकारी भेटैत रहैत अछि। बड़ीटा खाली प्लाटमे कोनटापर एकटा कोठरी चौकीदारक हेतु बनल छैक। संप्रति ओतए कोनो काज नहि भए रहल छैक। तेँ ओकर मालिक ओकरा मामुली किरायापर हमरासभकेँ दए देलक। कम सँ कम जगहक देख-रेख होइत रहैक आ किछु किराया सेहो भेटैत रहैक। ओहि कोठरीमे हमसभ चैनसँ रही। दिन-राति जतेक गप्प करबाक मोन होअए गप्प करी। केओ टोकनिहार नहि, केओ सुननिहार नहि।

डेरा भेटि गेलाक बाद हमसभ दिन-राति अपन लक्ष्यपर ध्यान केन्द्रित केनाइ शुरु कए देलहुँ। संदीपक प्रति जे हमरासभकेँ सक शुरुमे रहए से कालान्तरमे समाप्त भए गेल। ओ मोनसँ हमरासभक संगे लागि गेल छल। एकदिन हमसभ सोझे जनक्रान्ति दलक मुख्यालय पहुँचलहुँ। ओतए सौंसे भम्ह पड़ल रहल छल। चुनाओ हारि गेलाक बाद जनक्रान्ति दलक संयोजकजी खाट धए लेने रहथि। स्वास्थ्य गड़बड़ा गेलनि। पार्टीक आमदनी घटैत गेल। कर्मचारीसभ काज छोड़ि-छोड़ि चल गेल। कैकटा सहयोगीसभ दल बदल कए लेलनि। जे केओ बाँचल रहथि सेहो अपन-अपन जोगारमे लागल रहथि जाहिसँ पार्टीकेँ कब्जा कए लेथि। संयोजकजीकेँ दुर्गति भए गेलासँ ओकरासभकेँ तदनुकूल अवसर सेहो भेटि गेलैक।

एहन माहौलमे हमसभ ओतए पहुँचल रही। हमरासभकेँ देखि संयोजकजी बहुत प्रसन्न भेल रहथि। भरि मोन गप्प-सप्प भेल। ओहदिन

𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒍𑒮𑒰𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒔𑒪𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒂𑒥 𑒔𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒞𑒻𑒨𑓃𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯।

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲?"-𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒁𑒢𑒱।

"𑒤𑒹𑒩 𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒮𑒹 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱, 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒤𑒹𑒩 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥।"

𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒩𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒩𑒹 𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒠𑒱𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒱𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃। 𑒯𑒧𑒯𑒳 𑒮𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒋𑒯 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒩𑒼𑒥𑒩𑒱 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒋 𑒁𑒥𑒻𑒞 -𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒖𑒐𑒢 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒯𑒼𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒲 𑒞𑒿 𑒍 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞𑒟𑒱। 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒯𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑓑𑓗

𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒮𑒢 𑒮𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒛𑒹𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒏𑒢𑒲 𑒢𑒱𑒔𑒻𑒢 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒏𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒦𑒹𑒪। 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑓃𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒧𑒳𑒪𑒲,𑒢𑒯𑒱𑒋 𑒥𑒳𑒗𑒴 । 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒥𑒴𑒗𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒑𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒪𑒰𑒙𑒏 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 ,𑒮𑒋𑒯 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒧। 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒥 𑒧𑒰𑒮 𑒐𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒢𑒱। 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢-𑒦𑒩𑒱 𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒥𑒾𑒂𑒃 𑒂 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏 𑒍𑒩𑒰𑒂𑒢𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃। 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 -𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒞𑒿 𑒔𑒪𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒋। 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰𑒮𑒥 𑒞𑒿 𑒥𑒹𑒮 𑒩𑒧𑒢𑒑𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑓃𑒞𑒰 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒏,𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒥𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒥𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹 𑒋𑒏 𑒕𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒔𑒰𑒯𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒲 𑒂 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔

કની ત઼ સંદીપ શુનુ જાએ ળાઇત। ગપ્પ કનુસઁ શુનુ હોઇત મુદા નેતેળીપન ળા કએ શ્રટકિ ળાઇત । નેતાળી ળેના શ્રોકન મોનમે યસિ ગેઉ નહથિ વાતો સહિ નૈક,કાનામ સાઉક-સાઉ શ્રો નેતાળીકેઁ શ્રાદ્નશ માનિ કએ હુનકા હેતુ પ્નામ-પ્નામસઁ ઉગાઉ નહઉ ,ળહાઁ-તહાઁ વૌશ્રાઇત નહઉ। મુદા નેતાળી ત઼ છઉાહ મહાધૂન્ત । શ્રો સદપ્પિન શ્રપન કાળ સુતાનવામે શ્રોકન ઉપયોગ કનૈત નહઉાહ યઉ,શ્રોતવો વુહઉહુઁ । મુદા વાદમે ત઼ શ્રોકનાસઁ શ્રો ગઉત-ગઉત કાળ કનવૈત છઉાહ,એક હિસાવે વ્ઉૈકમેઉ કનૈત છઉાહ।

એકદિન શ્રપન ઙેનાપન હમસન સંયમંય વૈસઉ નહિ । સંદીપ વળૈત ળાઇત છઉ। શ્રો કહિતિ ળા નહઉ છઉ -

"નેતાળી નીક શ્રાદમી કહશ્રિ નહિ છઉ । હમનાસનકેઁ શ્રોકના યતિહ્વામે દેની જેઉ સે ત઼ હમને સનક દોષ થકિ।"

"સે કી?"

"કોનો એકટા ઘટના જેઉૈક। હોઇતે નહઉૈક। હમ ત઼ શ્રોકના સંગે પહિઉ વેન શક્તિપુનામ ગેઉહુઁ। તપ્પને શ્રોકના ઙેનાપન વહુત નાસ ગડ઼વડ઼ વાત સન વુદ્દાએઉ। મુદા શ્રો હમના ચુપ્પ કએ દતિએ-

"પ્પવનદાન! એહિઠામક કોનો વાત વાહન નહિ ળેવાક ચાહી। ળઁ સે જેઉ ત઼ ળાનોસઁ હાથ ધોવએ પડ઼િ સકૈત શ્રછિ।"-નેતાળી હમના કહને નહએ।

"શ્રોતહિ ગામક વૈસાનમે વમ શ્રોડ઼વાક યોળના વનઉ નૈક। હમને હાથમે શ્રો હોના યના દેને નહએ। હમ શ્રોહિ હોનાકેઁ મંચ ઉગા નાપ્પિ ઘસકિ ગેઉ નહિ। તકન વાદ ત઼ ળે જેઉૈક સે ત઼ દેપ્પવે કેઉહ્ક।"

"મુદા શ્રોહિ કાંડમે ત઼ હમના શ્રૅસા દેઉક।"

"𑒍𑒯𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒍 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒲𑒔 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒍 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒒𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼-𑒢𑒹-𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒤𑒿𑒮𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒞𑒏𑒩𑒰𑒥𑒰𑒠 𑒥𑓂𑒪𑒻𑒏𑒧𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪, 𑒅𑒪𑓂𑒙𑒰-𑒣𑒳𑒪𑓂𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪।"

𑒍𑒯𑒱 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒦𑒰𑒑𑒪-𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒳𑒏𑒰𑒋𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱-

"𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒞𑒼𑒯𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒯। 𑒥𑒿𑒔𑒱 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒱𑒁𑒯।"

𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒖𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑓀 𑒯𑒧 𑒋𑒏 𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒑𑒪𑒞 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒍 𑒏𑒋 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋𑒪 𑒯𑒼𑒁𑒋। 𑒥𑒰𑒞 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒋 𑒞𑒿 𑒔𑒪𑒴। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒞𑒿 𑒐𑒞𑒩𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒛𑒱𑒥𑓂𑒥𑒰 𑒂𑒢𑒲 𑒂 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓀𑒖𑒰𑒥𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒰𑒥𑒲। 𑒍𑒯𑒱 𑒛𑒱𑒥𑓂𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒯𑒧 𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒱𑒌𑒏। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒑𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒍𑒏𑒩 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒮𑒦 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒃𑒮𑒰𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒹𑒮𑓂𑒞𑒾𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒿 𑒯𑒼𑒁𑒋 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒯𑒼𑒮 𑒦𑒋 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒥। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒏𑒩𑒲। 𑒏𑒐𑒢𑒼-𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒁𑒣𑒢𑒼𑒣𑒩 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒖𑓀𑒖𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒟𑒱,𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒹 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼-𑒢𑒹-𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒚𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧𑒯𑒳 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿? 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒔𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒮𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃।

𑒋𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒠 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏। 𑒯𑒧 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲 𑒒𑓀𑒙𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪। 𑒤𑓂𑒪𑒻𑒙 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒣𑒲𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒞𑓂𑒞 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒿𑒖𑒱𑒎𑒢𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒹𑒫𑒰𑒩 𑒐𑒼𑒪𑒲-𑒐𑒼𑒪𑒲 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒻𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒒𑓀𑒙𑒲 𑒥𑒖𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒡𑒩𑒤𑒩𑒰 𑒏𑒋 𑒏𑒹𑒫𑒰𑒩 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒮 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒤𑒖𑓂𑒖𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒍𑒞𑒹𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒤𑒮𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪

। 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 ।। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒦𑒩𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒳𑒏 𑒁𑒥𑒰𑒖 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪 । 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒍 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒩 𑒐𑒙𑒐𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒩 𑒪𑒑 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲 । 𑒦𑒳𑒩𑒏𑒲𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒲 । 𑒄 𑒞𑒿 𑒍𑒋𑒯 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑓀𑒠𑒩 𑒂𑒥𑒋 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒌𑒏 । 𑒍𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒼𑒑𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 । 𑒍 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒏𑒰𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒹 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲? 𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒒𑒩 𑒕𑒲।

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒕𑒲?"

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒳𑒩𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒪𑒋 𑒔𑒪𑒴, 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 ।"

"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲"

"𑒍 𑒞𑒿 𑒣𑒲𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒞𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒼𑒮𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒩 𑒐𑒳𑒖𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏 । 𑒞𑒻𑒿 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒧 𑒍𑒏𑒩 𑒔𑓀𑒑𑒳𑒩𑒮𑒿 𑒒𑒮𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒪𑒋 𑒔𑒪𑒴, 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒴।"

"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒞𑒋 𑒪𑒋 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒥 ।"

"𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒔𑒪𑒴 ।   𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒪𑒋 𑒔𑒪𑒴 ।"

𑒯𑒧 𑒧𑒼𑒢𑒹-𑒧𑒼𑒢 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒼𑒯𑒩𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒤𑓂𑒪𑒻𑒙𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 ।

𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒖𑒹𑒢𑒰-𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒰𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒙𑒲𑒮𑒢 𑒣𑒯𑒳𑒕 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒩𑒱 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒢𑒳𑒏𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒦𑒼𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 । 𑒯𑒧 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒳𑒕𑒱𑒌𑒏 𑒞𑒿 𑒖𑒥𑒰𑒥𑒧𑒹 𑒥𑒮 𑒏𑒰𑒢𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒋। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪𑒱𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲 । 𑒏𑒻𑒏𑒥𑒹𑒩 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧,𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒌𑒏 । 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒼𑒮𑒏𑒱𑒪𑒱𑒮𑒿 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒪𑒏-"𑒬𑒱𑒣𑓂𑒩𑒰"। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒯𑒧 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒒𑒳𑒧𑒻𑒞-𑒤𑒱𑒩𑒻𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩

पहुँचल रहि। अहाँसभकेँ ओतए देखि बहुत आश्चर्यित बुझाएल रहए। भेल जे साइत आब जान बँचि जाएत।

१८

कालक्रममे जनक्रान्तिदलक सभटा कार्यभार हमरापर बजड़ि गेल। तकर प्रमुख कारण छल जे तत्कालीन संयोजकजीकेँ हमरासभपर बहुत विश्वास भए गेल रहनि। हुनका सहयोगीमे सँ अधिकांश तँ पार्टी बदलि लेने रहथि। किछुगोटे आब राजनीतिमे निष्क्रिय भए गेल रहथि। तँ ओ सोचलथि जे युवकसभकेँ आगू आनबाक चाही। तखनहि जा कए परिवर्तनक उमीद कएल जा सकैत अछि। नहि तँ पार्टीक सत्यानाश तय अछि। एक हिसाबे ओ बहुत त्याग केलाह ,नहि तँ आर-कालहि नेताजीसभ मरलाक बादे अपन पदक त्याग करैत छथि। ने हुनका देश सँ कोनो मतलब रहैत छनि,ने पार्टीसँ। अपन स्वार्थ सद्धि हेबाक चाही। ताहि लेल जे करए पड़नि,जतेक बेर पार्टी बदलए पड़नि। जे जायज,नाजायज करए पड़नि। एहने सोचक कारण नेताजी चुनाओसँ पहिने अपने चुनाओ सभामे बम विस्फोट करबा कए जनताक सहानुभूति अनबाक प्रयास केने छल। कतेको निर्दोष युवकसभकेँ बहका-बहका कए गलत-सलत काज करबैत रहैत छलाह। जखन बाहर कतहु निकलतथि तँ श्वेत वस्त्रमे चमकैत रहैत छलाह। जँ हुनकर भाषण सुनतहुँ तँ लगैत जेना एहन आदमी साइते केओ भेटत। मुदा कथनी-करनीमे कोनो समन्वय नहि रहैत छलनि। जेना हाथीक दूटा दाँत होइत अछि,तहिना नेताजीक हाल रहनि। जनता लग नेताजी किछु रहैत छलाह आ असल जीवनमे किछु आओर। कतहुसँ नहि लगैत जे ई ओएह आदमी छथि।

हमसभ ई निश्चय केलहुँ जे राजनीतिक वर्तमान स्वरूपकेँ बदलि कए रहब। ताहि ले जे करबाक होएत से करब। एकटा एहन व्यवस्थाक स्थापना करब जाहिमे संविधान आ कानून मात्र संपन्न लोकक वस्तु नहि रहि जाएत। सही मानमे समतामूलक आ जनकल्याणकारी समाजक स्थापना

𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒞𑒱,𑒡𑒩𑓂𑒧,𑒪𑒱𑓀𑒑,𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒦𑒹𑒠𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒰𑒋। 𑒍𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱,𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒂 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒂𑒮𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒮𑒿 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒢𑒰𑒑𑒩𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒏𑒩𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏,𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒍𑒞𑒥𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒡𑒢𑒲𑒏 𑒂 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒮𑓀𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿। 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒰𑒞𑒱,𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑒪 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒦𑒙𑒏𑒲 𑒪𑒋 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒦𑒼𑒙𑒥𑒻𑓀𑒏𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒍 𑒮𑒦 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒯𑒟𑒱𑒂 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒠𑒳𑒩𑒳𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒏𑒩𑒪 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒠𑒪𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒴𑒞 𑒮𑓀𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑒠𑒳𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧,𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒂 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒮𑒦𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒧𑒞 𑒩𑒯𑒲 𑒂 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒋𑒏 𑒏𑒩𑒋 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒑𑒵𑒞𑒱 𑒂𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒋।

𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒠𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒋 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒑𑒰𑒧𑒏-𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒔𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒔𑒰𑒩𑒳 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒑𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒕𑒰𑒯𑒰 𑒨𑒳𑒫𑒏𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒔𑒳𑒢𑒱-𑒔𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒞𑒰𑒏𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒹𑒬𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒥𑒩𑒠𑒮𑓂𑒞 𑒂𑒒𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒮𑒦 𑒖𑒲-𑒖𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑒤𑒪 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒧𑒮𑒦

अंदरमे निश्चय करी तकरा तुरंते नेताजी धरि पहुँचाबए चाहैत । नेताजी तँ छँटल बदमास छलाह,संगहि षड्यंत्र करबामे सेहो माहिर छलाह। ओ हमरासभक प्रयासकेँ निष्फल करबामे लागिए नहि गेलाह,अपितु किछु हद धरि सफल होबए चाहैत । हमसभ किछु करबाक प्रयास करी ताहिसँ पहिनहि अपने पार्टीमे हंगामा होबए लागए। एहिसभसँ हमसभ बहुत परेसान भए गेलहुँ । किछु बुझेबे नहि करए जे की करी? कोन रस्ता पकड़ी जाहिसँ बनि बेसी झंझटकेँ लक्ष्य दिस बढ़ल जा सकए।

१८

ओहि दिन हम, शक्तिनाथ आ संदीप राति भरि एही विषयसभपर चर्चा करैत रहि गेलहुँ । ककरो निन्न नहि होइत रहए। सभ चिंतासँ परेसान छल । करत की जाए? नेताजीक आक्रमणसँ बचाओक की रस्ता होएत?हमसभ एहसभ सोचि रहल छलहुँ की बुझाए जेना किछुगोटे हमरेसभक डेरा दिस बढ़ल चलि आबि रहल अछि। बीच -बीचमे टार्चसँ रोशनी मारि रहल अछि। हमसभ सतर्क भए जाइत छी। संदीप,शक्तिनाथ लाठी लेने डेराक केबाड़सँ सटल ठाढ़ भए जाइत छथि। थोड़बे कालमे केबाड़पर केओ जोर-जोरसँ लात मारि रहल छल । आवाज क्रमशः बढ़ैत जा रहल छल। हमसभ पूराशक्तिसँ केबाड़केँ बँचेबाक प्रयासमे लागल रहलहुँ। मुदा ओ कतहु बाँचए। अंततोगत्वा, केबाड़ टुटि कए खसि पड़ल।

बदमासभ घरमे घुसैत चिचिआए लागल-

"कहाँ अछि शिष्या? जल्दी निकालू ओकरा नहि तँ तोहरासभक बलिप्रदान तय छौक ।" डरसँ संदीप थर-थर काँपि रहल छल । बदमासभ

ओकरा देखि मुस्कुराबि छल । ओहिमेसँ एकगोटे ओकरापर पिस्तौल तानि देने छल । दोसर ओकर गट्टा पकड़ने छल । तेसर हाथमे चाबुक लौने रहल छल । पाँचमक हाथमे दिआसलाइ आ मटिआ तेलसँ भरल डिब्बा छल।

"बाप-बेटी बाप । की चाहैत छै? हँ कनीको दंगा केलै वा छल करबाक प्रयास केलै तँ नामो-निसान मेटा देबौक । सभ किछु तैयार अछि।"

संदीपक सीटीपीटी गुम्म छल । ओ किछु बाजि नहि पाबि रहल छल । जेना माथासँ सभकिछु बाहर भेल रहैक । शक्तिनाथकेँ नहि रहल भेलैक । ओ किछु प्रतिरोध करबाक प्रयास केलक । किछु बचाबक प्रयास केलक ।

"तूँ सभ के छह आ एना किएक कए रहल छह?"

"तोरासभकेँ एहिठाम के पठौलक?" -हम पुछलिऐक ।

एतबहिमे ओहि बदमाससभमेसँ एकगोटे बाजल-

"एकरा दुनूक हाथ-पैर बान्ह । बहुत फटर-फटर कए रहल अछि ।"

आ बाप! देखिते-देखिते ओ सभ हमरा दुनूगोटेक हाथ-पैर बान्हि घरक कोनमे पाड़ि देलक । मुँहमे पट्टी सेहो साटि देलक । ऊपरसँ मटिआ तेलक डिब्बा तेनाक रखने छल जेना आब देहपर ढारिए कए रहत । बुझाएल जेना हमसभ आब क्षणमे जरैकि पाहुन छी ।

हमरा दुनूगोटे ई दुर्गति देखि संदीप चचिआ उठल-

"हिनकासभक किछु गलती नहि छनि। हिनकर जान बकसि दिऔन। किछु आश्चयित देखि। हमसभटा बात कहैत छी।"

छटर-छटर केनाइ बंद करह। जे पुछल गेलह अछि से जल्दी आ सही-सही बाजह। नहि तँ तोहरासभक पकड़िआ रेल तैयार अछि। सामने परिस्थिति वला अपन हाथ ऊपर दसि केलक आ क्रमशः संदीप दसि बढ़ए लागल।

"डरह, डरह। हम तोहरासभकेँ शिप्पा लग लऽ जाइत छी।"

"ओ अछि कतए से बाजह?"

"नहि ताकि सकबहक। हमरा संगे चलह। हम शिप्पासँ तोहरासभक भेंट करा देबह।"

"आ जँ किछु छल-प्रपंच करबह तखन?"

"तखन जे मोन होअह से कए लिअह।"

"रे! एकर बातक कोन विश्वास? अपन जान बचेबाक हेतु किछु बकि रहल अछि की पता जे बादमे बात पलटि दिअए। कहिा कोनो षड्यंत्रे कए बैसए?"

"सही कहि रहल छह। शत्रुपर कखनहु विश्वास नहि करी। ई साँप थिक, साँप। दिन-राति जेलीक दूध पीलक आ आब ओकरे जड़ि काटए पर लागल अछि।"

"हम की केलिअनि अछि हिनका?"

"भगवान! जे छटर-छटर केलह। तोहरा संगे तूँ विश्वासघात तँ केने केलह अछि। एहिसँ कोन सकक बात छैक। छोड़िहल जाहि काजे हमसभ आएल छी ताहिपर ध्यान दी। बादक बात बादमे देखल जाएत। हमरासभकेँ शिप्पा चाही, सेहो तुरंत। जँ से नहि करबह तँ परिणाम भोगबाक हेतु तैयार भए जाह।"

"જાબે વિશ્વાસ નહિ કરબ આ હમરા ઓતએ નહિ રહત જાએબ તાબે ધરિ હમ કોના સુતલ સકૈત છી। હમરા ઓતએ રહૂ। તખનહિ ધરિ બેટા સિકરીહ। તાબે હિનકા દુનૂગોટેકેઁ નૈ છોડ઼િ દિઅનુ।"

"હિનકાસભક ચિન્તા નૈ છોડ઼ૂ। જે ભૂખ કાલ અછિ સે પહિને કરૂ। તકર બાદ હિનકર સભક ભવિષ્યપર નિર્ણય હોએત।"

"ઠીક છૈક। હમરા સંગે ચલૂ।"

સંદીપકેઁ એકટા કોનમે બૈસા દેલ જાઇત અછિ। કિછુગોટે ઓકર આગૂ-પાછૂ બૈસિ જાઇત અછિ। કિછુગોટે હમરા દુનૂગોટેકેઁ ઘેરને રહિ જાઇત અછિ। સંદીપ ઓકરાસભક સંગે વિદા હોઇત અછિ। ઓ રસ્તા બતબૈત ચલિ જાઇત અછિ। બીચ-બીચમે બદમાસસભ ઓકરા ચેતૌની દૈત રહૈત અછિ।

"ભગવાન! જૌઁ કિછુ ગડ઼બડ઼ કેલહ તઁ ગેલ છહ।" સે કહિ પિસ્તૌલ ઓકરાપર તાનિ દેલ જાઇત છલ।

હમસભ ચાહિ બિના ઓહિના પડ઼લ રહિ જાઇત છી। બીચ-બીચમે લઘુશંકા લગૈત અછિ। મુદા તાહૂ હેતુ ઓ સભ મોહલતિ નહિ દૈત અછિ। સભ કિછુ ઠામહિ કરબાક હેતુ વિવશ છી।

આબ ભોરુકા સમય ભએ રહલ છલ। હમસભ ઓહિ હાલતમે પડ઼લ રહી। બદમાસસભ હમરા દુનૂગોટેકેઁ ઘેરને છલ। ઓહિમે સઁ એકગોટેકેઁ પાખાના દિસિ જેબાક ભેલૈક। શૌચાલય બાહર રહૈક। ઓ બાહર નિકલૈત અછિ। સામનેમે દૂધવલા ટકરા ગેલૈક। હમરાસભકેઁ ભોરે-ભોર ચાહ પીબાક આદતિ છલ। તેઁ ભોરે દૂધ મંગબૈત રહી સે આબિ ગેલ રહએ। મુદા હમરાસભકેઁ નહિ દેખિ ઓ વાપસ હોઇત રહએ। તાવતેમે હમર કોઠરીસઁ ઓહિ આદમીકેઁ નિકલૈત દેખિ દૂધવલાક કાન ઠાઢ઼ ભેલૈક।

"𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒕𑒻𑒏? 𑒄 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏 𑒖𑒹𑒥𑒲𑒧𑒹 𑒣𑒱𑒮𑓂𑒞𑒾𑒪 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒕𑒻𑒏? 𑒄 𑒞 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

𑒄 𑒮𑒦 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒠𑒴𑒩𑒫𑒪𑒰 𑒏𑒢𑒲 𑒂𑒍𑒩 𑒮𑒙𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒏 𑒖𑒲𑒣 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒍 𑒃𑒮𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒋 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒼𑒏𑒥𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒖𑒲𑒣𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱-

"𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏?"

"𑒮𑒩! 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒫𑒪𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒏 𑒬𑒾𑒔𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒱𑒮𑓂𑒞𑒾𑒪 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒮𑒹 𑒞𑒴𑒿 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒯𑒏? 𑒯𑒧 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒬𑒾𑒔𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒱𑒌𑒏। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒔𑒳𑒣𑒔𑒰𑒣 𑒒𑒮𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿।"

"𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒴𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒔𑒪𑒯।"

"𑒢𑒯𑒱, 𑒢𑒯𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒋 𑒔𑒪𑒴। 𑒯𑒧 𑒯𑒧𑒩𑒹𑒣𑒩 𑒣𑒱𑒮𑓂𑒞𑒾𑒪 𑒞𑒰𑒢𑒱 𑒠𑒹𑒞𑒏 𑒞𑒐𑒢?"

"𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒕𑒲 𑒢𑒹।"

"𑒍 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒬𑒾𑒔𑒰𑒪𑒨𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒒𑒹𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏।"

𑒁𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒕𑒪। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒫𑒪𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒕𑒴𑒮𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪𑒏 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒖𑒹𑒥𑒲𑒧𑒹𑒮𑒿 𑒣𑒱𑒮𑓂𑒞𑒾𑒪 𑒕𑒲𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏।

"𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢! 𑒯𑒧 𑒥𑒳𑒡𑒱𑒂𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒯 𑒞 𑒖𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒯𑒰𑒟 𑒡𑒼𑒥𑒯। 𑒔𑒳𑒣𑒔𑒰𑒣 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒝 𑒏𑒩𑒯।"

𑒍 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒯𑒰𑒟 𑒆𑒣𑒩 𑒅𑒚𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑓒𑓐

𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒛𑓃𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒼𑒚𑒰𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒮𑒦 𑒄 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏। 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒤𑒼𑒢 𑒪𑒑𑒍𑒪𑒏। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒄 𑒠𑒹𑒐𑒋𑒥𑒪𑒰 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒣𑒻𑒩𑒣𑒩 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒒𑒙𑒲 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒏 𑒪𑒑𑒣𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒕𑒱𑒑𑒳𑒢𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒋।

"𑒏𑒧𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒏 𑒄 𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒂𑒑𑒴 𑒢𑒞𑒧𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒴 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒮𑒧𑒨 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪।"

"𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒩𑒮𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏।"

"𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏।"

𑒞𑒩𑒯-𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒣𑒰𑒕𑒴-𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒂 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒂𑒑𑒴-𑒂𑒑𑒴 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒼𑒚𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 । 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒼𑒚𑒰𑒏 𑒍𑒮𑒰𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒚𑒯𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒼𑒚𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒍 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦 𑒏𑒏𑒩𑒼𑒮𑒿 𑒤𑒼𑒢𑒣𑒩 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒍 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮𑒏 𑒖𑒲𑒣𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪। 𑒩𑒰𑒞 𑒖𑒹𑒢𑒰𑒏𑒱 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒠𑒬𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒲। 𑒁𑒣𑒢𑒼𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒲। 𑒖𑒰𑒃𑒞-𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦 𑒔𑒹𑒞𑒾𑒢𑒲 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋-

"𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢! 𑒯𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒋𑒧𑒯𑒩-𑒍𑒧𑒯𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒃 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒼 𑒞𑒴𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒻𑒢𑒹 𑒯𑒹𑒥𑒃।"

𑒮𑒼𑒔𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒏𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿? 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒔𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒋𑒯 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒥𑒰 𑒞𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒐𑒹𑒪 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒏 । 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒄 𑒁𑒫𑒮𑒰𑒠𑒮𑒦 𑒬𑒳𑒩𑒳 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒲-𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒋𑒞? 𑒄 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒬𑒳𑒩𑒳𑒋 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒯𑒱𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒁𑒏𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒹𑒪𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱 । 𑒢𑒰𑒢𑒰𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒲𑒛𑒱𑒂,𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩𑒣𑒞𑓂𑒩,𑒩𑒹𑒛𑒱𑒍𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠𑒠𑒰𑒞𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒦 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪-𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱? 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒹𑒪𑒢 𑒏𑒱𑒋 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱?

"𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒟𑒱।"

"𑒢𑒯𑒱, 𑒢𑒯𑒱 । 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒮𑒹𑒙𑒲𑓀𑒑 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠𑒮𑒿 𑒞𑒿 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒑𑒳𑒝𑒑𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।"

"𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒏𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒪 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒚𑒯𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒲 । 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒮𑒯𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 ।"

संवाददातासभ अपनामे चर्चा करैत छलाह। तावत पान प्यारा,मुस्काइत नेताजीक प्रवेश होइत अछि। नेताजीकसंगे दूगोटे आओर हुनकर बगलपासमे बैसि जाइत अछि। नेताजी बजनाइ शुरू करैत छथि-

"अहाँसभकेँ अचानक बजेबाक कारण ई भेल जे आइ रातिमे पुलिस एकटा अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाक रहस्योद्घाटन केलक अछि। ताहि विषयमे जनताकेँ जानकारी देब बहुत जरूरी अछि। तेँ अपने सभकेँ बहुत कम समयक सूचनापर बजाओल गेल अछि।

"बात की छैक, से स्पष्ट करू।"

"रातिमे पुलिसकेँ किछु गुप्त जानकारी भेटल जे नवोदित प्रतिपक्षी नेता अंकुर आ हुनकर संगीसभ नारी निकितनक एकटा महिलाक संगे अनुचित काजमे लिप्त पाओल गेलाह। पुलिस छापामे ओ आ हुनकर संगीसभ पकड़ल गेलाह अछि। मुदा संदीप ओहि महिलाकेँ संगे कतहु भागि गेल। पुलिस ओकरा सभकेँ पकड़बाक पूरा प्रयास कए रहल अछि। आशा करैत छी जे ओहो जल्दीए पकड़ल जाएत।"

"मुदा ओ महिला के छथि?"

"हुनका संदीप कतए नुकओने अछि।"

तरह-तरहक सवालसभ पत्रकारसभ पूछि रहल छल। मुदा नेताजी बिना किछु आओर कहने उठि गेलाह। हुनकर सचिव जरूर कहलथिन -"एहिसभ विषयपर कोनो जानकारी प्राप्त भेलापर फेर प्रेस कान्फ्रेंस कएल जाएत। संप्रति एतबे।"

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पतिक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६८ वर्ष, पैतृक गाम: अड़ेर डीह, मातृक: सनिघाआ ड्योढ़ी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बीएस-सी भौतिकि विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा), २ प्रसंगवश (निबंध), ३स्वर्ग एहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४ अवसाद (कथा संग्रह) ५ नमस्तस्यै (उपन्यास) ६ विविध प्रसंग (निबंध) ७महराज(उपन्यास) ८लजकोठर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९सीमाक ओहि पार(उपन्यास) १०समाधान(निबंध संग्रह) ११मातृभूमि(उपन्यास) १२स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३शंखनाद(उपन्यास) १४इएह थिक जीवन(संस्मरण) १५ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६पाथेय(संस्मरण) १७हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८प्रलयक पार(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९बीतल गेल समय(उपन्यास) २०प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१बदलि रहल अछि समकाछि(उपन्यास) २२राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३संयोग(कथा संग्रह) २४नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२१५७.डॉ किशन कारीगर- मैथिली उपन्यासक शून्य बढ़ार स्थिति? विवशता कारण आ समाधान



डॉ. किशन कारीगर

मैथिली लेखनक शून्य बजार स्थिति? वेवसता कारण आ समाधान

मैथिली लेखन मे छैहे की? प्रश्न लेखांकति कनू यथार्थ देखू तकू आरीयाएल बजार अपनो मोट जाएत। ई कटु सत्य जे मैथिली लेखन गोलिहवादी कब्जा अकादमी पुरस्कारी यमयै, पेटपोसुआ आयोजनी, देखावटी कवि सम्मेलन, पुस्तक लोकार्पण, आरी कतिब बांट तक समिति आ ओहिनाएल रहै जेकर बजार मूल्य जीरो रहैत आ मैथिली लेखक के शून्य बजार स्थिति कि वेवसता जकड़ने रहैत लेखक सब अर विकट स्थिति सँ उबरै लै सामूहिक प्रयास तक नै केलक? तेकर आलाआल मैथिली लेखन अपनायो मोगा रहल जे दसो पयास टा कतिबक बिक्री नै होइ छै दर्शक पाठक मैथिली लेखन के देखै पढ़ै मे कोने रूचि नै रखै छै?

शून्य बजारक वेवसता के कारण:-

१ मैथिली लेखक सब कोनो बुक सेलर प्रकाशक आ मार्केटिंग वेवस्था लै सामूहिक प्रयास यति कहियो नै केलकै? सब अपना गोलिह मे मगन आरी कतिब बंटलकै पुरस्कारक जोगार मे रहैत आ हे लेखक हेवाक आंसयिाहिक आआकार मे बमआलट मोल रहैत

२ मैथिली लेखक सर्टिफिकेट लेखकयि तगमा आ बुतहू लै दस पयास टा कतिब छपा मोहाल जा गेल पबलिक देखै आ पढ़ै की ने? हे थैन सति छि? जोगारी पुरस्कार आगू बजार स्थिति पर कोनो यति नै?

३ मैथिली लेखक एकटा सामूहिक सन्वजन मंच नै तैयार केलक जे प्रकाशक लेखक बिक्रेता दर्शक पाठक के सामूहिक प्लेटफार्म के माध्यम स एकत्रित केने नीक बजारू वेवस्था बनैतै? लेखक संघ बना दोसरा लै सदस्यता फॉर्म तक नै देलकै सब लेखक गोलिह अप्पन ठेकेदारी मे अपसयिांत रहैत

४ मैथिली लेखक एक दोसराक लेखन मे की छै तेकर चर्चा कहियो ने केलकै आ

नै दर्शक तक बात पहुँचलैक? आयोजन सभ मे होहकारी जे गोल बस वरिष्ठ लेखक हेबाक दाबिए चूर अहाँ सबहक लिखल किताब कए प्रति बिकाइए से देखू ताकू ने

५ कोनो एहेन मैथिली पत्र पत्रिका अखबार नै जे मैथिली रचना पर पारितोषिक मूल्य दैत होउ कोनो तरहे घीच तीरके पत्रिका सभ नाम लै छपै छै आ ओर बन्द सर्कुलेशन बजार व्यवस्था लै लेखक के कोनो चिता नै जेकर रचना छपलै ल सूरल के तुम्मा?

६ वर्चस्ववादी गिरोहवादी मैथिली लेखन मे दस टा लेखक के अपना मे मिलानी नै जे सामूहिक हेबाक उम्मीद करत सभ अपना गिरोह बला लेखक हेबाक भ्रम नशा मे मातल रहैए कोइ केकरो मोजर प्रोत्साहित नै करत? दर्शक पाठक लुड़ल कोन तेकर एक्को पाइ चिता नै?

७ मैथिली लेखक सपनो मे रा◌ॅयल्टी दिया ने सोचि सकत? रचना छपलै तबे पत्रिका कीनब देखब सेहो बड्ड बाधक बनल छै मैथिली बजार व्यवस्था के विकसित होइ मे

८ मैथिली लेखक बजार व्यवस्था के महत्वहीन बुझैत गमैत अपना पैर पर अपने कुड़हैर मारैत रहल खाली पुरस्कार आयोजन होहकारी तक सिमटल रहल? तेकरे दुष्परिणाम आइ मैथिली साहित्यकार भोगि रहल

९ अप्पन लेखनी के अप्पने मार्केटिंग बला दुष्चक्र के तोड़बाक प्रयासक संग एक दोसर लेखक लै सामूहिक मार्केटिंग के सुजोग अवसर ग्राउंड लेवल पर करै पड़त

१० मैथिली लेखन मे ग्राउंड रिपोर्टिंग व्यवस्था के एकदम अभाव? अइ शून्य

के पाटै ले बजार व्यवस्थाक यत्न एकदम नहि?

११ मैथिली लिपि बजै छपै काल सोनपुरियामे मानक के अंत्यानुक्रम एक ज बारहो वर्णम के बोली के संपादित क ओकरा मानके रूप मे छापब आर स मैथिली लेखन असंख्य बहुजन रूप होएबा गेलै लेख के पढ़ै मे बड्ड कठिनाइ बुझैत तरओ मैथिली लेखक बुद्धिजीवी क्षेत्र मे लागल रहल

१२ मैथिली लेखन मे पाठकीय पठनीयता दर्शक प्रतिक्रिया के एकदम अभाव रहल मैथिली आयोजन मे दर्शक स बेसी मंच पर उपस्थिति करबा आर बात के प्रमाण हर क दर्शक बढ़ियार जानै के होत तखे मैथिली लेखन मजगूत हेतै आ बजार मे रंगत पकड़तै

समाधान:-
१ पुरस्कारी दावा छोड़ि दर्शक स सोझे संवाद क मैथिली लेखन के बजार बनबए तकरा आ सामूहिक भागीदारी मे जुटै पड़त एहि स मैथिली लेखक ले सामूहिक मंच निर्माण ले डेग आगू बढ़त

२ मैथिली पत्र पत्रिका सबहक बतियि स्थिति मजगूत करै ले बजार व्यवस्था स्थापित करै पड़त सोझे रचना छैप टा गेल आ निश्चिन्त भै स काज नै चलत

३ कोनो तरहक मैथिली आयोजन मे विविधता मानै ई ज एकटा एहेन मंच वा सत्र जतए साहित्यकार, लेखक, प्रकाशक, विक्रेता, शिल्पकार, कलाकार, मार्केटिंग स्टाफ सब एक दोसर के पूरक संगी बनि मैथिली बजार स्थापित क सकैए

४ गिरोहवादी व्यवस्था के ध्वस्त क सामूहिक भागीदारी बला मंच बनबै पड़त दर्शक पाठक के सोझे जोड़ै पड़त मैथिली लेखन के बजार व्यवस्था विस्तार

𑒄 𑒨𑒞𑒱 𑒏 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒞

𑓕 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒻 𑒕𑒻? 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒻? 𑒮𑒰𑒧𑒴𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒠𑒱𑒮 𑒢𑒱𑓁𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒛𑒹𑒑 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒏𑒹𑒙𑒱𑒑 𑒫𑒹𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒹 𑒕𑒼𑒙 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒻 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒴𑒩𑒑𑒰𑒧𑒲 𑒮𑒼𑒔 𑒂 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒮 𑒮𑒼𑒗𑒹 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒩𑒞𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒴

𑓖 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒧𑒹 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒅𑓀𑒛 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒱𑒑 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒹 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒁𑒃 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒙𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒮𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒣𑒩 𑒖𑒼𑒩 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒥 𑒁𑒫𑒱𑒬𑒱𑒫 𑒥𑓀𑒠 𑒏𑒩𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒞

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒩𑒱𑒨𑒪𑒮𑓂𑒙𑒰𑒤𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑒑𑒧𑒰𑒃𑒪𑒏𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓓.𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓓.𑓑.𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰- 𑒮𑒰𑒍𑒢 𑒧𑒰𑒮

𑓓.𑓒.𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'- 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒙

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒣𑒩𑒰𑒑

𑓓.𑓔.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒔𑒲𑒩𑒯𑒩𑒝 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲

𑓓.𑓑𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰- 𑒮𑒰𑒅𑒢 𑒧𑒰𑒮



𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰
𑒮𑒰𑒅𑒢 𑒧𑒰𑒮

𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒨𑓀𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒕𑒃,
𑒮𑒹𑒯𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒨𑓃,
𑒢𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒥𑒰𑓂 𑒢𑒹 𑒣𑒕𑒥𑒰
𑒞𑒨𑓃𑒾 𑒧𑒼𑒢 𑒅𑒛𑓃𑒱𑒨𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒮𑒰𑒞 𑒮𑒢 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒃,
 𑒮𑒰𑒅𑒢 𑒏 𑒧𑒰𑒮 𑒥𑒛𑓃 𑒠𑒣𑓂𑒞𑒱𑒧𑒰𑒮,
𑒢𑒥𑓃𑒥𑓃𑒱𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒥 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒑𑒢𑒏𑒱,
𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮,
𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒪𑒰𑒨𑓃𑒪 𑒤𑒴𑒪 𑒂 𑒯𑒩𑒱𑒨𑓃𑒩 𑒨𑒑𑒻𑒞 𑒣𑒰𑒞,
𑒐𑒹𑒞 𑒐𑒩𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒧𑒹 𑒩𑒨𑒻𑒞 𑒥𑒮𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝,
𑒧𑒹𑒒 𑒮𑓀 𑒗𑒯𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲,
𑒥𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒮𑓀 𑒢𑒯𑒰𑒨𑓃𑒪 𑒧𑒰𑒙𑒲,
 𑒩𑒯 𑒨𑓃𑒾𑒥𑓃𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒧 𑒮𑒑𑒧𑒑𑒧𑒰𑒨𑓃𑒪 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒏 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯,
𑒥𑓃𑒩𑒠𑒏 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒛𑒹𑒑
𑒖𑒼𑒢 𑒥𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒏𑒧𑒰𑒃,
 𑒏𑒼𑒠𑒰𑒩𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒩𑒱,𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒑𑒼𑒯𑒰𑒩𑒲,

𑒖𑒼𑒪 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒩
𑒨𑒪𑒳 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒥𑒜𑒰𑒥𑒳 𑒋𑒏 𑒛𑒹𑒑।

-𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰, 𑒥𑒼𑒏𑒰𑒩𑒼

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑒹 𑒠𑒱𑒞𑒲𑒢𑒰𑒱𑓃𑒮𑒞𑒰𑒛𑒛𑓃𑒫𑓃𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑓦𑒑𑒰𑒧𑒰𑒱𑓃𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑒛𑓃𑒩𑓃𑒣𑓂𑒢𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'- 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞



𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'
𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞

𑒒𑒩 𑒂𑒓𑒢 𑒠𑒹𑒯𑒩𑒱 𑒠𑒪𑒰𑒢
𑒑𑒰𑒕𑒲 𑒥𑒱𑒩𑒕𑒲 𑒐𑒹𑒞 𑒐𑒩𑒱𑒯𑒰𑒢
𑒣𑒼𑒐𑒻𑒩 𑒛𑒥𑒛𑓃𑒰 𑒌 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒞𑒰𑒢
𑒁𑒩𑓂𑒩𑒫𑒰𑒿 𑒑𑒰𑒨 𑒧𑒯𑒱𑒮𑒲𑒏 𑒥𑒟𑒰𑒢।
𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒠𑒳𑒩𑒪𑒦 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑒦𑒏 𑒑𑒳𑒧𑒰𑒢
𑒂𑒢 𑒧𑓂𑒪𑒰𑒢 𑒧𑒹𑒙𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒔𑒰𑒢
𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒪𑒰𑒣𑒨 𑒮𑒯𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒑𑒰𑒢
𑒠𑒩𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒥 𑒂𑒢 𑒧𑒰𑒢।
𑒏𑒞𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒌 𑒧𑒹𑒪 𑒖𑒼𑒪?
𑒐𑒼𑒖 𑒣𑒳𑒕𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒼𑒪 𑒙𑒼𑒪
𑒇𑒔𑒱𑒞 𑒇𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒥𑒼𑒪
𑒛𑒰𑒿𑒙𑒼 𑒛𑒣𑒙𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒮𑒱𑒩𑒲𑒏 𑒒𑒼𑒪।
𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒏𑒳𑒥𑒹𑒩
𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒱𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒟𑒴 𑒏𑒹𑒩
𑒮𑓀𑒣𑒞𑒱 𑒯𑒼 𑒏𑒱 𑒥𑒱𑒣𑒞𑒲𑒏 𑒜𑒹𑒩
𑒡𑒻𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒢𑒱𑒯𑒏 𑒥𑒙𑒨 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒹𑒩।
𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒏 𑒯𑒱𑒞𑒧𑒹 𑒮𑒥 𑒋𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝

𑒫𑒻𑒧𑒢𑒮𑓂𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒞𑒾 𑒢𑒰𑒧𑒼 𑒢𑒱𑒮𑒰𑒢
𑒡𑒢 𑒏𑒳𑒥𑒹𑒩 𑒯𑒼𑒟𑒳 𑒏𑒱 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢
𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒠𑒐𑒱𑒢 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒢।
𑒣𑓀𑒔 𑒂𑒃 𑒥𑒯𑒨 𑒯𑒰 𑒅𑒢𑒙𑒰 𑒥𑒨𑒰𑒩
𑒬𑒰𑒪𑒲𑒢𑒞𑒰 𑒦𑒻 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒩 𑒞𑒰𑒩
𑒅𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒔𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒡𑒢𑒑𑒰𑒩 𑒣𑒟𑒰𑒩
𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒹 𑒮𑒥 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒂 𑒮𑒩𑒼𑒏𑒰𑒩।
𑒅𑒖𑒩𑒪 𑒮𑒴𑒮 𑒅𑒣𑒙𑒪 𑒏𑒴𑒮
𑒧𑒯𑒪 𑒧𑒛𑓃𑒻𑒨𑒰𑒏𑒹 𑒧𑒳𑒯𑒿 𑒠𑒴𑒮
𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑒿 𑒏𑒹𑒍 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒩𑒴𑒮
𑒪𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒔𑒴𑒮𑒨 𑒪𑒫𑒢𑒔𑒴𑒮।
𑒣𑒩𑒞𑒲 𑒣𑒰𑒿𑒛 𑒖𑒹𑒪 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒞
𑒩𑒮𑓂𑒞𑒼 𑒣𑒹𑒛𑓃𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒥𑒩𑓂𑒠𑒮𑓂𑒞 𑒒𑒰𑒞
𑒮𑒳𑒢𑒨 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒍 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒥𑒰𑒞
𑒏𑒯𑒴 𑒏𑒞𑒹 𑒂𑒩 𑒯𑒧 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞।

-𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪', 𑒠𑒲𑒣,𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲, (𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.co.in **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒣𑒩𑒰𑒑



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी(मुख्यालय)एलएनएस, दिल्ली,गामआरेर डीह -, पो आरेर हाट, मधुबनी

पराग

कौंढ़ि आएल कुसुमक, मुह खिलल,
जऽ गेल देखा न, आब मूनल किजल।

हाँ पल सौ दर्य, जेल प्रगट,
सुगंधि लेल , करैछ छटपटा-

परा गा अछि केसर पर लटकल,
मकरंद, पुष्पराज पर अछि ,अँटकल।

उपवन, सुगंधि सँ ,करैछ महमह,
चा रू दिस, पुष्पक' ,जऽ रहल नमः।

हिमाद्रि शृङ्ग सँ चलल पवन,
नीलगिरि सँ ,आओत समीर,
आओत पुरवा पछवा-,थमि थमि-,
परा ग रज लेल अनिलक क्रीड़ा-

वायु स्स्तुराम मोटा बन्हने-,
लऽ जा रहल अछि परागक सनेस,
उपवन स्वयं करैत अछि, मह मह-,
बनल अछि एप्पन, सुगंधक धनेश।

घूमि रहल मधुमक्षिका ,

સૂઁઘા પિવ઼ન, પ્નસૂન પન ઉયકઠ,
ગાઙહે ગાઙહે-,સમેટા નહઠ શ્રછા,
પુષ્પનાળ ઊઠ શ્રછા, વડ઼ વેકઠા

પ્પો ઠત સુગંધા ત મુપ્પ ,પ્નસૂન,
વા ટ તકૈત નહૈત શ્રછા મેયુકન,
જાનિજાના રત યકજા ઉન દૈત,
શ્રોગપૈત નહૈત શ્રછા,વ઼ૃણ્ત શ્રોકના

તા કા નહઠ શ્રછા પૂન્વ઼ ક્ષાતાળ પન,
શ્રહુના શ્રા કા ટા નહઠ શતદઠ,
શ્નુપ્પો દય઼ હો એત, તકન વા દે,
દેપ્પા શ્રોત શ્રપન ઠઠા ત કાળઠા

મયુમા છો કે છત્તા મે,
મયુનમયુ વણા ળા એત, પના ગ
કે સા પ્પિશ્રશ્રોઠકૈ ૬ હુણન?
જોટઠ કેહ્ન વાઢ઼ણી કે જા ગ?

પુષ્પનસ કૈઁ પા વિય઼ ઊઠ,
ઉઙ઼ઠ શ્રવૈત શ્રછા યિત્ન પતંગ-,
ળહિ ણા મયુકન, તહિ ણા ૬હો ,
પા વા કુસુમ નળ ,શ્રછા મિતઙા

દેપ્પા મૌ ઠા એઠ પ્નસૂન ,મયુકન
વૌ શ્રાએ નહઠ શ્રછા, જોઠ ણા ના સ,
ણી ક ઠગૌત ણહિ છૈક જામના કે,

શ્રૂ૭ સુપ્પા ,ળા ૨છ ળા ૬િમા સા

પિશ્રન, પનિટુટ્ટૂ પુષ્પક' પા દપ,
તિતિ૭િ ,શ્ર૭િમે, એકને ગપસપા-

પના ગ મે શ્રછિકિતેક શ્રનુના ગ?
વસૈત શ્રછિશ્રોહિમે કુસુમ સો હા ગા-

કપ્પનો સુષ્મ િત કો શસ્થ કી ટ,
વસા ત કપ્પનો ૭ऽ દૈછ છી ટા
કપ્પનો નસ પિવયઃ શ્રવૈછ મધુપ,
મધુસંચયક કા ૭ મધુમા છી ધુપા

મધુનસ, મુસકા ૨ત ,વટૈછ સુમન,
પુષ્પહિસઁ ,૩પવ઼ન શ્રછિમધુવ઼ના

શ્રૂ૭ નચૈછ, ૭ો ૯ૈત શ્રછિપા ત,
પવ઼ન કેઁ, સંગ દેવક, છૈ વા તા

તિતિ૭િ , ગમના , વઢ઼િની વૂ૭ય઼,
શ્રૂ૭ક ગા છ પન, દૂ૭ા દૂ૭ય઼ા
પુષ્પક' ૭ગ ,નસક' સદા વ઼ન્ત ,
ને મધુ, ને નસ ૯૭, કો નો શન્તા

શ્રપન મંતવ્ય઼ દિતોનાિ઼સતા૭ઙ઼વ઼દિહા૦ગામાિ઼યોમ **પન પ઼ઠાઉ**ા

𑓓𑓔.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒨𑒲𑒩𑒯𑒢𑒰𑒧𑓂 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪

𑒨𑒲𑒩𑒯𑒢𑒰𑒧𑓂 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲

૧

યીનહ્નામ

શ્રારયો માછ ઓપ્પિવા

પાન શ્રા મપ્પાન ઓપ્પિવા

નાળા નાની કે ગુનગાન ઓપ્પિવા

શ્રારયો ગાંળા ઓપ્પિવા

જાંગ શ્રા મદિના ઓપ્પિવા

વાજન શ્રા સોઓકન્હ કે પનયિય ઓપ્પિવા

શ્રારયો યનમ ઓપ્પિવા

છઓ કપટ કે માન ઓપ્પિવા

યૂન્ન શ્રા વઓનકાની કે શાન ઓપ્પિવા

શ્રારયો યૃનાષ્ટ્ન વનવા

જીષ્મ શ્રા દ્નોામ કે માન ઓપ્પિવા

𑒠𑒳𑒩𑓂𑒨𑒼𑒡𑒢 𑒂 𑒠𑒳𑓁𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒏𑒹 𑒑𑒰𑒢 𑒪𑒱𑒐𑒥।

𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒧𑒝𑒱𑒣𑒳𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒥।

𑒂𑒠𑒱𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒂 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒹 𑒢𑒑𑓂𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒥।

𑒩𑒰𑒧𑒰 𑒠𑓂𑒩𑒾𑒣𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒔𑒲𑒩𑒯𑒩𑒝 𑒂 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒥।

२

𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲

𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱

𑒩𑒴𑒣 𑒔𑒻𑒪𑒏 𑒢𑒰𑒩𑒲।

𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲।

𑒣𑒹𑒢𑓂𑒯𑒋 𑒯𑒩𑒱𑒨𑒩𑒏𑒰 𑒮𑒰𑒩𑒲।

𑒪𑒪𑒰𑒙 𑒧𑒹 𑒔𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒙𑒱𑒏𑒳𑒪𑒲

𑒯𑒰𑒟 𑒧𑒹𑓀 𑒯𑒩𑒱𑒨𑒩𑒏𑒰 𑒔𑒳𑒩𑒲।

ગોન મે પાય઼ઠ ઠુમકી।

ખોઠઠે કેશ વદનકી।

યઊેન મસ્ન હથિની।

મોયપૈન શ્રૂઠ ય઼ામિની।

વનખ્યા મેં નાની।

યુણન શ્રંગ-શ્રંગ પાની।

નખ્યિપૈન સૌદન્ય઼ નાની।

ળીવ઼ન એઠ નાની।

વનૈન કામિની નાની।

નામા સાવ઼ન ન્ય઼ાની।

-શ્રાયાન્ય઼ નામાનંદ મંડઠ સામાળિક યનિક સહ સાહિત્ય઼કાન સીનામઢ઼ી।

-શ્રાચાર્ય નામાનંદ મંડલ સામાજિક ચતિક સીતામઢ઼ી,સેવાનિવૃત્ત પ્રાચાનાધ્યાપક, માતા-ચન્દ્ર દેવી, પતિ-સ્વ૦નાળેશ્વર મંડલ, પત્ની-પ્રામણિ દેવી, ળન્મ તથિ-૦૧ ળનવરી ૧૯૬૦ ચોગ્યતા- એમ-એસસી (નસાયન શાસ્ત્ર), એમ એ (હન્દિી)। ન્ચિ- સાહત્યિક, મૈથિલી-હન્દિી કવતિા -કહાની લેખન શ્રા શ્રાલેખ્ પ્રકાશતિ પોથી - મૈથિલી કવતિા સંગ્રહ મારા કે ન વાંટચિ। ૨૦૨૨ પ્રકાશતિ નચના - સહચિા કવતિા સંગ્રહ પોથી - ળનક નંદની ળાનકી શ્રા શૌર્ય ગાના ૨૦૨૨ પત્રકિા -મથિલિા સમાળ, ઘર -વાહર શ્રા શૂપ્રવા (મૈસામ)। શ્રભ્યવાર -દૈનકિ મૈથલિ પુનર્ળાગનામ પ્રકાશ સામાળકિ-સામાળકિ ચતિન, દાચત્વિ- પૂર્વ ળલિા પ્રતનિધિ, પ્રાથમકિ શક્ષિક સંઘ, ડુમના, સીતામઢ઼ી સ્થાચી પતા- ગ્રામ-પપિરા વશિનુપર થાના-પરહિર ળલિા-સીતામઢ઼ી વર્તમાન પતા-પપિરા સદન,મુરલચિાચક વાર્ડ-૦૪ સીતામઢ઼ી પોસ્ટ-ચકમહલિા ળલિા-સીતામઢી નાળ્ય-વહિર પનિ-૮૪૩૩૦૨ મો નં-૯૯૭૩૬૪૧૦૭૫ ઈમેલ-નામાનાનદમાનદાલ૦૦૧૦ગ્માલ્યિોમ

ऐ नचनापन श्रपन મંતવ્ય દતિોનાલ્સિનાડવ઼ર્દિહ઼ાગ્માલ્યિોમ **પર પઠાઉ।**

